वर्ष 07 अंक 11 माह मार्च, 2023 ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

बचपन में ही डा. हेडगेवार ने देखा था
भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना

ऑस्कर जीत

भारतीय सिनेमा ने

सार्थक किया

आजादी का

अमृत महोत्सव

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या – 2166/57 | डाक पंजीयन संख्या आगरा–139/2022–24

BEBER

BATH FITTINGS

Make way for iconic luxury....

Mathura
Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष - 07 , अंक - 11, मार्च 2023

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेन्द्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट (सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क
340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये 400**
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)
बंगला नं. 4, जीवनी मंडी,
आगरा-282004, उत्तर प्रदेश
पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**
लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com

जरूर पढ़ें
व्यक्तित्व

10 | बचपन में ही डा. हेडगेवार ने...

डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार अक्सर यह सोचा करते थे कि प्राचीन भारत में सैन्य पौरुष, ज्ञान विज्ञान, अतुलनीय समृद्धि, गौरवशाली संस्कृति इत्यादि सब कुछ होते हुए भी भारत कालांतर में परतंत्र क्यों हुआ। इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने तत्कालीन विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक संस्थाओं एवं स्वतंत्रता आंदोलनों में अपनी भागीदारी के दौरान खोजने का प्रयास किया।

विशेष
अमर शहीद

08 | देश के इस सपूत ने नहीं स्वीकारी गुलामी

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शहीद भगत सिंह ने महज 23 साल की उम्र में देश के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी थी। वह आजादी की लड़ाई के दौरान सभी युवाओं के यूथ आइकॉन थे। वह देश की आजादी में आगे आने...

विशेष
अर्थव्यवस्था

30 | भारतीय बैंक मजबूत हैं अमेरिकी अर्थव्यवस्था...

स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भारत में चूंकि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने पूर्व में ही कई निर्णय लिए हैं जिसके चलते भारतीय बैंकों की वित्तीय स्थिति इस संदर्भ में बहुत सुदृढ़ हो गई है। अमेरिकी वित्तीय क्षेत्र में बैंकों पर भारी संकट आ गया है। अभी तक दो बैंक (सिलिकॉन वैली बैंक एवं...

जरूर पढ़ें
अंतराष्ट्रीय

16 | रूस और अमेरिकी संबंध और बिगड़े तो विश्व...

एक साल से ज्यादा से चल रहे रूस यूक्रेन युद्ध में अमेरिका और नाटों के दखल को देख शायद रूस ने अब इनसे ही सीधे सुलटने का निर्णय ले लिया है। वह इस तरह की पहले से इसकी चेतावनी देता भी रहा है। लगता है कि इसकी शुरूआत उसने कालासागर में अमेरिकी ड्रोन को मारकर कर दी है। उसने अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिका को एक तरह से चेतावनी भी दे दी है। अपने इरादे भी बता दिए हैं। घटना को लेकर रूसी रक्षा...

जरूर पढ़ें
सियासत

20 | भारत जोड़ो यात्रा से राहुल गांधी ने जो कुछ कमाया...

कांग्रेस की कमान एक गैर गांधी नेता के हाथों में जाने के बाद भी ऐसा लगता नहीं है कि कांग्रेस के भीतर कुछ बदला है। आज भी कांग्रेस की सियासत गांधी परिवार के ही इर्दगिर्द घूम रही है। राहुल गांधी ही कांग्रेस का फेस बने हुए हैं। वहीं कांग्रेस के नये अध्यक्ष मल्लिकार्जुन...

42 | कहानी

50 | कविता

भारतीय सिनेमा और ऑस्कर सम्मान

गीत और संगीत मनुष्य मन को रसपूर्ण बनाते हैं। लेकिन दोनों में एक आधारभूत अंतर भी है। गीत अर्थ बुद्धि के माध्यम से मूल शब्दों के भाव को प्रकट करता है। गीत भी ध्वनि है लेकिन उसका अर्थ बौद्धिक कार्यवाही से निकलता है। संगीत में ध्वनियों का प्रयोग होता है। प्राचीन भारतीय संगीत परंपरा में ध्वनि के अल्पतम अंश को भी सरस ढंग से प्रस्तुत किया जाता रहा है। षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद शास्त्रीय संगीत के आधारभूत सुर हैं। संक्षेप में इन्हें सा, रे ग, म, प, ध और नि कहते हैं। शास्त्रीय संगीत परंपरा में राग हैं। प्रत्येक राग को सम्बंधित रागिनियाँ हैं। प्रत्येक राग में गाने का सुनिश्चित समय भी है। हिन्दू पूर्वजों ने नृत्य को भी शास्त्रीयता के अनुशासन में बाँधा है। नृत्य में गीत संगीत के साथ शरीर के भिन्न- भिन्न अंगों का भी प्रयोग होता है। जान पड़ता है कि नृत्य का विकास नाट्य कला के विकास के बाद का है। भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में बताया है कि प्राचीन काल में नाटकों के मंचन के बाद नाट्य शिल्पी शिव के पास गए। उन्होंने नाटकों का विवरण सुनाया। शिव ने कहा कि, आप का काम अच्छा है लेकिन इसमें नृत्य नहीं है। शिव ने सुझाव दिया कि वे उनके नृत्य का सदुपयोग कर सकते हैं। भारतीय नृत्य परंपरा प्राचीन है। नृत्य कला में नर्तक अपने अंतर्जगत के भावों को देह पर प्रकट करता है। नृत्य के चरम पर नर्तक स्वयं नहीं बचता। वह नृत्य में खो जाता है। नर्तक नृत्य बन जाता है। भारतीय सिनेमा में नृत्य कला के उत्कृष्ट प्रयोग हुए हैं। आजा नच ले नाम से बनी फिल्म में माधुरी दीक्षित का नृत्य मोहक के साथ मादक भी है। ऐसे ही हाल ही में एसएस राजामौली की बहुभाषीय फिल्म आरआरआर के लोकप्रिय गाने नाटू नाटू की अंतरराष्ट्रीय चर्चा है। मूल तेलुगू में नाटू नाटू का वास्तविक अर्थ हिन्दी में नाचो-नाचो है। ऑस्कर फिल्मों के लिए दिया जाने वाला महत्वपूर्ण पुरस्कार है। यह 1929 में पहली बार दिया गया था। ऑस्कर में नामांकित होना और अवार्ड पाना आसान नहीं है। हमारे देश के प्रतिष्ठित फिल्मकार अपनी फिल्में ऑस्कर के लिए ले जाते रहे हैं। मदर इंडिया, लगान और सलाम बॉम्बे जैसी फिल्में ऑस्कर में नामांकित हुईं थीं। ऑस्कर के लिए पहले फिल्में नामांकित होती हैं फिर फिल्म निर्माता और टीम मिलकर चयन समिति के सदस्यों को अपनी फिल्में दिखाते हैं। राजामौली और उनके सहयोगियों ने इस काम को सफलतापूर्वक किया है। नाटू नाटू गीत संगीतकार एमएम किरवानी की आकर्षक धुन है। इसे ऑस्कर पुरस्कार मिलने से भारतवासी बहुत प्रसन्न हैं। जीवन में नाचने जैसे अवसर सबके सामने आते हैं। विवाह, बारात में लोग बुजुर्गों को धक्का देकर नाचने के लिए प्रेरित करते हैं। बुजुर्ग संकोच करते हुए कभी-कभी प्रशिक्षित नर्तक की तरह भी नाचते हैं और कभी कभी सहज भाव से। इस फिल्म में आजादी की लड़ाई में संघर्षरत नायकों को जब नाचने की चुनौती मिलती है तो वे अपने नृत्य से सबको आनंदित करते हैं। इसी तरह भारतीय डॉक्युमेंट्री लघु फिल्म दि एलिफैंट व्हिस्पर्स को भी ऑस्कर मिला है। यह दक्षिण भारत के एक गाँव के दंपति और उनके गोद लिए हाथी के बच्चे पर बनी सुंदर और हृदयस्पर्शी लघु फिल्म है। दोनों को मिले पुरस्कार से समूचा भारत प्रसन्न है। 2 ऑस्कर भारतीय सिने जगत के लिए उल्लेखनीय सफलता है। भारतीय सिनेमा ने अभिनय, संवाद, कथानक, गीत और संगीत के साथ गुणवत्ता के सभी मानकों पर स्वयं को सही सिद्ध किया है। भारतीय सिनेमा कथानक, संवाद और सोद्देश्य होने के मामले में पहले से ही प्रतिष्ठित रहा है। अब उसमें आधुनिक तकनीकी और सिनेमा के सभी घटकों का सफलतापूर्वक प्रयोग हो रहा है। यह भारत के लिए गौरव की बात है। दुनिया में अनेक प्रतिष्ठित ऐतिहासिक नायक हैं। कुछ नायक इतिहास के साथ साथ पौराणिक चरित्र वाले भी हैं। लेकिन श्रीकृष्ण विष्णु अवतार होकर भी भारतीय पुराण परम्परा में अनूठे नर्तक हैं। विश्व देवतंत्र में श्रीकृष्ण जैसा दूसरा प्रेमपूर्ण नर्तक नहीं हुआ। वे नर्तक के साथ उत्कृष्ट बांसुरी वादक भी हैं। दुनिया की कोई भी सभ्यता श्रीकृष्ण जैसे नर्तक और बांसुरी वादक देवता कल्पना में भी नहीं गढ़ पाई। शिव भी नर्तक हैं। नटराज हैं। वे अपने गणों को भी नृत्य में शामिल करते हैं, गाते हैं, नाचते हैं, नचाते भी हैं। गीत-संगीत और नृत्य से भारतीय सांस्कृतिक साहित्य का अंग-अंग भरा-पूरा है। नारद निराले पात्र हैं। वे बिना किसी वाहन के सभी लोकों की यात्रा करते हैं और वीणा लेकर विश्व भ्रमण करते हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार प्रकृति की शक्तियां भी नाचती हैं। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर नाचते हुए परिक्रमा करती है। ऋग्वेद में सोम देवता के लिए कहा गया है कि सोमरस नाचते हुए कलश में गिरता है। ऋग्वेद के अनुसार सृष्टि सृजन के समय देवता भी नाच रहे थे। उनके नृत्य से उड़ी धूल से आकाश भी आच्छादित हो गया था। नृत्य सबको पुलकित करता है। हॉलीवुड की फिल्में नृत्य प्रधान नहीं होतीं। लेकिन भारतीय सिनेमा अपने जन्मकाल से ही नृत्य प्रधान रहा है। इस नृत्य में लोक के साथ शास्त्रीयता भी संगति में रही है। अमिताभ बच्चन पर फिल्माया गया गीत हम नाचे बिन घुंघरू के गांव-गांव लोकप्रिय था और है। तीसरी कसम शैलेन्द्र निर्मित फिल्म थी। यह मारे गए गुलफाम नाम की कथा पर आधारित थी। ■

इसके गीत भी गांव-गांव में लोकप्रिय हैं। दक्षिण भारत की लोकप्रिय अभिनेत्री थी सिल्क स्मिता। उनकी जीवनी को केन्द्र में रखकर श्याम बेनेगल ने भूमिका नाम की फिल्म बनाई थी। इसका गीत संगीत बहुत लोकप्रिय हुआ। बाद में इसी फिल्म के कथानक को लेकर डर्टी पिक्चर बनी थी। भारतीय फिल्में आत्मीयता प्रेम और सामाजिक आदर्शों का संदेश देती रही हैं। वे केवल मनोरंजन का मसाला ही नहीं रहीं। उनमें कला थी। संदेश था और भारतीयता भी थी। दो ऑस्कर का मिलना संस्कृति प्रेमियों के लिए भी उत्साहवर्धक है। मुंबई फिल्म निर्माण का केन्द्र रहा है। दक्षिण भारत में भी तमिल, तेलुगु, कन्नड़ व मलयालम भाषी भी सुरुचिपूर्ण फिल्में बनाते रहे हैं। पश्चिम बंगाल के क्षेत्र में सत्यजित रे, ऋत्विक घटक, मृणाल सेन, ऋषिकेश मुखर्जी आदि प्रतिष्ठित रहे हैं। मुंबई में राज कपूर, महबूब खान, वी. शांताराम, गुरुदत्त, यश चोपड़ा, गोविन्द निहलानी आदि निर्माता निर्देशकों ने भारतीय सिनेमा को समृद्ध किया है।

डॉ. वंदना पालीवाल

यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2023

₹34 लाख करोड़+ के एमओयू

93 लाख+ रोज़गार के अवसर

रिकॉर्ड निवेश, रिकॉर्ड रोज़गार

डबल इंजन की सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

पूर्णतः वैज्ञानिक व प्राकृतिक नव वर्ष है नव संवत्सर

वर्तमान में हम भले ही स्वतंत्र हो गए हों, लेकिन पराधीनता का काला साया एक आवरण की तरह हमारे सिर पर विद्यमान है। जिसमें चलते हम उस राह का अनुसरण करने की ओर प्रवृत्त हुए हैं, जो हमारे संस्कारों के साथ समरस नहीं है। वर्तमान भारत में जिस प्रकार से सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण हुआ है, उसके चलते हमारी परंपराओं पर भी गहरा आघात हुआ है। यह सब भारतीय संस्कृति के प्रति कुटिल मानसिकता के चलते ही किया गया। आज भारत के कई लोग इस तथ्य से अवगत नहीं हैं कि भारतीय संस्कृति क्या है, हमारे संस्कार क्या है? लेकिन अच्छी बात यह है कि कोई भी शुभ कार्य करने के लिए आज भी समाज का हर वर्ग भारतीय कालगणना का ही सहारा लेता है। चाहे वह गृह प्रवेश का कार्यक्रम हो या फिर वैवाहिक कार्यक्रम, हम भारतीय पंचांग का सहयोग ही लेते हैं। इसी प्रकार हमारे त्यौहार भी प्राकृतिक और गृह नक्षत्रों पर ही आधारित होते हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वर्ष प्रतिपदा पूर्णतः वैज्ञानिक और प्राकृतिक नव वर्ष है।

सुरेश हिंदुस्तानी

कहा जाता है कि जो देश प्रकृति के अनुसार चलता है, प्रकृति उसकी रक्षा करती है। वर्तमान में जिस प्रकार से विश्व के अनेक हिस्सों प्रकृति का कुपित रूप दिखाई देता है, उससे मानव जीवन के समक्ष अनेक प्रकार की विसंगतियां प्रादुर्भूत हुई हैं। यह सब पश्चिम विचार की अवधारणा के चलते ही हो रहा है। भारत की संस्कृति मानव जीवन को सुंदर और सुखमय बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। विश्व की महान और शाश्वत परंपराओं का धनी भारत देश भले ही अपने अपनी पहचान बताने वाली कई बातों का भूल गया हो, लेकिन कुछ बातें ऐसी भी हैं, जिनका स्वरूप आज भी वैसा ही दिखाई देता है, जैसा दिग्विजयी भारत का था। हम भले ही अपने शुभ कार्यों में अंग्रेजी तिथियों का उल्लेख करते हों, लेकिन उन तिथियों का उन शुभ कार्यों से कोई संबंध नहीं रहता। हम जानते हैं कि भारत में जितने भी त्योहार एवं मांगलिक कार्य किए जाते हैं, उन सभी में केवल भारतीय काल गणना को ही प्रधानता दी जाती है। इसका आशय स्पष्ट है कि भारतीय ज्योतिष उस कार्य के गुण और दोष को भली भांति प्रकट करने की क्षमता रखता है। किसी अन्य कालगणना में यह संभव ही नहीं है।

वर्तमान में हम भले ही स्वतंत्र हो गए हों, लेकिन पराधीनता की काला साया एक आवरण की तरह हमारे सिर पर विद्यमान है। जिसमें चलते हम उस राह का अनुसरण करने की ओर प्रवृत्त हुए हैं, जो हमारे संस्कारों के साथ समरस नहीं है। अब नव वर्ष को ही ले लीजिए। अंग्रेजी पद्धति से एक जनवरी को मनाया जाने वाला वर्ष कहीं से भी नया नहीं लगता। इसके नाम पर किया जाने वाला मनोरंजन फूहड़ता के अलावा कुछ भी नहीं है। आधुनिकता के नाम पर समाज का अभिजात्य वर्ग वह सब कुछ कर रहा है, जो सभ्य और भारतीय समाज के लिए स्वीकार करने योग्य नहीं है। विसंगति तो यह है कि हमारे समाज के यही लोग संस्कृति बचाने के नाम पर लम्बे चौड़े व्याख्यान दे देते हैं। भारतीय काल गणना के अनुसार मनाए जाने वाले त्यौहारों के पीछे कोई न कोई प्रेरणा विद्यमान है। हम जानते हैं कि हिन्दी के अंतिम मास फाल्गुन का वातावरण भी वर्ष समाप्ति का संकेत देता है, साथ ही नव वर्ष के प्रथम दिन से ही वातावरण सुखद हो जाता है। हमारे ऋषि मुनि कितने श्रेष्ठ होंगे, जिन्होंने ऐसी काल गणना विकसित की, जिसमें कब क्या होना है, इस बात की पूरी जानकारी समाहित है।

पिछले दो हजार वर्षों में अनेक देशी और विदेशी राजाओं ने अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं की तुष्टि करने तथा इस देश को राजनीतिक दृष्टि से पराधीन बनाने के प्रयोजन से अनेक संवतों को चलाया, किंतु भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान केवल विक्रमी संवत के साथ ही जुड़ी रही। अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण आज भले ही सर्वत्र ईसवी संवत का बोलबाला हो और भारतीय तिथि-मासों की काल गणना से लोग अनभिज्ञ होते जा रहे हों, परंतु वास्तविकता यह भी है कि देश के सांस्कृतिक पर्व-उत्सव तथा राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरु नानक आदि महापुरुषों की जयंतियाँ आज भी भारतीय काल गणना के हिसाब से ही मनाई जाती हैं, ईसवी संवत के अनुसार नहीं। विवाह-मुण्डन का शुभ मुहूर्त हो या श्राद्ध-तर्पण आदि सामाजिक कार्यों का अनुष्ठान, ये सब भारतीय पंचांग पद्धति के अनुसार ही किया जाता है, ईसवी सन् की तिथियों के अनुसार नहीं। इसके बाद भी हमारा समाज का एक वर्ग इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पा रहा है। इसके कारण हम सामाजिक मान मर्यादाओं का स्वयं ही मर्दन करते जा रहे हैं। जिसके चलते इसका दुष्प्रभाव हमारे सामने आ रहा है और समाज में अनेक प्रकार की विसंगतियां भी जन्म ले रही हैं, जो भारतीय जीवन दर्शन के हिसाब से स्वीकार योग्य नहीं हैं।

शुभ कार्य के लिए शुभ समय की आवश्यकता होती है और यह शुभ समय निकालने की सही विधि केवल भारतीय काल गणना में ही समाहित है। भारतीय नववर्ष का पहला दिन यानी सृष्टि का आरम्भ दिवस, युगाब्द और विक्रम संवत जैसे विश्व के प्राचीन संवत का प्रथम दिन, श्रीराम एवं युधिष्ठिर का राज्याभिषेक दिवस, मां दुर्गा की साधना चैत्र नवरात्रि का प्रथम दिवस, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक, प्रखर देशभक्त डॉ. केशवराव हेडगेवार जी का जन्मदिन, आर्य समाज स्थापना दिवस, संत झूलेलाल जयंती। इतनी विशेषताओं को समेटे हुए हमारा नव वर्ष वास्तव में हमें कुछ नया करने की प्रेरणा देता है। वास्तव में ये वर्ष का सबसे श्रेष्ठ दिवस है। भारतीय नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। ब्रह्म पुराण के अनुसार पितामह ब्रह्मा ने इसी दिन से सृष्टि निर्माण प्रारम्भ किया था, इसलिए यह सृष्टि का प्रथम दिन है। इसकी काल गणना बड़ी प्राचीन है। सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक 1 अरब, 95 करोड़, 58 लाख, 85 हजार, 123 वर्ष बीत चुके हैं। यह गणना ज्योतिष विज्ञान के द्वारा निर्मित है। आधुनिक वैज्ञानिक भी सृष्टि की उत्पत्ति का समय एक अरब वर्ष से अधिक बता रहे हैं। जो भारतीय काल गणना की शाश्वत उपयोगिता का प्रमाण देता है। हिंदु शास्त्रानुसार इसी दिन से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारम्भ गणितीय और खगोल शास्त्रीय संगणना के अनुसार माना जाता है।

भारतवर्ष में वसंत ऋतु के अवसर पर नूतन वर्ष का आरम्भ मानना इसलिए भी हर्षोल्लास पूर्ण है, क्योंकि इस ऋतु में चारों ओर हरियाली रहती है तथा नवीन पत्र-पुष्पों द्वारा प्रकृति का नव शृंगार किया जाता है। भारतीय कालगणना के अनुसार वसंत ऋतु और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अति प्राचीन काल से सृष्टि प्रक्रिया की भी पुण्यतिथि रही है। वसंत ऋतु में आने वाले वार्सांतिक नवरात्र का प्रारम्भ भी सदा इसी पुण्य तिथि से होता है। विक्रमादित्य ने भारत की इन तमाम काल गणना सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नव संवत्सर संवत को चलाने की परंपरा शुरू की थी और तभी से समूचा भारत इस तिथि का प्रतिवर्ष अभिनंदन करता है। ऐसे में विचारणीय तथ्य यह है कि हम जड़ों से जुड़े रहना चाहते हैं या फिर जड़ बनकर पश्चिम के पीछे भागना चाहते हैं। ध्यान रहे नकल हमेशा नकल ही रहती है, वास्तविकता नहीं हो सकती। आज चमक दमक के प्रति बढ़ता आकर्षण हमें भारतीयता से दूर कर रहा है, लेकिन यह भी एक बड़ा सच है कि दुनिया के तमाम देशों के नागरिकों को भारतीयता रास आने लगी है। जब वे ऐसा कर सकते हैं तो भारतीय समाज के लिए यह बहुत ही सीधा मार्ग है। ■

अमर शहीद

देश के इस सपूत ने नहीं स्वीकारी गुलामी

23 मार्च को भगत सिंह को दी गई थी फांसी

भगत का जन्म लायलपुर ज़िले के बंगा, जो वर्तमान में पाकिस्तान में 27 सितंबर 1907 को सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम किशन सिंह था। भगत सिंह के जन्म के दौरान उनके पिता किशन जेल में थे।

बृजेश शर्मा

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शहीद भगत सिंह ने महज 23 साल की उम्र में देश के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी थी। वह आजादी की लड़ाई के दौरान सभी युवाओं के यूथ आइकॉन थे। वह देश की आजादी में आगे आने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करते थे। आज के दिन यानि की 23 मार्च को भगत सिंह को फांसी दे दी गई थी। काफी कम उम्र में भगत सिंह के मन में देश के लिए कुछ कर गुजरने की चाह पैदा हो गई थी। उनका पूरा जीवन संघर्षों में बीता। आइए जानते हैं भगत सिंह के जीवन से जुड़ी कुछ खास बातें...

जन्म

भगत का जन्म लायलपुर जिले के बंगा, जो वर्तमान में पाकिस्तान में 27 सितंबर 1907 को सिख परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम किशन सिंह था। भगत सिंह के जन्म के दौरान उनके पिता किशन जेल में थे। भगत सिंह में बचपन से अपने परिवार वालों में देश के लिए भक्ति देखते चले आ रहे थे। जिसके कारण उनके अंदर भी बचपन से ही देशप्रेम जाग गया था। भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह भी स्वतंत्रता सेनानी थी। भगत सिंह के पिता ने उनकी शिक्षा के लिए दयानंद एंग्लो वैदिक हाई स्कूल में एडमिशन कराया था।

जलियावाला बाग हत्याकांड

भगत सिंह साल 1919 में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड से बहुत दुखी हुए थे। वह महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन से जुड़े थे। भगत सिंह ने इस आंदोलन का खुलकर समर्थन किया था। गांधीजी के कहने पर भगत सिंह ब्रिटिश बुक्स को जला दिया करते थे। गांधी जी ने चौरी चौरा में हुई हिंसा के चलते असहयोग आन्दोलन बंद कर दिया था। लेकिन भगत सिंह को गांधी जी का फैसला अच्छा नहीं लगा और वह गांधीजी की अहिंसावादी बातों को छोड़कर दूसरी पार्टी ज्वॉइन करने की सोचने लगे।

आजादी की लड़ाई

जब लाहौर के नेशनल कॉलेज में पढ़ रहे भगत सिंह की मुलाकात भगवती चरन, सुखदेव थापर और अन्य कुछ लोगों से हुई, तब आजादी की लड़ाई उस समय जोरों पर थी। देश प्रेम के कारण भगत सिंह ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और पूरी तरह से देश की आजादी में कूद गए। जब भगत सिंह के घरवालों ने उनसे शादी करने के लिए कहा तो भगत सिंह ने जवाब दिया कि अगर वह आजादी से पहले शादी करेंगे तो उनकी दुल्हन मौत होगी। भगत सिंह कॉलेज में कई नाटकों में भाग लेते थे। जिस कारण वह काफी अच्छे एक्टर भी थे। देश भक्ति से परिपूर्ण नाटकों से वह देश के युवाओं को आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करते थे। सबसे पहले भगत सिंह ने नौजवान भारत सभा ज्वाइन की। इस दौरान भगत सिंह मैग्जीन 'कीर्ती' के लिए कार्य करने लगे। वहीं साल 1926 में भगत सिंह को नौजवान भारत सभा का सेक्रेटरी बना दिया गया। साल 1928 में भगत सिंह ने हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ज्वॉइन कर ली। इसे चंद्रशेखर आजाद ने बनाया था।

साइमन कमीशन का विरोध

30 अक्टूबर 1928 को पूरी पार्टी ने साथ मिलकर भारत में आये और साइमन कमीशन का विरोध करना शुरू कर दिया। इस दौरान उनके साथ लाला लाजपत राय भी थे। साइमन वापस जाओ का नारा लगाते हुए वह लोग लाहौर रेलवे स्टेशन पर खड़े थे। जिसके बाद वहां पर लाठी चार्ज कर दिया गया। जिसमें लाला लाजपत राय बुरी तरह से घायल हो गए थे। जिसके बाद उनकी मौत हो जाने से भगत सिंह को गहरा आघात पहुंचा था। जिसके बाद भगत सिंह और उनकी पार्टी ने अंग्रेजों से बदला लेनी की ठानी। लालाजी की मौत का बदला लेने के लिए भगत सिंह और उनकी पार्टी के लोगों ने ऑफिसर स्कॉट को मारने का प्लान बनाया, लेकिन भूल से उन लोगों ने असिस्टेंट पुलिस सौन्डर्स की हत्या कर दी। अपने आप को अंग्रेजों से बचाने के लिए वह लाहौर से भाग निकले। लेकिन ब्रिटिश सरकार ने भगत सिंह को पकड़ने के लिए चारों ओर जाल बिछा दिया था। वहीं अंग्रेजों से बचने के लिए भगत सिंह ने अपनी बाल और दाढ़ी भी बनवा दी थी। यह कार्य उनकी सामाजिक धार्मिकता के खिलाफ है, लेकिन उन्हें देश के आगे कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

भगत सिंह को फांसी

भगत सिंह ने अपने साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर साल 1929 में असेंबली हॉल में बम ब्लास्ट किया। इस दौरान उनकी मुलाकात चंद्रशेखर आजाद, राजदेव व सुखदेव से हो चुकी थी। बम ब्लास्ट के बाद भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया। जिसके बाद उन्हें जेल में भी कई तरह की यातनाएं दी गई। भगत सिंह ने जेल के अंदर कैदियों की स्थिति को सुधार के लिए भी आन्दोलन शुरू कर दिया। वहीं भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की फांसी की सजा 24 मार्च को थी। लेकिन पूरा देश उनकी रिहाई के लिए प्रदर्शन कर रहा था। जिस कारण अंग्रेजों ने 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव को फांसी दे दी गई। ■

बचपन में ही बालक केशव में राष्ट्रीय भावना कूट कूट कर भरी थी। यह उनकी बचपन की कुछ घटनाओं से स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है। पहली घटना 22 जून 1897 की है। इस समय बालक केशव की आयु मात्र 8 वर्ष थी।

बचपन में ही डा. हेडगेवार ने

देखा था भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना

डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार अक्सर यह सोचा करते थे कि प्राचीन भारत में सैन्य पौरुष, ज्ञान विज्ञान, अतुलनीय समृद्धि, गौरवशाली संस्कृति इत्यादि सब कुछ होते हुए भी भारत कालांतर में परतंत्र क्यों हुआ। इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने तत्कालीन विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक संस्थाओं एवं स्वतंत्रता आंदोलनों में अपनी भागीदारी के दौरान खोजने का प्रयास किया।

प्रह्लाद सबनानी

इस संदर्भ में उन्होंने अपने विचारों का निष्कर्ष स्वतंत्रता सेनानियों, नेताओं, संत-महात्माओं समेत सभी भारतवासियों के सामने इस प्रकार रखा हमारे समाज और देश का पतन मुस्लिम हमलावरों या अंग्रेजों के कारण नहीं है। अपितु, राष्ट्रीय भावना के शिथिल हो जाने पर व्यक्ति और समष्टि के वास्तविक संबंध बिगड़ गये तथा इस प्रकार की असंगठित व्यवस्था के कारण ही एक समय दिग्विजय का डंका दसों दिशाओं में बजाने वाला हिन्दू (भारतीय) समाज सैकड़ों वर्षों से विदेशियों की आसुरिक सत्ता के नीचे पददलित है। डॉक्टर हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना भी इसी उद्देश्य को लेकर की थी कि संघ न केवल राष्ट्र की सर्वांग स्वतंत्रता एवं सर्वांग सुरक्षा के लिए देशभक्त स्वतंत्रता सेनानियों का शक्तिशाली संगठन बने बल्कि भारत की सनातन राष्ट्रीय पहचान हिन्दुत्व का सुरक्षा कवच भी बने। डॉ. हेडगेवार का स्पष्ट मत था कि भारत के वैभव, पतन, संघर्ष और उत्थान का इतिहास हिन्दुओं के सामाजिक उतार चढ़ाव के साथ जुड़ा हुआ है। अतः भारत को स्वतंत्र करने एवं बाद में स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिए देश के बहुसंख्यक प्राचीन राष्ट्रीय समाज हिन्दू को संगठित, शक्तिशाली, चरित्रवान, स्वदेशी, स्वाभिमानी बनाना अति आवश्यक है। डॉ. हेडगेवार के इसी चिंतन ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को जन्म दिया था।

दरअसल, मुगलों एवं अंग्रेजों के शासनकाल में भारत में हिंदुओं को विभिन्न जाति, धर्म, पंथ एवं सम्प्रदाय में अलग अलग बांटने की पुरजोर कोशिश की गई थी, ताकि भारत एक राष्ट्र के रूप में उभर ही न सके। इसके लिए अंग्रेजों ने तीन सूत्रीय कार्यक्रम पर कार्य किया। (1) हिंदू समाज का गैरराष्ट्रीयकरण अर्थात भारतीय नागरिकों को राष्ट्रवाद की भावना से भटकाना, (2) हिंदू समाज का गैर समाजीकरण अर्थात भारतीय नागरिकों को विभिन्न समाजों के बीच बांटना, (3) हिंदू समाज का गैर हिंदुत्ववादीकरण अर्थात भारतीय नागरिकों को महान भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति से दूर ले जाना। इस एजेण्डा पर कार्य करते हुए उन्होंने भारत पर लगभग 200 वर्षों तक अपना शासन सफलतापूर्वक चलाया। डॉ. हेडगेवार ने बीमारी की सही पहिचान कर उसका इलाज भी ठीक तरीके से किया। एक, भारत एक हिन्दू राष्ट्र है, यह विषय देश में पुर्नस्थापित किया। दूसरा, देश का समाज स्वयं को हिंदू कहने में हीनता अनुभव करता था। भारतीय समाज को हीनता के भाव से निकालकर स्वयं को हिन्दू कहने में गौरवान्वित अनुभव करवाया। आज देशभर में बना हिंदुत्व का वातावरण इसका परिचायक है। तीसरा, संघ शाखा नाम की अभिनव पद्धति का अविष्कार किया जिसमें नित्य-नियमित शारीरिक व बौद्धिक कार्यक्रमों से संस्कार ग्रहण कर राष्ट्रभक्ति व देशभक्ति से परिपूर्ण व्यक्ति निर्मित होता है। सनातन हिन्दू धर्म में वर्ष प्रतिपदा का विशेष महत्व होता है। वर्ष प्रतिपदा यानी वर्ष का पहला दिन। यह भारतीय तिथि के शुक्ल पक्ष का प्रथम दिवस है। ब्रह्म पुराण में कहा गया है कि इसी तिथि को (चैत्र मास की प्रतिपदा को) सृष्टि का प्रारंभ हुआ और इसी दिन से काल गणना का क्रम शुरू हुआ। प्राचीन भारतीय इतिहास में इस दिन अनेक महत्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई हैं और इसी दिन वर्ष 1889 में चैत्र मास के शुक्ल प्रतिपदा के दिन महान देशभक्त और संगठन-शिल्पी डॉ. केशव राव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी हुआ था। आपका जन्म नागपुर में एक साधारण से परिवार में हुआ था। पिता का नाम श्री बलिराम पंत और माता का नाम श्रीमती रेवती बाई था। उस समय बालक केशव को देखकर शायद ही किसी को आभास हुआ होगा कि यह बालक आगे चलकर भारत के भविष्य और समाजिक जीवन में एक नई क्रांति का संचार करेगा। बचपन में ही बालक केशव में राष्ट्रीय भावना कूट कूट कर भरी थी। यह उनकी बचपन की कुछ घटनाओं से स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है। पहली घटना 22 जून 1897 की है। इस समय बालक केशव की आयु मात्र 8 वर्ष थी। ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया का जन्म दिन पूरे भारतवर्ष में हर्षोल्लास से मनाया जा रहा था। मिठाइयां बांटी जा रही थी। स्कूल में एक मिठाई का दोना बालक केशव को भी मिला। किंतु जैसे ही बालक केशव को पता चला कि यह मिठाई ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के जन्म दिन के खुशी में बांटी जा रही है, उन्होंने मिठाई के दोने को कूड़े के ढेर पर फेंक दिया और कहा कि मैं उन्हें अपने देश की महारानी नहीं मानता।

डॉ. हेडगेवार के बालजीवन की एक और घटना पर ध्यान दिया जाना चाहिए। नागपुर में सीताबार्डी किले पर अंग्रेजों का झंडा यूनियन जैक लहराता रहता था। बालक केशव को यह अच्छा नहीं लगता था। उनकी चाहत थी कि इसके स्थान पर हिंदवी स्वराज का प्रतीक भगवा-ध्वज होना चाहिए। बालक केशव ने इसे कार्यरूप देने के लिए अपने साथी मित्रों के साथ मंत्रणा कर एक योजना बनाई। योजना यह बनी कि सुरंग खोदकर किले तक पहुंचा जाए और वहां पहुंच कर किले से विदेशी यूनियन-जैक को उतार कर उसके स्थान पर अपना भगवा-ध्वज फहरा दिया जाए। केशव ने अपने साथियों के साथ मिलकर सुरंग खोदने का काम शुरू भी कर दिया था परंतु जब इस घटना की जानकारी बालक केशव के गुरु को हुई तो उन्होंने समझा-बुझा कर बालक केशव को इसे करने से रोक दिया था।

डॉ. हेडगेवार, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल, क्रांतिकारी नेता त्रलोक्यनाथ, सरदार भगत सिंह, वीर सावरकार, सुभाषचंद्र बोस, रासबिहारी बोस, श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों की श्रेणी के महापुरुष थे तथा आप आजाद हिंद फौज, अभिनव भारत, गदर पार्टी, अनुशीलन समिति, हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना, हिन्दू महासभा, आर्यसमाज आदि जैसे संगठनों के सम्पर्क में आए और आपने आगे चलकर भारतीय नागरिकों में राष्ट्रभाव जगाने एवं सामाजिक समरसता स्थापित करने के उद्देश्य से वर्ष 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी और यही संघ आज पूरे विश्व में चर्चा का विषय बना हुआ है। संघ शक्ति का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। संघ के स्वयंसेवकों द्वारा समाज जागरण व परिवर्तन के लिए किए गए कार्यों का परिणाम समाज, देश व विश्व के सामने एक प्रतिमान के रूप में खड़ा हो रहा है। इसी कारण आज संघ विश्व में सर्वत्र सर्वाधिक चर्चित है। डॉ. हेडगेवार ने कहा था कि संघ का कार्य व्यक्तियों को जोड़ने का है, तोड़ने का नहीं। अतः इसमें द्वेष की भावना, स्वार्थ, लोकेष्णा आदि का कोई स्थान नहीं है। संघ के स्वयंसेवक आज भी इसी भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

डॉ. हेडगेवार ने कांग्रेस के भीतर रहकर अखंड भारत, सर्वांग स्वतंत्रता और शक्तिशाली हिन्दू संगठन की आवश्यकता का वैचारिक आधार तैयार करने का पूरा प्रयास किया था तथा वे कांग्रेस के मंचों पर अंग्रेजों के विरुद्ध धुआंधार भाषण भी देने लगे थे। इन भाषणों से समस्त देश ने डॉ. हेडगेवार का उद्देश्य जाना और उधर डॉ. हेडगेवार के इन तेवरों से अंग्रेजों के मन में भय भी उत्पन्न हुआ था। ऐसे ही एक उग्र भाषण पर डॉ. हेडगेवार को अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था। उन पर मई 1921 में राजद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया और एकतरफा फैसले में डॉ. हेडगेवार को एक वर्ष के कठोर सश्रम कारावास की सजा दी गई थी। राष्ट्रवाद के मुद्दे पर डॉ. हेडगेवार के क्रांतिकारी विचार कांग्रेस के नेताओं को असहज कर देते थे, अतः अंततः आपने कांग्रेस छोड़ दी थी एवं पूर्ण रूप से राष्ट्रवादी संगठनों के साथ जुड़ गए थे। संघ के स्वयंसेवक अपने आद्य सरसंघचालक परम पूजनीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार के उन शब्दों को सदैव याद रखे हुए हैं जो उन्होंने अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले बीमारी की हालत में अपनी आंखों में आंसू भर कर कहे थे- द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ होने जा रहा है, बहुत शीघ्र शक्ति को अर्जित करो ताकि अंग्रेजों को भारत भूमि से उखाड़ा जा सके, समय अनुकूल है और इस प्रकार डॉ. हेडगेवार अखण्ड भारत- अखण्ड भारत और पूर्ण स्वतंत्रता - पूर्ण स्वतंत्रता कहते हुए जोर जोर से रोने लगे और उनका नश्वर शरीर 21 जून 1940 को ब्रह्मलीन हो गया। उनकी इस पीड़ा में उनके भीतर एक महामानव और राष्ट्रभक्त स्वतंत्रता सेनानी के दर्शन होते हैं तथा उनका जीवन व्यक्तित्व व विचार आज भी हम सभी भारतीयों के लिए प्रेरणादायक है। ■

भारत की प्राचीन जल संस्कृति को जीवंत करें

जल प्रदूषण एवं पीने के स्वच्छ जल की निरन्तर घटती मात्रा को लेकर बड़े खतरे खड़े हैं। धरती पर जीवन के लिये जल सबसे जरूरी वस्तु है, जल है तो जीवन है। जल ही किसी भी प्रकार के जीवन और उसके अस्तित्व को संभव बनाता है। जीव मंडल में पारिस्थितिकी संतुलन को यह बनाये रखता है। पीने, नहाने, ऊर्जा उत्पादन, फसलों की सिंचाई, सीवेज के निपटान, उत्पादन प्रक्रिया आदि बहुत उद्देश्यों को पूरा करने के लिये स्वच्छ जल बहुत जरूरी है। जिन पाँच तत्वों को जीवन का आधार माना गया है, उनमें से एक तत्व जल है।

मधुसूदन भट्ट

जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव एवं जीव-जन्तुओं के अलावा जल कृषि के सभी रूपों और अधिकांश औद्योगिक उत्पादन प्रक्रियाओं के लिये भी बेहद आवश्यक है, परंतु आज पूरी दुनिया जल-संकट के साए में खड़ी है। अनियोजित औद्योगीकरण, बढ़ता प्रदूषण, घटते रेगिस्तान एवं ग्लेशियर, नदियों के जलस्तर में गिरावट, पर्यावरण विनाश, प्रकृति के शोषण और इनके दुरुपयोग के प्रति असंवेदनशीलता पूरे विश्व को एक बड़े जल संकट की ओर ले जा रही है। इन सभी समस्याओं से दुनिया को अवगत कराने एवं सबको जागरूक करने के लिए 1993 से प्रतिवर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व के सभी देशों में स्वच्छ एवं सुरक्षित जल की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना है साथ ही जल संरक्षण के महत्व पर भी ध्यान केंद्रित करना है। आप सोच सकते हैं कि एक मनुष्य अपने जीवन काल में कितने पानी का उपयोग करता है, किंतु क्या वह इतने पानी को बचाने का प्रयास करता है?

दुनिया की आबादी आठ अरब से अधिक हो चुकी है। इसमें से लगभग आधे लोगों को साल में कम से कम एक महीने पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण 2000 से बाढ़ की घटनाओं में 134 प्रतिशत वृद्धि हुई है और सूखे की अवधि में 29 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। पानी के संरक्षण और समुचित उपलब्धता को सुनिश्चित कर हम पर्यावरण को भी बेहतर कर सकते हैं तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या का भी समाधान निकाल सकते हैं। पैकेट और बोतल बन्द पानी आज विकास के प्रतीकचिह्न बनते जा रहे हैं और अपने संसाधनों के प्रति हमारी लापरवाही अपनी मूलभूत आवश्यकता को बाजारवाद के हवाले कर देने की राह आसान कर रही है। विशेषज्ञों ने जल को उन प्रमुख संसाधनों में शामिल किया है, जिन्हें भविष्य में प्रबंधित करना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। सदियों से निर्मल जल का स्त्रोत बनी रहीं नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, जल संचयन तंत्र बिगड़ रहा है, और भू-जल स्तर लगातार घट रहा है। धरती पर सुरक्षित और पीने के पानी के बहुत कम प्रतिशत के आंकलन के द्वारा जल संरक्षण या जल बचाओ अभियान हम सभी के लिये बहुत जरूरी हो चुका है। औद्योगिक कचरे की वजह से रोजाना पानी के बड़े स्त्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। जल को बचाने में अधिक कार्यक्षमता लाने के लिये सभी

राजस्थान के किले तो वैसे ही प्रसिद्ध हैं पर इनका जल प्रबन्धन विशेष रूप से देखने योग्य है और अनुकरणीय भी हैं। जल संचयन की परम्परा वहाँ के सामाजिक ढाँचे से जुड़ी हुई हैं तथा जल के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण के कारण ही प्राकृतिक जलस्रोतों को पूजा जाता है।

औद्योगिक बिल्डिंगें, अपार्टमेंट्स, स्कूल, अस्पतालों आदि में बिल्डरों के द्वारा उचित जल प्रबंधन व्यवस्था को बढ़ावा देना चाहिये। पीने के पानी या साधारण पानी की कमी के द्वारा होने वाली संभावित समस्या के बारे में आम लोगों को जानने के लिये जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाना चाहिये। जल की बबार्दी के बारे में लोगों के व्यवहार को मिटाने के लिये इसकी त्वरित जरूरत है। इसी सप्ताह संयुक्त राष्ट्र के मुख्यालय में जल सम्मेलन आयोजित हो रहा है, जिसमें सभी के लिए जल और स्वच्छता उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण चर्चा होगी। पानी धरती पर जीवन के अस्तित्व के लिए आधारभूत आवश्यकता है। आबादी में वृद्धि के साथ पानी की खपत बेतहाशा बढ़ी है, लेकिन पृथ्वी पर साफ पानी की मात्रा कम हो रही है। जलवायु परिवर्तन और धरती के बढ़ते तापमान ने इस समस्या को गंभीर संकट बना दिया है। इस सम्मेलन में सरकार, उद्योग जगत और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के लिए लक्ष्य तो निर्धारित किये ही जायेगे, साथ ही आम लोगों को पानी बचाने के मुहिम से जोड़ने के लिए भी कारगर कार्ययोजना बनाने पर विचार होगा। दुनिया के कई हिस्सों की तरह भारत भी जल संकट का सामना कर रहा है। वैश्विक जनसंख्या का 18 प्रतिशत हिस्सा भारत में निवास करता है, लेकिन चार प्रतिशत जल संसाधन ही हमें उपलब्ध है। भारत में जल-संकट की समस्या से निपटने के लिये प्राचीन समय से जो प्रयत्न किये गये है, वे दुनिया के लिये मार्गदर्शक हैं। देश के सात राज्यों के 8220 ग्राम पंचायतों में भूजल प्रबंधनों के लिए अटल भूजल योजना चल रही है। स्थानीय समुदायों के नेतृत्व में चलने वाला यह दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्रम है। साथ ही, नल से जल, नदियों की सफाई, अतिक्रमण हटाने जैसे प्रयास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हो रहे हैं। जल संरक्षण की दिशा में बड़ी पहल करते हुए केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने इस वर्ष जनवरी में राज्यों के जल मंत्रियों का सम्मेलन आयोजित किया था। अब यह सम्मेलन हर साल आयोजित किया जाएगा। इसके उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उचित ही रेखांकित किया कि सभी राज्यों को मिलकर काम करना होगा तथा जल संरक्षण एवं उपयोग किये गये पानी को फिर से इस्तेमान में लाने के उपाय करने होंगे। हमारे यहां जल बचाने के मुख्य साधन है नदी, ताल एवं कूप। इन्हें अपनाओं, रक्षा करो, अभय दो, इन्हें मरुस्थल के हवाले न करो। अन्तिम समय यही तुम्हारे जीवन और जीवनी को बचायेंगे। प्रख्यात पर्यावरणविद अनुपम मिश्र तो अब भी खरे है तालाब कहते- कहते स्वर्गस्थ हो गये। आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व जल दिवस की मूल भावना को अपने दैनिक जीवन में उतारकर हर व्यक्ति, हर दिन जल संरक्षण का यथासंभव प्रयास करे। गाँव के स्तर पर लोगों के द्वारा बरसात के पानी को इकट्ठा करने की शुरूआत करनी चाहिये। उचित रख-रखाव के साथ छोटे या बड़े तालाबों को बनाने के द्वारा बरसात के पानी को बचाया जा सकता है। धरती के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत भाग जल से भरा हुआ है। परंतु, पीने योग्य जल मात्र तीन प्रतिशत है। इसमें से भी मात्र एक प्रतिशत मीठे जल का ही वास्तव में हम उपयोग कर पाते हैं। पानी का इस्तेमाल करते हुए हम पानी की बचत के बारे में जरा भी नहीं सोचते, जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश जगहों पर जल संकट की स्थिति पैदा हो चुकी है। जल का संकट एवं विकट स्थितियां अति प्राचीन समय से बनी हुई है। इसी कारण राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि प्रांतों में जल संरक्षण के लिये नाड़ी, तालाब, जोहड़, बन्धा, सागर, समंद एवं सरोवर आदि बनाने की प्राचीन परम्परा रही है। राजा-महाराजाओं तथा सेठ-साहूकारों ने अपने पूर्वजों की स्मृति में अपने नाम को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से इन प्रदेशों के विभिन्न भागों में कलात्मक बावड़ियों, कुओं, तालाबों, झालरों एवं कुंडों का निर्माण करवाया। जहाँ प्रकृति एवं संस्कृति परस्पर एक दूसरे से समायोजित रही हैं। राजस्थान के किले तो वैसे ही प्रसिद्ध हैं पर इनका जल प्रबन्धन विशेष रूप से देखने योग्य है और अनुकरणीय भी हैं। जल संचयन की परम्परा वहाँ के सामाजिक ढाँचे से जुड़ी हुई हैं तथा जल के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण के कारण ही प्राकृतिक जलस्रोतों को पूजा जाता है। ■

अब आप भी ले सकते हैं फेसबुक और इंस्टाग्राम पर 'ब्लूटिक'

कुछ समय पहले मेटा के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग ने खुद इस बात का ऐलान किया था, कि यूजर ब्लू टिक के लिए कुछ पैसे देकर अपना अकाउंट वेरीफाई करा सकते हैं। हालांकि सिर्फ पैसे देकर ही अकाउंट वेरीफाई नहीं होगा, बल्कि आपको गवर्नमेंट द्वारा जारी किया गया आइडेंटिटी कार्ड भी शो करना पड़ेगा।

विंध्यवासिनी सिंह

आपको बता दें फेसबुक और इंस्टाग्राम पर अगर आप ब्लूटिक लेना चाहते हैं, तो आप पेमेंट करके इस सुविधा का लाभ ले सकते हैं। कई लोग कहेंगे कि पहले तो यह फ्री थी, लेकिन आप यह जान लीजिए कि पहले के समय में किसी को भी ब्लूटिक लेना इतना आसान नहीं था। लेकिन ट्विटर ने जबसे ब्लूटिक के लिए पैसा चार्ज करना शुरू किया है, तब से इस बात की संभावना जताई जा रही थी कि फेसबुक और इंस्टाग्राम भी ऐसा कर सकते हैं और अगर खबरों की मानें तो यूजर्स को पेड वर्जन के लिए प्रत्येक महीने तकरीबन $12 अर्थात 991 रुपए देने पड़ सकते हैं। वही आईओएस और एंड्रॉयड मोबाइल यूजर्स को थोड़ा अधिक अर्थात तकरीबन $15 के आसपास भुगतान करना होगा जिसे अगर रुपए में बदले तो यह तकरीबन 1250 के आसपास आएगा। जाहिर तौर पर आप कहेंगे कि भारत जैसे देश में भला इस तरह का सब्सक्रिप्शन कौन लेना चाहेगा, ऐसे में आप इस बात को जान लीजिए कि ब्लू टिक लेना कई लोगों के लिए एक स्टेटस सिंबल भी है और इस बात को सोशल मीडिया कंपनियां बखूबी जानती हैं। कुछ समय पहले मेटा के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग ने खुद इस बात का ऐलान किया था, कि यूजर ब्लू टिक के लिए कुछ पैसे देकर अपना अकाउंट वेरीफाई करा सकते हैं। हालांकि सिर्फ पैसे देकर ही अकाउंट वेरीफाई नहीं होगा, बल्कि आपको गवर्नमेंट द्वारा जारी किया गया आइडेंटिटी कार्ड भी शो करना पड़ेगा। बहरहाल जितने इनफ्लुएंसर इन दोनों प्लेटफार्म पर कार्य करते हैं, वह तो इस सर्विस को अवश्य लेना चाहेंगे, क्योंकि वह अपने इनफ्लुएंसिंग बिजनेस के माध्यम से अपनी आर्निंग भी करते हैं। ऐसी अवस्था में अगर कुछ पैसे खर्च करके उन्हें अगर ब्लूटिक मिल जाता है या उनका पुराना ब्लूटिक कायम रहता है, तो उनके लिए यह संभवतः नुकसान का सौदा नहीं होगा, क्योंकि ब्लूटिक सोशल मीडिया पर एक भरोसे का नाम है, अर्थात अगर ब्लू टिक वेरीफाइड अकाउंट है तो लोग उसकी इंफॉर्मेशन पर एक हद तक भरोसा करते हैं। तो आप क्या सोच रहे हैं, क्या आप भी फेसबुक द्वारा दी जाने वाली ब्लू टिक सर्विस लेंगे या इंस्टाग्राम पर आप रील शेयर करते हैं, तो उसमें ब्लूटिक की वेरिफिकेशन आपके लिए फायदेमंद होगी? ■

ईद के मौके पर इस आसान तरीके से बनाएं शीर खुरमा

एक महीने पहले से ही लोग ईद की तैयारियों में जुट जाते हैं। वैसे तो ईद के मौके पर तमाम तरह के लजीज और मीठे पकवान बनते हैं, लेकिन शीर खुरमा के बिना ईद का त्योहार थोड़ा फीका सा लगता है।

स्नेहलता शर्मा

रमजान की आखिरी रात चांद देखने के बाद अगली सुबह को ईद का पर्व मनाया जाता है। यह मुस्लिम समाज का बड़ा और खास त्योहार होता है। लोग ईद की तैयारियों में महीनों पहले जुट जाते हैं। इस दिन लोगों के घर में स्वादिष्ट खाने के अलावा मीठा भी बनाया जाता है। ऐसे में ईद के त्योहार पर अगर शीर खुरमा न बनाया जाए तो यह त्योहार थोड़ा फीका सा लगता है। बता दें कि शीर खुरमा वर्मिसेली का ऑथेन्टिक वर्जन है। शीर का मतलब दूध और कुर्मा को खजूर कहा जाता है। शीर खुरमा ईद के मौके पर खासतौर पर बनाया जाता है। आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से आपको शीर खुरमा की रेसिपी बताने जा रहे हैं। जिसकी मदद से आप घर पर आसानी से स्वादिष्ट शीर खुरमा बना कर इसे मेहमानों के सामने सर्व कर सकती हैं।

मुख्य सामान

- सेंवई- 50 ग्राम
- दूध- 1/2 लीटर
- चीनी- 1/4 कप
- बादाम- जरूरत के अनुसार
- खसखस के बीज- 1 छोटा चम्मच
- किशमिश- जरूरत के अनुसार
- काजू- जरूरत के अनुसार
- इलायची- जरूरत के अनुसार
- घी- 3 बड़े चम्मच

ऐसे बनाएं

शीर खुर्मा को बनाने के लिए सबसे पहले आपको एक बड़े पैन में थोड़ा सा घी लेकर गर्म करना है। इसके बाद गर्म घी में खसखस के बीज, किशमिश, बादाम और काजू को डालकर 2 से 3 मिनट तक भूनना है। इसके बाद पैन में सेवइयां डालकर इसको अच्छे से गोल्डन ब्राउन होने तक भून लें। फिर जब सेवइयां गोल्डेन ब्राउन हो जाएं तो इसमें थोड़ा सा गर्म पानी डाल दें। इसके बाद इसको अच्छे से चलाते हुए मिक्स कर लें और फिर जरूरत के अनुसार दूध डालकर इलायची पाउडर डाल दें।

मीडियम आंच पर पकाएं

हल्की आंच पर पक रहे शीर खुरमा में शक्कर डालकर इसको अच्छे से मिक्स कर लें। इसके बाद करीब 5 मिनट तक उसे मीडियम आंच पर पकने के लिए छोड़ दें। पकने के बाद उसमें अपनी पसंद के अनुसार ड्राई फ्रूट डालकर शीर खुरमा की सजावट कर लें। इस तरह से ईद के मौके पर आप शीर खुरमा को घर पर बना सकते हैं। इस स्वीट डिश को आप परिवार और दोस्तों के साथ मिलकर एंज्वॉय करें। ■

रूस और अमेरिकी संबंध और बिगड़े

तो विश्व युद्ध का खतरा बढ़ जायेगा

एक साल से ज्यादा से चल रहे रूस यूक्रेन युद्ध में अमेरिका और नाटों के दखल को देख शायद रूस ने अब इनसे ही सीधे सुलटने का निर्णय ले लिया है। वह इस तरह की पहले से इसकी चेतावनी देता भी रहा है। लगता है कि इसकी शुरूआत उसने कालासागर में अमेरिकी ड्रोन को मारकर कर दी है। उसने अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिका को एक तरह से चेतावनी भी दे दी है। अपने इरादे भी बता दिए हैं। घटना को लेकर रूसी रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगु ने कहा कि हाल के दिनों में ऐसी घटनाओं में बढ़ोतरी हुई है। अमेरिका रूस की जासूसी कर रहा है। इसी वजह से ये घटना हुई। रूसी रक्षा मंत्री ने यह भी कहा कि अगर भविष्य में अमेरिका ने कोई उकसावे की कार्रवाई की तो रूस भी उसका 'उचित जवाब' देगा।

अशोक मधुप

एक साल से ज्यादा से चल रहे रूस यूक्रेन युद्ध में अब यह साबित हो गया कि नाटो देश यूक्रेन के कंधे पर बंदूक रखकर रूस को सबक सिखाना चाहते हैं। उसे तोड़ना चाहते हैं। उनका इरादा रूस की अकड़ खत्म करने का है। यह खुद तो नहीं लड़ रहे किंतु युद्धरत यूक्रेन की अस्त्र-शस्त्र और अन्य प्रकार की पूरी क्षमता से मदद करने में लगे हुए हैं। रूस भी हालत को समझ गया है। उसने पीठ पीछे की कहानी को आगे करने का निर्णय लिया। इसी के तहत रूस ने काला सागर के ऊपर उड़ते अमेरिकी ड्रोन को मार गिराया। उसकी ये कार्रवाई बताती है कि उसने अमेरिका और नाटो देशों से अब सीधे निपटने का फैसला कर लिया है। अच्छा है कि नाटो अब भी संभाल जाए। सुधर जाए। रूस के दुश्मन यूक्रेन की परोक्ष और अपरोक्ष रूप से की जाने वाली मदद बंद कर दें। ऐसा न होने पर वह नाटो देशों के विरुद्ध सीधी कार्रवाई कर सकता है।

यूक्रेन एक छोटा-सा देश है। रूस जैसी महाशक्ति से उसका कोई मुकाबला नहीं। यूक्रेन नाटो में शामिल होने के प्रयास में लगा था। रूस चाहता था कि यूक्रेन नाटो गठबंधन में शरीक न हो। रूसी राष्ट्रपति पुतिन यूक्रेन को रूस का हिस्सा मानते रहे हैं। पुतिन की सदा मंशा रही कि वो रूस को साल 1991 से पहले यानि सोवियत संघ के विघटन से पहले वाले स्वरूप में वापस लेकर आएं। यूक्रेन रूस का हिस्सा बन जाए। वह ऐसा नहीं कर पाए। उधर यूक्रेन नाटों में शामिल होने के प्रयास में लग गया। इससे उन्हें लगा कि यदि ऐसा हो गया तो नाटो की सेनाएं यूक्रेन में आ जाएंगी। यूक्रेन की और रूस की सीमा सटी है। नाटो की सेनाएं यूक्रेन में आकर रूस के लिए परेशानी ही पैदा करेंगी। साथ ही उसकी यूक्रेन के रूस में मिलाने की योजना भी धूसरित हो जाएगी।

यूक्रेन पूरी क्षमता से नाटो में शामिल होने के प्रयास में लगा था। रूस के मना करने की अपील का उस पर असर नजर नहीं आ रहा था। ऐसे में उसे सबक सिखाने में लिए रूस ने ये हमला किया। उसने इसे छोटा सैन्य आपरेशन नाम दिया। रूस ने हमला ये सोचकर किया कि यूक्रेन के नाटों में शामिल होने के बाद नाटो देश उसका साथ देंगे, पहले नहीं, किंतु एक साल से चल रहे युद्ध ने स्पष्ट कर दिया कि अमेरिका और नाटो देश खुद युद्ध नहीं लड़ रहे, अपितु वे यूक्रेन को युद्ध लड़ा रहे हैं। मदद कर रहे हैं। खुद युद्ध के मैदान में नही हैं किंतु हथियार और गोला बारूद उनका है। सिर्फ लड़ने वाले उनके सैनिक नहीं हैं। वे सिर्फ यूक्रेन के जवान हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, तकरीबन 30 देशों ने भारी तादाद में यूक्रेन को हथियार और जरूरी चीजें मुहैया कराईं। ब्रिटेन और जर्मनी जैसे देशों ने भी ऐलान किया है कि यूक्रेन को विध्वंसकारी टैंक

एक साल से ज्यादा से चल रहे रूस यूक्रेन युद्ध में अब यह साबित हो गया कि नाटो देश यूक्रेन के कंधे पर बंदूक रखकर रूस को सबक सिखाना चाहते हैं। उसे तोड़ना चाहते हैं। उनका इरादा रूस की अकड़ खत्म करने का है।

जैसे- 'चैलेंजर 2 टैंक' और 'लेपर्ड 2 टैंक' यूक्रेन को मुहैया कराये जाएंगे। यूक्रेन को सबसे ज्यादा मदद अमेरिका कर रहा है। अमेरिका ने यूक्रेन को 90 स्ट्राइकर भेजे हैं। इसके अलावा, अमेरिका ने यूक्रेन को 59 ब्रेडली इन्फैंट्री लड़ाकू विमान भेजे हैं। रूस के खिलाफ लड़ने के लिए अमेरिका लगातार अपने हथियारों का जखीरा यूक्रेन को दे रहा है। गौरतलब है कि रूस लगातार यह बात कहता आया है कि यह युद्ध यूक्रेन के अलावा अमेरिका भी लड़ रहा है।

रूस लंबे समय से अमेरिका और नाटो देशों को चेतावनी दे रहा है कि यूक्रेन की मदद की तो ठीक नहीं होगा। वह मदद को सीधा अपने पर हमला मानेगा। कई बार वह परमाणु अस्त्रों के प्रयोग की धमकी भी देता रहा है। यह भी कहा है कि किसी देश की सैटलाइट उनके देश की जासूसी करती मिली, तो वह उस सैटलाइट को मार गिराएगा। अमेरिका और नाटो देशों की कोशिश थी कि रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाकर उसे कमजोर कर दिया जाए, किंतु एक साल बीतने पर भी ऐसा नहीं हो सका। रूस पेट्रोलियम उत्पाद का बड़ा केंद्र है। यह यूरोपियन देशों को पेट्रोलियम पदार्थ गैस आदि की आपूर्ति करता रहा है। युद्ध के दौरान उसने भारत और चीन को सस्ते पेट्रोलियम उत्पाद बेचकर अपनी आर्थिक हालत मजबूत बनाए रखी। इसका अमेरिका और नाटो देशों ने विरोध किया। भारत ने तो साफ कर दिया कि वह अपनी जरूरत का सामान उस देश से लेगा, जिससे उसे लाभ होगा। उसके हित सिद्ध होंगे। चीन के बारे में दुनिया जानती है, इसलिए उसने भी किसी की नहीं सुनी। रूस की मजबूती का एक कारण दुनिया के कई देशों को शस्त्रों की आपूर्ति भी है। वह लगातार जारी है।

इस युद्ध की सबसे बड़ी बात यह है कि युद्ध रूस की जमीन पर नहीं लड़ा जा रहा। युद्ध यूक्रेन की भूमि पर लड़ा जा रहा है। युद्ध का मैदान बना होने के कारण बर्बाद यूक्रेन हो रहा है, रूस नहीं। रूस ने युद्ध के दौरान भारत को एस 400 मिसाइल डिफैंस सिस्टम की तीसरी यूनिट ही नहीं दी, बल्कि वह पुराने करार के अनुरूप भारत समेत अन्य देशों को शस्त्र दे रहा है। उसके कल कारखाने पहले की तरह की काम कर रहे हैं। अभी रूस और ईरान के बीच 24 सुखोई विमान बेचने का सौदा हुआ है। उधर रूस भारत में सुपर सुखोई सुपर जेट और उसके कलपुर्जे बनाने की बात चला रहा है। रूस भारत का लंबे समय से सच्चा मित्र रहा है। भारत की समय-समय पर पूरी ताकत से मदद भी की है।

उधर युद्ध का मैदान बना होने के कारण यूक्रेन बर्बाद होने के कगार पर है। उसके यहां जरूरत के सामान की कमी होने लगी है। उद्योग धंधे बमबारी और मिसाइल हमले से बर्बाद हो रहे हैं। कृषि भूमि और खेत खाली पड़े हैं। यूक्रेन की मदद करने वाले अमेरिका और नाटो देश, यूक्रेन में प्रयोग होने वाले संसाधन और जरूरत के सामान की आपूर्ति कर रहे हैं। इतना ही नहीं जरूरत के शस्त्र और गोला बारूद भी दे रहे हैं। उनकी इस कार्रवाई से उनके देश की अर्थव्यवस्था ही प्रभावित हो रही है। उधर रूस अमेरिका और नाटो देशों द्वारा की जा रही यूक्रेन की मदद को लेकर परेशान है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन कुछ ही दिन में यूक्रेन को विजयी करने का इरादा रखते थे। लगातर लंबे चलते युद्ध और अमेरिका समेत नाटो देशों के यूक्रेन की मदद से वे झल्लाए हैं, परेशान हैं। वे देख रहे हैं कि नाटों देशों के राष्ट्राध्यक्ष चोरी छिपे यूक्रेन का दौरा कर रहे हैं। युद्ध के एक साल पूरा होने के आसपास अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन यूक्रेन जा चुके हैं। माना जाता है कि यूक्रेन को दौरा कर उन्होंने उसका हौसला ही नहीं बढ़ाया, बल्कि सब तरह की सहायता का आश्वासन भी दिया है।

देखना यह है कि रूस की अमेरिकी ड्रोन को मार गिराने की कार्रवाई को अमेरिका या मित्र देश कैसे लेते हैं। लगता है कि अब रूस मित्र देशों द्वारा यूक्रेन को भेजी जा रही आपूर्ति रोकने की कार्रवाई करेगा। सहायता सामग्री लेने वाले विमान या जलपोत को भी वह निशाना बना सकता है। ऐसे में अमेरिका और मित्र देश जवाब देने के लिए खुद आगे आएंगे, ऐसा नहीं लगता। यदि वे जवाब देने के लिए आगे आए तो सीमित क्षेत्र में लड़ा जा रहा यह युद्ध बड़ा आकार ले लेगा। यह विश्व युद्ध की ओर भी जा सकता है। ■

मोदी विरोधी पोस्टर लगाने वालों ने

खुद को राजनीतिक रूप से डरपोक साबित कर दिया है

नीरज कुमार दुबे

वैसे लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह जायज है कि किसी की सत्ता को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया जाये या किसी राजनीतिक दल अथवा नेता के खिलाफ पोस्टरबाजी की जाये। लेकिन यह जायज नहीं है कि पोस्टर लगाने वाला उसमें अपना नाम ही नहीं लिखे। दिल्ली की सड़कों पर जो पोस्टर लगाये गये उसके चलते दिल्ली पुलिस ने सौ से ज्यादा एफआईआर कीं तो विपक्ष ने बखेड़ा खड़ा कर इसे तानाशाही करार दे दिया है। लेकिन पोस्टर लगाने के खिलाफ एफआईआर का विरोध करने वालों को सोचना चाहिए कि अनाम पोस्टर लगाने वाला अलगाववादी या आतंकवादी भी तो हो सकता है। आज देश के प्रधानमंत्री के खिलाफ पोस्टर लगा है। यदि इस पर कार्रवाई नहीं हुई तो ऐसे तत्वों का हौसला बढ़ेगा और कल को किसी और के खिलाफ भी ऐसे पोस्टर लगाये जा सकते हैं।

वैसे, हम आपको याद दिला दें कि ऐसे ही पोस्टर तब भी सामने आये थे जब कोरोना की दूसरी लहर के दौरान भारत वैक्सीन मैत्री अभियान के तहत अन्य देशों को भी कोरोनारोधी वैक्सीन मुहैया करा रहा था। तब दिल्ली में प्रधानमंत्री के खिलाफ अमर्यादित बातें कहते हुए पोस्टर लगाये गये थे। उस समय भी और इस समय भी, दोनों ही बार इसके पीछे आम आदमी पार्टी का हाथ माना गया। रिपोर्टों के मुताबिक, दिल्ली पुलिस ने तो कहा भी है कि कम से कम 2,000 पोस्टर हटाए गए और आईपी एस्टेट में एक वैन से उस समय इतनी ही संख्या में पोस्टर जब्त किए गए थे, जब वह आम आदमी पार्टी के मुख्यालय से निकल रही थी। वैन को जब्त कर लिया गया है और मामले में दो प्रिंटिंग प्रेस के मालिकों सहित छह लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

यहां सवाल उठता है कि यदि आम आदमी पार्टी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विरोध करना ही है तो मोदी विरोधी पोस्टरों में वह अपना नाम लिखने से घबरा क्यों रही है? आम आदमी पार्टी ने यदि पोस्टर लगवाये हैं तो उसमें अपना नाम नहीं देकर उसने खुद को राजनीतिक रूप से डरपोक भी साबित कर दिया है। इस मामले में आम आदमी पार्टी का साथ दे रही कांग्रेस से भी सवाल पूछा जाना चाहिए कि अराजक तत्वों का साथ देने की उसकी क्या मजबूरी है? हम आपको बता दें कि पोस्टर छपवाने का जो नियम है उसके तहत उसे छपवाने वाले का नाम और पोस्टर को छापने वाली प्रिंटिंग प्रेस का पूरा पता भी उसमें होना चाहिए। लेकिन दिल्ली में लगे पोस्टरों में इस नियम की अनदेखी की गयी। ऐसे में दिल्ली पुलिस यदि एफआईआर कर रही है तो उसमें क्या गलत है?

हम आपको याद दिला दें कि ऐसे ही पोस्टर तब भी सामने आये थे जब कोरोना की दूसरी लहर के दौरान भारत वैक्सीन मैत्री अभियान के तहत अन्य देशों को भी कोरोना रोधी वैक्सीन मुहैया करा रहा था। तब दिल्ली में प्रधानमंत्री के खिलाफ अमर्यादित बातें कहते हुए पोस्टर लगाये गये थे।

बहरहाल, जी-20 की अध्यक्षता कर रहे भारत की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली इस समय अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों का केंद्र बनी हुई है। ऐसे में सरकार के साथ ही सभी राजनीतिक दलों और जनता का प्रयास रहना चाहिए कि देश के विभिन्न भागों में हो रही जी20 की बैठकों के लिए जो विदेशी मेहमान दिल्ली आ रहे हैं या दिल्ली के रास्ते अन्य शहरों की ओर जा रहे हैं वह भारत की एक सशक्त और संपन्न देश की छवि अपने मन में लेकर जायें। देश के प्रधानमंत्री के खिलाफ पोस्टरबाजी से अच्छा संदेश नहीं जाता। यदि सरकार की किसी नीति के प्रति विरोध करना है तो लोकतंत्र में उसके लिए जो स्वीकार्य तरीके हैं उनका उपयोग किया जाना चाहिए। ■

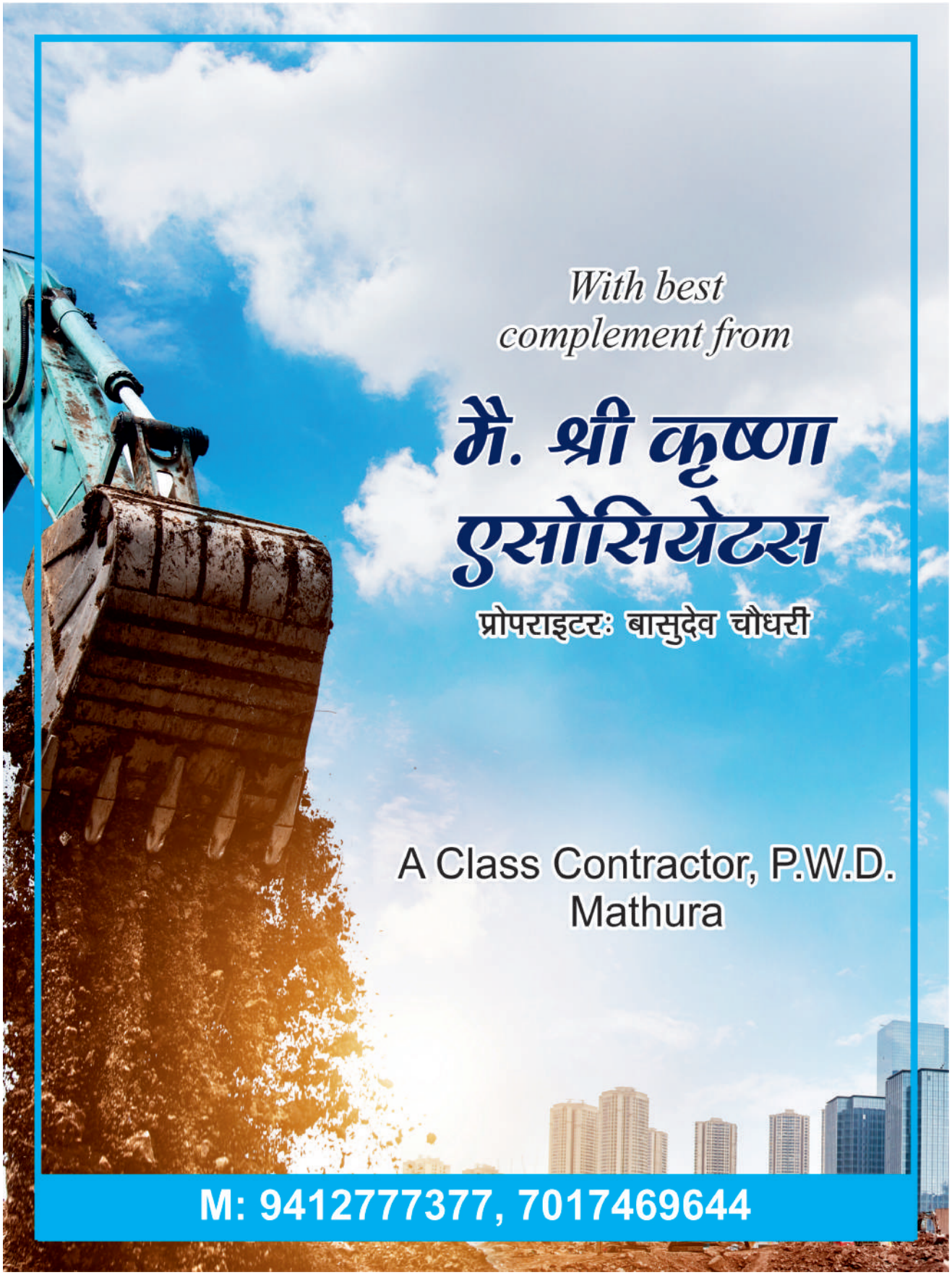
With best
complement from
मै. श्री कृष्णा
एसोसियेटस
प्रोपराइटरः बासुदेव चौधरी
A Class Contractor, P.W.D.
Mathura
M: 9412777377, 7017469644

कांग्रेस की कमान एक गैर गांधी नेता के हाथों में जाने के बाद भी ऐसा लगता नहीं है कि कांग्रेस के भीतर कुछ बदला है। आज भी कांग्रेस की सियासत गांधी परिवार के ही इर्दगिर्द घूम रही है। राहुल गांधी ही कांग्रेस का फेस बने हुए हैं। वहीं कांग्रेस के नये अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, गांधी परिवार के यस मैन से अधिक नजर नहीं आ रहे हैं। यदि यह कहा जाए कि गांधी परिवार ने पार्टी पर अपना वर्चस्व बनाये रखने और कांग्रेस की असफलता का ठीकरा खड़गे पर फोड़ने के लिए उनके (खड़गे) कंधों का सहारा लिया है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

भारत जोड़ो यात्रा से राहुल गांधी ने जो कुछ कमाया था

उसे लंदन में गंवा दिया

राहुल गांधी लोकसभा तक को अपनी सियासत का अखाड़ा बनाने से नहीं चूकते हैं, एक तो राहुल गांधी लोकसभा में आते ही बहुत कम हैं और आते भी हैं तो वह लोकसभा के भीतर गुरिल्ला शैली में इंट्री करते हैं और अपनी बात कहकर नौ-दो ग्यारह हो जाते हैं।

अजय कुमार

खड़गे और उनकी टीम का अधिकांश समय गांधी परिवार उसमें भी राहुल गांधी के बचाव में गुजर जाता है। यह वह नेता हैं जो अपनी सियासत को बचाए रखने के लिए कांग्रेस को गर्त में झोंक देने से भी परहेज नहीं करते हैं। वहीं राहुल गांधी एक के बाद एक विवाद पैदा करते जाते हैं। उनकी बचकानी हरकतें थमने का नाम ही नहीं लेती हैं। यही वजह है राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से जो कुछ कमाया था उसे उन्होंने ब्रिटेन में विवादित बयान देकर गंवा दिया। बयान भी ऐसा वैसा नहीं। वह बाहरी ताकतों से हिन्दुस्तान के लोकतंत्र को बचाने की फरियाद कर रहे हैं। देश की संवैधानिक संस्थाओं पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करना, उद्योगपतियों का अपमान करना, संसद और स्पीकर की विश्वसनीयता पर संदेह पैदा करना, देश के महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों को बार-बार अपमानित करना, विरोधियों को अनाप-शनाप तरीके से आरोपी बनाना, चीन जो हमेशा भारत को आंखें दिखाता है उसका महिमामंडन करना राहुल गांधी का शगल बन गया है।

राहुल गांधी लोकसभा तक को अपनी सियासत का अखाड़ा बनाने से नहीं चूकते हैं, एक तो राहुल गांधी लोकसभा में आते ही बहुत कम हैं और आते भी हैं तो वह लोकसभा के भीतर गुरिल्ला शैली में इंट्री करते हैं और अपनी बात कहकर नौ-दो ग्यारह हो जाते हैं।

वह यहां तक आरोप लगाते हैं कि लोकसभा में उन्हें बोलने नहीं दिया जाता है, जबकि सच्चाई यह है कि राहुल गांधी किसी भी विषय पर पांच-दस मिनट गंभीरता से बोलने की कूवत ही नहीं रखते हैं। इसीलिए वह अपनी भड़ास देश के बाहर जाकर निकालते हैं। अब तो कांग्रेस में यह चलन बन गया है कि जब भी लोकसभा का सत्र शुरू होता है, किसी न किसी मुद्दे पर हंगामा खड़ा करके संसद नहीं चलने देते हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव के समय राहुल गांधी राफेल फाइटर विमान खरीद में भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए मोदी के खिलाफ चौकीदार चोर है का नारा दे रहे थे तो 2024 के चुनाव आते-आते इसे उद्योगपति अडानी और मोदी से जोड़ कर मोदी को चोर बता रहे हैं। मर्यादा तो तब तार-तार हो गई, जब राहुल गांधी ने ब्रिटेन दौरे पर वही पुराना बेसुरा राग छेड़ा कि भारत में लोकतंत्र खत्म हो रहा है। उन्होंने पश्चिमी देशों से भारत में लोकतंत्र की कथित बहाली को लेकर हस्तक्षेप करने तक का अनुरोध कर दिया। वह यह भूल गए कि जिस ब्रिटेन में वह भारत की बदनामी कर रहे थे उसी ब्रिटेन ने आजादी से पहले भारतवासियों के साथ जानवरों से भी बुरा सलूक किया था। स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर को दस वर्ष से अधिक तक काल कठोरी में रखा गया, उन्हें कोल्हू में बैल की जगह जोता जाता था। क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राज मंगल पाण्डेय जैसे तमाम आजादी के मतवालों को मौत के घाट उतार दिया गया। उसी ब्रिटेन और अन्य विदेशी ताकतों से राहुल गांधी हिन्दुस्तान के लोकतंत्र को बचाने की नौटंकी कर रहे हैं जो पूरी तरह से भारत के आंतरिक मामलों में दखल दें।

बकौल राहुल गांधी, भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, यहां लोकतंत्र पर आघात का असर पूरी दुनिया पर पड़ेगा। कितनी हैरानी की बात है कि जिस पार्टी ने भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, उसी पार्टी का एक नेता ब्रिटेन, अमेरिका और अन्य यूरोप देशों से भारत के अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप का अनुरोध कर रहे हैं। बड़ी विडंबना यह है कि यह सब स्वतंत्रता के अमृतकाल में हो रहा है और यह सब वह शख्स कर रहा है जो कांग्रेस की मनमोहन सरकार के समय संसद से पास बिल को फाड़ देता है। पाकिस्तान द्वारा भारत के खिलाफ चलाये जा रहे आतंकवाद और उसके आतंकवादियों के द्वारा किए गए बम धमाकों से हुई हमारे जवानों की मौतों को इसके द्वारा बम धमाके में हुई मौत बताया जाता है। हिन्दुस्तानी सेना जब पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक करती है तो राहुल और उनके करीबियों द्वारा इसके सबूत मांगे जाते हैं। कांग्रेस के ही एक पीएम कहते हैं देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है। स्वयं घोटाले के आरोप में बेल पर बाहर घूम रहे राहुल गांधी को चीन की विस्तारवादी नीति काफी रास आती है। वह चीन की कम्युनिस्ट सरकार की शान में कसीदे पढ़ते हैं। उसके नेताओं से चुपके-चुपके मिलते हैं। इस बात पर किसी को एतराज नहीं है कि राहुल गांधी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बड़े आलोचक बन गए हैं, लेकिन जब संघ और मोदी की आड़ में देश से खिलाफत करेंगे तो उनसे सवाल तो पूछा ही जाएगा और माफी मांगने को भी कहा जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति उनकी घृणा उनके भाषणों में सामान्य रूप से ध्वनित होती है। इसमें अक्सर वह ऐसा कह जाते हैं, जिसका सच से कोसों नाता नहीं होता। उनके सिलसिलेवार झूठ के तमाम उदाहरण हैं। वह बिना किसी सबूत के झूठ पर झूठ बोलते रहते हैं और गांधी परिवार की चाटुकारिता करने वाले नेता उनकी सही-गलत बात पर वाहवाही करते और ताल ठोंकते रहते हैं। राहुल कहते हैं जीएसटी को बिना बहस के पारित कर दिया गया। शायद उन्हें पता ही नहीं कि जीएसटी का विचार सबसे पहले यूपीए की सरकार ने ही रखा था। इसी प्रकार नोटबंदी पर वह हंगाम मचाते हैं जबकि नोटबंदी के बाद 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में जनता ने बीजेपी को बड़े अंतर से जिताया था। जबकि संसद ने 101वें संविधान संशोधन के माध्यम से जीएसटी पर मुहर लगाई थी।

स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक देश में कायम रहे कांग्रेस राज में नेहरू-गांधी परिवार की अलोकतांत्रिक गतिविधियों की लंबी सूची है। इसकी शुरूआत जवाहरलाल नेहरू के दौर से ही शुरू हो गई थी, जिन्होंने संविधान के प्रथम संशोधन के माध्यम से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर युक्तियुक्त निर्बंधन लागू किए। तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष इंदिरा गांधी के सुझाव पर नेहरू ने 1959 में केरल की कम्युनिस्ट सरकार को अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग से हटाकर राष्ट्रपति शासन लगाया। इसमें दूसरे दलों के उभार से अप्रसन्नता का भाव निहित था। इंदिरा गांधी ने आपातकाल की तानाशाही में राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को कैद कराया। संसद और न्यायपालिका को बंधक बनाया। जबरन नसबंदी का आक्रामक अभियान चलाया, जिसमें मुख्य रूप से मुस्लिम समुदाय को निशाना बनाया। जब राजीव गांधी का नाम बोफोर्स घोटाले में आया तो मीडिया की आवाज दबाने के लिए वह 1988 में एक दमनकारी कानून लेकर आए। ऐसे अलोकतांत्रिक कृत्यों की सूची अंतहीन है। ऐसे में कांग्रेस के किसी नेता विशेषकर गांधी परिवार के सदस्य को यह शोभा नहीं देता कि वह लोकतंत्र की विशेषताओं को लेकर कोई उपदेश दे। दरअसल, राहुल गांधी की समझ लगातार देश विरोधी बनती जा रही है। वह विदेश में जाकर देश को हिन्दू आतंकवाद से खतरा बताते हैं। यूपीए की मनमोहन सरकार रामसेतु और भगवान राम के अस्तित्व को नकारती है तब राहुल चुप रहते हैं। राहुल के अनुसार आरएसएस एक गुप्त संगठन है जो लोकतंत्र के अवमूल्यन में लगा है। वह भूल जाते हैं कि पंडित जवाहरलाल नेहरू तक संघ के समाजिक कार्यों की तारीफ कर चुके हैं। राहुल के लिए यह याद रखना भी आवश्यक है कि उनकी दादी और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल के रूप में जो फासीवादी शासन थोपा था, उसमें संघ के 3,254 लोग जेल गए थे। आंकड़ों के अनुसार सबसे अधिक 772 नेता जनसंघ के कैद किए गए थे। उन्हें उत्पीड़नकारी कानून मीसा के अंतर्गत कैद किया गया था। ऐसे में सवाल उठता है कि देश में असली फासीवादी कौन है? राहुल का दावा है कि संसद में विपक्षी सांसदों की आवाज दबाई जा रही है और सरकार की आलोचना पर सांसदों के माइक बंद कर दिए जाते हैं। यह दावा नितांत निराधार है। पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च के अनुसार, गत वर्ष शीत सत्र में राहुल की उपस्थिति नगण्य थी। इस बजट सत्र में उनकी उपस्थिति सुधरने के बाद मात्र 40 प्रतिशत हुई है। पिछले साल वह संसद में केवल एक बार बोले। उनका एक दावा यह भी है कि मोदी सरकार उनके फोन टैप करा रही है और उनकी सरकार में ऐसा नहीं होता था। यह दावा ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जा रहा है, जिनके परिवार के शासन में मलय कृष्ण धर सहित आइबी के तमाम अधिकारियों ने फोन टैपिंग और अन्य शरारतपूर्ण गतिविधियों के साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। मोदी और सिखों को लेकर उनका प्रलाप इन सभी झूठों से भी बदतर है। कैंब्रिज में उन्होंने कहा कि मोदी देश को बांट रहे हैं। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित एक सिख की ओर संकेत करते हुए कहा कि मोदी की नजरों में अल्पसंख्यक दोयम दर्जे के नागरिक हैं। यह न केवल भ्रामक, बल्कि छल-कपट से भी ओतप्रोत है। यह विभिन्न वर्गों में विभाजनकारी प्रवृत्ति को भड़काने का प्रयास है, जिसकी कड़ी निंदा होनी चाहिए। राहुल भले ही लोकतंत्र के प्रति अपनी पार्टी की संदिग्ध प्रतिबद्धताओं को अनदेखा करने का प्रयास करें, लेकिन उनके पास ऐसी कोई जादू की छड़ी नहीं जिससे वह देश के करोड़ों लोगों को अतीत की बातें भुलाने में सफल हो जाएं।

भारत के आंतरिक मामलों में दखल से जुड़ी राहुल गांधी की विनती सुनकर डॉ. बीआर आंबेडकर की दूरदर्शिता याद आती है। आंबेडकर ने राष्ट्र और भावी पीढ़ियों को विश्वासघात के परिणामों को लेकर आगाह किया था। उन्होंने कहा था कि यह बात मुझे बहुत कचोटती है कि भारत ने पूर्व में न केवल अपनी स्वतंत्रता गंवाई, बल्कि यह स्वतंत्रता अपने ही कुछ लोगों के विश्वासघात और छल-कपट के कारण छिनी। राहुल गांधी और उनके चाटुकार जिस तरह की सियासत कर रहे हैं उससे न देश का भला हो रहा है, न ही कांग्रेस को कोई फायदा मिल रहा है। ऐसे में कांग्रेस के लिए यही कहा जाएगा, बर्बाद गुलिस्ता करने को एक ही उल्लू काफी है, हर शाख पर उल्लू बैठा है अंजाम गुलिस्ता क्या होगा। ■

राहुल पर कानून का दोहरा हंटर

सजा मिली, सदस्यता गई, हंगामा जारी

कांग्रेसियों के लिए गांधी सरनेम कितना महत्व रखता है यह बात एक बार फिर गुजरात की सूरत कोर्ट में राहुल गांधी के खिलाफ एक मानहानि केस में उन्हें दो साल की सजा सुनाए जाने के फैसले के बाद साबित हो गई है। सेशन कोर्ट के फैसले के बाद कांग्रेसी राहुल की वफादारी में हर संवैधानिक संस्था की विश्वसनीयता को तार-तार करने में लगे हैं। यहां तक कि मनमोहन सरकार के समय में बने कानून की भी धज्जियां उड़ाने में पीछे नहीं हैं। 2013 में कांग्रेस की गठबंधन वाली मनमोहन सरकार सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले के बाद एक अध्यादेश लाई थी, जिसे बाद में राहुल गांधी के दबाव में आकर कानूनी रूप नहीं दिया दिया जा सका था, लेकिन आज उसी की आग में जब राहुल गांधी स्वयं झुलसने लगे तो उसके लिए भी उन्होंने मोदी सरकार की तो बात ही दूसरी है अदालतों तक को कोसना काटना शुरू कर दिया हैं।

संजय सक्सेना

बता दें कांग्रेस की मनमोहन सरकार के समय कानून बन रहा था कि यदि किसी नेता को कोर्ट से पांच साल से कम की सजा सुनाई जाती है तो उसकी लोकसभा या विधानसभा के सदस्या समाप्त नहीं होगी, लेकिन राहुल गांधी का चेहरा चमकाने के लिए मनमोहन सरकार ने इसे रद्द कर दिया था, जिस कारण दो साल की सजा पर सदस्यता समाप्त होने का प्रावधान जारी रहा। आज जब यह इस कानून की जद में राहुल गांधी आए तो कांग्रेसियों ने चाटुकारिता की सारी हदें पार करते हुए देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को भी पीछे छोड़ दिया। हर तरफ हो-हल्ला किया जा रहा है। दिल्ली से लेकर लखनऊ और अन्य राज्यों में भी बेवजह का हंगामा खड़ा किया जा रहा है।

कुल मिलाकर जो राजनैतिक हालात बन रहे हैं उससे लगता है कि कांग्रेस को 2024 का ही नहीं 2029 लोकसभा चुनाव भी राहुल गांधी विहीन होकर लड़ना पड़ सकता है। इससे कांग्रेस बच सकती थी यदि राहुल गांधी मानहानि केस में माफी मांग लेते, लेकिन उनके सलाहकारो ने उन्होंने ऐसा करने नहीं दिया। संभवतः राहुल गांधी को कोट पर जनेऊ पहनाने वाले उनके करीबी कथित हिंदुओं को इस बात का एहसास ही नहीं होगा कि हिंदू समाज और सनातन धर्म में माफी मांगना कोई बुराई नहीं है। बल्कि इससे व्यक्ति की महानता ही नजर आती है। कई बार, कई मौकों पर देश के बड़े-बड़े नेता भी किसी ना किसी बात पर माफी मांग चुके हैं, फिर यहां तो एक समुदाय के अपमान का मामला राहुल गांधी के बयान से जुड़ा हुआ था। राहुल गांधी को सजा के बाद कांग्रेस हाय तौबा मचा रही है और यह सिलसिला थमने वाला भी नहीं लगता है लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि उनके साथ वह नेता भी खड़े हो गए जो कल तक राहुल के विरोध में उतरे हुए थे। हो सकता है इनमें से कई नेताओं की अपनी राजनीतिक मजबूरी हो क्योंकि राहुल के साथ खड़े कई गैर कांग्रेसी नेताओं पर भी भ्रष्टाचार के चलते गिरफ्तारी की तलवार लटक रही है। संभवत ऐसे ही नेता राहुल गांधी के कंधे पर अपनी बंदूक रखकर मोदी सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से अपना सियासी हिसाब-किताब बराबर कर लेना चाहते हों।

हाल यह है कि गांधी परिवार के चाटुकारों ने गांधी परिवार का महिमा मंडन के चक्कर में देश को भी पीछे छोड़ दिया है। पंडित जवाहरलाल नेहरु उसके बाद इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, सोनिया गांधी और अब राहुल गांधी के कर्मों पर कांग्रेसी पर्दा डालने में लगे हैं, उससे तो यही लगता है कि कथित गांधी परिवार कांग्रेसियों के लिए जरूरी भी है, मजबूरी भी है। जो कांग्रेसी नेता ऐसा नहीं कर पाए उन्हें बाहर का रास्ता दिखाने में भी गुरेज नहीं किया जाता है। आज गांधी परिवार के साथ खड़े नजर आ

बात राहुल गांधी की की जाए तो राहुल गांधी के सलाहकार हैं, जिस तरह की सलाहें देकर उनसे जैसे बयान उनसे दिलवा रहे हैं, उससे देश में एक संदेश जरूर जा रहा है कि राहुल परिपक्व राजनेता नहीं हैं। भारत में लोकतंत्र को कुचले जाने का बयान वह ब्रिटेन में दे ही चुके हैं। लगे हाथों वह ब्रिटेन और अमेरिका से भारत में लोकतंत्र का गला घोंटे जाने पर ध्यान देने की बात भी कर चुके हैं। इस पर उठे बवंडर के बीच उनके बड़े से बड़े समर्थक के लिए उनका बचाव कर पाना संभव नहीं हो पा रहा है। पार्टी के नेताओं की भी किरकिरी हो रही है।

रहे शरद पवार इसकी जिंदा मिसाल हैं, लेकिन यह बात और है कि आज वह राहुल के साथ खड़े हुए हैं। अभी कांग्रेस परिवार के सदस्य और सांसद राहुल गांधी के लंदन में भारत विरोधी दिए गए बयान पर माफी मांगने का मामला ठंडा भी नहीं हुआ था, अब चार साल पुराने मानहानि के एक मामले में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को गुजरात की सूरत जिला अदालत ने सजा सुना दी है। ये मामला मोदी सरनेम पर की गई विवादित टिप्पणी का है। दरअसल, 2019 में लोकसभा चुनाव से पहले राहुल गांधी ने कर्नाटक के कोलार में एक रैली के दौरान कहा था,नीरव मोदी, ललित मोदी, नरेंद्र मोदी का सरनेम एक ही क्यों है? सभी चोरों का सरनेम मोदी क्यों होता है? राहुल की इस टिप्पणी को लेकर भाजपा विधायक और गुजरात के पूर्व मंत्री पूर्णेश मोदी ने शिकायत दर्ज कराई थी। राहुल के खिलाफ आपराधिक मानहानि का मुकदमा दर्ज हुआ। बीजेपी नेता का कहना था कि राहुल गांधी ने इस टिप्पणी से पूरे मोदी समुदाय को बदनाम किया। सूरत कोर्ट ने पहले राहुल से पूछा कि क्या वह मांफी मांगेंगे तो उन्होंने कह दिया कि यह मामला माफी मांगने का नहीं है। इसके बाद कोर्ट ने राहुल को दोषी करार देते हुए उन्हें दो साल की सजा सुना दी। हालांकि, अदालत से उन्हें जमानत भी मिल गई है। अदालत ने राहुल को आईपीसी की धारा 499 और 500 के तहत दोषी करार दिया था, लेकिन उनको ऊपरी अदालत में अपील के लिए जमानत भी दे दी गई। राहुल को सजा सुनाते ही यह भी तय हो गया था कि आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस इसको बड़ा मुद्दा बनाएगी, उस पर लोकसभा के स्पीकर ने राहुल की लोकसभा की सदस्यता खत्म करके कांग्रेस के गुस्से को और भी बढ़ा दिया है, जबकि राहुल को इस मामले को सियासी जामा नहीं पहनाना होता तो राहुल कोर्ट में माफी मांग कर बच सकते थे, जैसा वह पहले कर चुके हैं, लेकिन इस बार उन्होंने ऐसा नहीं किया यानी कांग्रेस ने इस फैसले को सियासी मसला बनाने का मन बना लिया है जिसकी तैयारी भी शुरू हो गई है। इसी लिए गुजरात की सूरत कोर्ट द्वारा जब राहुल गांधी को सजा सुनाई जा रही थी, तब ही कांग्रेसी राहुल के पक्ष में बाहर प्रदर्शन कर रहे थे। राहुल को सजा सुनाए जाने को लेकर प्रियंका वाड्रा सहित पूरी कांग्रेस एक्टिव मूड में आ गई है। राहुल को सजा पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। प्रियंका द्वारा कहा जा रहा है कि वह डरने वाले नहीं हैं। प्रियंका के इस बयान को चोरी और उस पर सीनाजोरी ही कहा जाएगा। यानी अदालत के फैसलों पर से भी कांग्रेस का विश्वास उठता जा रहा है, जो एक गंभीर मसला है। सबसे खास बात यह है कि राहुल को सजा सुनाए जाने के चलते बीजेपी विरोधी नेता भी राहुल गांधी के साथ खड़े नजर आ रहे हैं जो हाल फिलहाल तक राहुल गांधी से दूरी बनाकर रखते थे, इसमें अरविंद केजरीवाल, अखिलेश यादव जैसे तमाम नेता शामिल हैं।

खैर, मोदी-राहुल के बीच की रार से किसको फायदा, किसे नुकसान हुआ पर चर्चा की जाए तो इस जंग का वैसे तो बीजेपी ने खूब फायदा उठाया, कांग्रेस को इसके विपरीत परिणाम झेलने पड़े। कांग्रेस इस समय अपने इतिहास के सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। उसके सांसदों की सख्या दहाई में सिमट कर रह गई है। वहीं भारतीय जनता पार्टी पूरे उत्थान पर हैं। सबसे खास बात यह है कि मोदी-राहुल की जंग में इनकी पार्टियां भी कंधे से कंधा मिलाकर साथ चल रही हैं। दोनों दलों के दिग्गज नेता प्रेस कांफ्रेंस और ट्वीट के माध्यम से एक-दूसरे पर लगातार आरोप लगाते रहते हैं। याद कीजिए आज जिस तरह से राहुल गाँधी, मोदी और अडाणी के बीच भ्रष्टाचार का आरोप लगा रहे वैसा ही आरोप 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले उन्होंने राफेल विमान खरीद में दलाली भ्रष्टाचार को लेकर मोदी पर लगाया था और चौकीदार चोर है का नारा दिया था। कांग्रेस ने एक तरह से 2019 का लोकसभा चुनाव राहुल गांधी की अगुवाई में चौकीदार चोर है के नारे पर ही लड़ा था, लेकिन उसे चुनाव में मुंह की खानी पड़ी थी अब अडानी के मामले में आरोप लगाया जा रहा है।

इसमें राहुल को कितनी सफलता मिलेगी यह 2024 के लोकसभा चुनाव के नतीजों से पता चलेगा। वैसे यहां यह याद दिलाना भी जरूरी है कि राहुल गांधी ने एक बार अपने विश्वासपात्र मित्रों के बीच कहा भी था कि मोदी को हराने के लिए उनकी ईमानदार नेता वाली इमेज को तोड़ दिया जाए तो कांग्रेस के लिए किसी भी चुनाव में जीत की राह आसान हो सकती है। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी दिक्कत है कि वह बीजेपी और मोदी को अपनी ओर से तैयार की गई सियासी पिच पर बैटिंग करने को मजबूर नहीं कर पा रहे हैं। पिछले दो आम चुनावों में बीजेपी ने अपने मनमाफिक पिच तैयार की। चुनावी जंग को मोदी बनाम अन्य के रूप में बदला और इस युद्ध में विजेता बनकर उभरी। दोनों ही बार मोदी बनाम अन्य में पीएम नरेंद्र मोदी के खिलाफ विपक्ष का प्रमुख चेहरा राहुल गांधी रहे। 2024 के आम चुनावों में बीजेपी एक बार फिर मोदी बनाम राहुल की पिच पर ही बैटिंग करने की कोशिश में है, लेकिन विपक्षी दल बीजेपी की इस कोशिश को समझ रहे हैं।

बात राहुल गांधी की कि जाए तो राहुल गांधी के सलाहकार, जिस तरह की सलाहें देकर उनसे जैसे बयान उनसे दिलवा रहे हैं, उससे देश में एक संदेश जरूर जा रहा है कि राहुल परिपक्व राजनेता नहीं हैं। भारत में लोकतंत्र को कुचले जाने का बयान वह ब्रिटेन में दे ही चुके हैं। लगे हाथों वह ब्रिटेन और अमेरिका से भारत में लोकतंत्र का गला घोटे जाने पर ध्यान देने की बात भी कर चुके हैं। इस पर उठे बवंडर के बीच उनके बड़े से बड़े समर्थक के लिए उनका बचाव कर पाना संभव नहीं हो पा रहा है। पार्टी के नेताओं की भी किरकिरी हो रही है।

एक तरफ मोदी और राहुल के बीच जुबानी जंग चल रही है तो दूसरी ओर गैर कांग्रेसी दलों के बीजेपी विरोधी नेता इसे बीजेपी की सियासी साजिश बता रहे हैं। इन नेताओं को लगता है कि भारतीय जनता पार्टी का शीर्ष नेतृत्व 2024 के लोकसभा चुनाव को मोदी बनाम राहुल बना करके चुनावी बढ़त बनाने की रणनीति बना रहा है। तृणमूल कांग्रेस के अध्यक्ष और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी तो यहां तक कहती हैं कि राहुल के जरिए बीजेपी, मोदी की टीआरपी बढ़ा रही है। लोकसभा चुनाव अगर मोदी बनाम राहुल के बीच फंस जाता है तो इसका भरपूर फायदा भारतीय जनता पार्टी को मिलेगी और उसकी सत्ता में पुनः वापसी हो जाएगी, क्योंकि आज की तारीख में मोदी के सामने राहुल गांधी कहीं टिकते नहीं है। राहुल का बड़बोलापन बीजेपी के लिए प्लस प्वाइंट साबित हो रहा है। राहुल गांधी जितना बोलते हैं, उतना बीजेपी को फायदा होता है। बीते दिनों तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी और समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव की कोलकता में मुलाकात हुई थी। अखिलेश ने अबकी कोलकता में समाजवादी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी

की बैठक बुलाई थी। जहां वह ममता बनर्जी से भी मिले थे और गैर कांग्रेसी-गैर बीजेपी के तीसरा मोर्चा बनाने की ममता से चर्चा की थी। इसी दौरान ममता ने राहुल गांधी को निशाने पर लेते हुए कहा था कि अगर राहुल विपक्ष का चेहरा हैं तो फिर कोई भी नरेन्द्र मोदी को खराब नहीं कह पाएगा। उन्होंने यह भी जोड़ा कि राहुल गांधी, मोदी की सबसे बड़ी टीआरपी हैं। इन दिनों जब भाजपा इस बात पर जोर दे रही है कि राहुल गांधी लंदन वाले अपने बयान के लिए माफी मांगे तब कांग्रेस यह बताने में लगी हुई है कि वह सावरकर नहीं हैं। सावरकर को कोसना राहुल गांधी का प्रिय शगल है, लेकिन इसमें संदेह है कि वह अपने इस शगल से एक परिपक्व नेता के तौर पर अपनी छवि स्थापित करने में समर्थ हो जाएंगे। वास्तव में वह अपनी ऐसी छवि बना ही नहीं पा रहे हैं और इसीलिए वे विपक्ष की ताकत नहीं बन पा रहे हैं। कांग्रेस के लिए यह कहना मजबूरी हो सकती है कि राहुल भविष्य के नेता हैं, लेकिन विपक्ष ऐसा कुछ कहना जरूरी नहीं समझ रहा। भारत जोड़ो यात्रा में राहुल की भागीदारी को लेकर चाहे जितनी प्रशंसा की जाए, इस यात्रा के समाप्त होने के बाद के घटनाक्रम ने उनकी छवि को वैसा ही बना दिया है, जैसी इस यात्रा के पहले थी। अपनी इस छवि के साथ वह कांग्रेस के सर्वोच्च नेता बने रह सकते हैं, लेकिन विपक्ष के नहीं बन सकते। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि एक-एक करके विपक्षी नेता इसी निष्कर्ष पर पहुंचते जा रहे हैं। ममता बनर्जी ने कहीं ना कहीं कांग्रेस को आईना दिखाया लेकिन कांग्रेस यह बात समझने की जगह ममता पर हमलावर हो गई है। बंगाल कांग्रेस अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी ने ममता पर पलटवार करते हुए यह कह दिया कि प्रधानमंत्री मोदी और उनके बीच राहुल को बदनाम करने के लिए समझौता हुआ है। उनकी मानें तो ममता बनर्जी स्वयं को ईडी और सीबीआई की कार्रवाई से बचाना चाहती हैं, इसलिए कांग्रेस के खिलाफ हो गई हैं। इस आरोप-प्रत्यारोप से यदि कुछ स्पष्ट है तो यही कि कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस करीब नहीं आने वालीं। भले ही आज वह राहुल की लोकसभा सदस्यता जाने के मामले में कांग्रेस के साथ खड़ी नजर आ रही हों लब्बोलुआब यह है कि भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस या यूं कहे मोदी और राहुल के बीच इस समय सियासी घमासान छिड़ा हुआ है। इस घमासान की नित्य नई स्क्रिप्ट लिखी जाती है। दोनों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का जो दौर चल रहा है, वह वर्षों बाद भी थमने का नाम नहीं ले रहा है। मोदी-राहुल के बीच कटाक्ष और आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला 2014 के लोकसभा चुनाव के कुछ समय बाद शुरू हुआ था और दस वर्षों के बाद 2024 के चुनाव करीब आने तक जारी है। अब तो यह लड़ाई संसद तक में पहुंच चुकी है। राहुल गांधी के विदेश में दिए गए कुछ विवादित बयानों को आधार बनाकर बीजेपी उन पर न केवल हमलावर है,बल्कि राहुल से संसद में माफी की मांग करते हुए सत्ता पक्ष संसद की कार्रवाई भी नहीं चलने दे रहा है, इसके उलट कांग्रेस मोदी-अडाणी पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाकर इसकी जांच के लिए संयुक्त संसदीय कमेटी बनाए जाने को लेकर अड़ी हुई है। यही वजह है 13 मार्च से शुरू हुए बजट सत्र कामकाज बिलकुल ठप्प पड़ा है। इस सत्र में आम बजट पर चर्चा और उसे पारित करवाने समेत कुछ अहम सरकारी काम निपटाने होते हैं। संसदीय इतिहास में संभवता कई ही ऐसे मौके आये होंगे जब विपक्ष नहीं, सत्ता पक्ष सदन नहीं चलने दे रहा है, वह भी एक सांसद से माफी की मांग को लेकर, क्योंकि इस समय कांग्रेस में राहुल गांधी की हैसियत एक सांसद से अधिक कुछ नहीं है। बीजेपी की इस चुनावी रणनीति में राहुल को सूरत कोर्ट से मिली दो साल की सजा का भी तड़का लगना तय है। बीजेपी इसके सहारे राहुल गांधी के खिलाफ लगातार हमलावर रहेगी। बीजेपी, राहुल गांधी को मिली सजा को ओबीसी समाज की विजय बता रही है और कहा जा रहा है राहुल गांधी ने पिछड़ा समाज का अपमान किया है। ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

चुनाव करीब आते ही मेनका और वरूण गांधी के सुर भाजपा के प्रति बदलने क्यों लगे हैं?

मेनका गांधी और वरूण गांधी को भारतीय जनता पार्टी में उनकी काबलियत को देखते हुए इंट्री या तवज्जो नहीं दी गई थी, बल्कि बीजेपी में इनको आगे बढ़ाने की वजह इन दोनों नेताओं का गांधी परिवार से जुड़ा होना था।

विनय कुमार

भारतीय जनता पार्टी में इस समय गांधी परिवार के दो सदस्यों मेनका गांधी और वरूण गांधी की काफी चर्चा हो रही है। दोनों लम्बे समय से बीजेपी में हैं और जनता की कसौटी पर खरा उतरते हुए चुनाव भी जीतते रहे हैं। मेनका गांधी सुलतानपुर से तो वरूण गांधी पीलीभीत से सांसद हैं। यह लोग यूपी से तब से सांसद चुने जाते रहे हैं, जब बीजेपी की स्थिति यहां (यूपी में) ज्यादा अच्छी नहीं हुआ करती थी। मोदी का तो केन्द्र की राजनीति में उदय तक नहीं हुआ था। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि मेनका-वरूण गांधी द्वारा अन्य लोकसभा उम्मीदवारों की तरह चुनाव जीतने के लिए मोदी के नाम का कोई खास सहारा लिया जाता है। दोनों की अपने-अपने संसदीय क्षेत्र में अच्छी पकड़ है, लेकिन जब इन नेताओं की बीजेपी के प्रति वफादारी की बात होती है तो यह इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते हैं। इसकी कोई बहुत बड़ी वजह नहीं है, लेकिन जो वजह है उसे अनदेखा भी नहीं किया जा सकता है। इस बात का अहसास मेनका और वरूण गांधी को भी है। दरअसल, मेनका और वरूण गांधी को भारतीय जनता पार्टी में उनकी काबलियत को देखते हुए इंट्री या तवज्जो नहीं दी गई थी, बल्कि बीजेपी में इनको आगे बढ़ाने की वजह इन दोनों नेताओं का गांधी परिवार से जुड़ा होना था। यह जगजाहिर था कि मेनका गांधी और सोनिया गांधी में हमेशा छत्तीस का आंकड़ा रहता था। बीजेपी को उम्मीद थी कि मेनका और वरूण गांधी को आगे करके वह देश की सियासत में दूसरे गांधी परिवार (सोनिया और राहुल गांधी) की जड़ें कमजोर कर सकेंगे, जिनके सहारे कांग्रेस न केवल इतराया करती है बल्कि गांधी परिवार के सहारे कांग्रेस चुनावी वैतरणी भी पार करने में सफल होती रहती है। कुल मिलाकर बीजेपी ने गांधी बनाम गांधी का खाका खींच रखा था, जिसे वह (बीजेपी) मेनका-वरूण गांधी के सहारे सियासी धरातल पर उतारना चाहती थी, लेकिन मेनका और खासकर वरूण गांधी थे कि चुनाव तो बीजेपी के सिम्बल से लगातार जीतते जा रहे हैं, लेकिन सोनिया-राहुल और प्रियंका के खिलाफ मौके-बेमौके कभी भी मुंह नहीं खोलते हैं। सोनिया-राहुल तो दूर यह लोग कांग्रेस के खिलाफ भी चुप्पी साधे रहते हैं। बात यहीं तक सीमित नहीं है, बीजेपी के रणनीतिकारों को इस बात का भी गुस्सा है कि वरूण गांधी कांग्रेस और सोनिया-राहुल-प्रियंका वाड्रा के साथ अपने राजनैतिक रिश्ते सुधारने में भी लगे रहते हैं। उधर, बीजेपी के लीडर कहते हैं कि हमें इस बात से कोई शिकायत नहीं है कि पारिवारिक तौर पर पूरा गांधी परिवार एकजुट रहे, लेकिन जब बात सियासत की आती है तो बीजेपी में रहते हुए मेनका-वरूण गांधी परिवार के नाम पर बीजेपी से सियासी बैर नहीं कर सकते हैं। यदि वह बीजेपी में हैं तो उनको बीजेपी की विचारधारा के अनुसार चलना भी होगा और इसे आगे भी ले जाना होगा, इसके लिए यदि कांग्रेस के गांधी परिवार के खिलाफ मोर्चा खोलने की जरूरत पड़े तो मेनका-वरूण विचारधारा से ऊपर पारिवारिक रिश्ते को महत्व देते हुए चुप नहीं रह सकते हैं। बस यही एक वजह है जिस पर मेनका और वरूण गांधी खरे नहीं उतर रहे हैं, जिसके चलते यहां तक कहा जाने लगा है कि आगामी लोकसभा चुनाव में बीजेपी द्वारा मेनका और विशेषकर वरूण गांधी की उम्मीदवारी के लिए गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए दोनों का या फिर कम से कम वरूण गांधी का तो टिकट काटा ही जा सकता है। मेनका गांधी को भी सुलतानपुर संसदीय सीट की जगह किसी अन्य चुनौती पूर्ण सीट पर उतारा जा सकता है। क्योंकि सुलतानपुर में मेनका गांधी के कामकाज से वहां जनता खुश नजर नहीं आ रही है। पार्टी के भीतर भी मेनका गांधी के कामकाज के तरीके का काफी विरोध हो रहा है। बहरहाल, मेनका और वरूण गांधी को भी इस बात का अहसास हो गया है कि आलाकमान उनके कामकाज और तौर-तरीके से खुश नहीं है। कहा जा रहा है आलाकमान की नाराजगी से बचने के लिए ही पीलीभीत के सांसद वरूण गांधी ने कांग्रेस सांसद और अपने चचेरे भाई राहुल गांधी के विदेश में भारत की छवि खराब करने वाले बयान की निंदा की थी। इतना ही नहीं अक्सर अपनी ही पार्टी के खिलाफ बयानबाजी को लेकर सुर्खियों में रहने वाले वरूण गांधी के कई मोर्चों पर सुर कुछ बदले-बदले नजर आ रहे हैं। अब उन्होंने बीजेपी के खिलाफ बयानबाजी और ट्वीट करना बंद कर दिया है। कयास लगाए जा रहे हैं कि सुल्तानपुर से सांसद मां मेनका गांधी के बीजेपी को लेकर दिए गए बयान के बाद पीलीभीत लोकसभा सीट को लेकर चल रही अटकलें साफ हो गई हैं, जिसकी बानगी वरूण गांधी के पीलीभीत के कार्यालय के बाहर लगे पोस्टर पर भी दिखने लगी है, जिनमें अब फिर से बीजेपी के वरिष्ठ नेता दिखने लगे हैं। ■

सवालों के घेरे में हैं खुशहाल देशों की रैंकिंग

हरिश्चंद्र शर्मा

साल 2023 के लिए ग्लोबल हैप्पीनेस इंडेक्स जारी कर दिया गया है, जिसमें फिनलैंड ने लगातार छठीं बार सर्वोच्च स्थान पाया है। यह बात भी गौर करने की है कि तीन अंकों का सुधार करके भारत इसमें 136वें स्थान पर पहुंचा है, जो आश्चर्यकारी है। इस सूची को जारी करने में अवश्य ही कोई पूर्वाग्रह या आग्रह दिखाई देता है। क्योंकि ऋण की गुहार लगाता एवं त्राहिमाम करता पाकिस्तान 103वें स्थान पर है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि शीर्ष 20 देशों की सूची में एशिया का एक भी देश शामिल नहीं है। कुछ ऐसी ही विडंबनाएं एवं विसंगतियां भी हैं, जो इस सूचकांक के महत्व को घटा देती हैं। जो दुनिया के खुश देशों के आकलन में त्रुटि की पूरी संभावनाएं होने को दर्शाता है। अनेक सवाल खड़े करती है यह खुशहाल देशों की रैंकिंग। चीन में लोगों को धार्मिक-आर्थिक आजादी भी सही ढंग से नहीं मिली है, पर वह 82वें स्थान पर है। नेपाल 85वें, तो बांग्लादेश 99वें स्थान पर है। आर्थिक रूप से बदहाल श्रीलंका 126वें स्थान पर है। ऐसे में, भारत की 136वीं रैंकिंग किसी को अचंभित कर सकती है। इस आकलन की गुणवत्ता एवं निष्पक्षता पर सवाल भी खड़े कर सकती है। हैप्पीनेस इंडेक्स में किसी देश की स्थिति जानने के लिए उसकी जीडीपी, वहां जीवन की गुणवत्ता और जीवन प्रत्याशा का देखा जाता है। इस साल में रैंकिंग में 150 से ज्यादा देशों के इन डाटा का अध्ययन करने के बाद सूची तैयार की गई है। इस बार 2020 से 2022 तक देशों के औसत जीवन मूल्यांकन के आधार पर रिपोर्ट तैयार की गई है। दो अन्य मोर्चों पर खुशहाली को मापने की कोशिश हुई है जिसमें भारत की इतनी बुरी हालात को नहीं दर्शाया गया है।

फिर भी एक बड़ा सवाल है कि हम प्रसन्न समाजों की सूची में क्यों नहीं अव्वल आ पा रहे हैं। यह सवाल सत्ता के शीर्ष नेतृत्व को आत्ममंथन करने का अवसर दे रहा है, वहीं नीति-निर्माताओं को भी सोचना होगा कि कहां समाज निर्माण में त्रुटि हो रही है कि हम लगातार खुशहाल देशों की सूची में सम्मानजनक स्थान नहीं बना पा रहे हैं। भारत सरकार इस रिपोर्ट को कितनी गंभीरता से लेती है, यह देखने वाली बात है। वैसे इस सूचकांक के अलावा भी जो दो अन्य सर्वे जारी हुए हैं, जिनमें एक कंसल्टिंग फर्म हैप्पीप्लस की द स्टेट ऑफ हैप्पीनेस 2023 रिपोर्ट के अनुसार, देश में करीब 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 2022 में नकारात्मकता और दुख का अनुभव किया है, यानी 65 प्रतिशत भारतीय लोग अपेक्षाकृत खुश हैं। यह रिपोर्ट 36 राज्यों व केंद्र शासित क्षेत्रों के 14 हजार लोगों की प्रतिक्रिया के आधार पर तैयार की गई है। एक अन्य सर्वे भी है, जिसके अनुसार, भारत में कम से कम 84 प्रतिशत लोगों ने खुश होने का दावा किया है। जीवन संतुष्टि पर आधारित यह इप्सोस ग्लोबल हैप्पीनेस सर्वे बताता है कि दुनिया भर में 73 प्रतिशत लोग संतुष्ट हैं। वैसे दुख या खुशी एक ऐसी अवस्था है, जिस पर किसी सर्वे के जरिये एकमत नहीं हुआ जा सकता। फिर भी, ऐसी सूचियों से सकारात्मक प्रेरणा लेते हुए प्रसन्न समाज की संरचना के लिये तमाम तरह के प्रयास करने में ही भलाई है।

खुशहाली सूचकांक के लिए अर्थशास्त्रियों एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की एक टीम व्यापक स्तर पर शोध करती है, यह टीम समाज में सुशासन, प्रति व्यक्ति आय, स्वास्थ्य, जीवित रहने की उम्र, भरोसा, सामाजिक सहयोग, परोपकार, दान भावना, स्वतंत्रता और उदारता आदि को आधार बनाती है। रिपोर्ट का मकसद विभिन्न देशों के शासकों को आईना दिखाना है कि उनकी नीतियां लोगों की जिंदगी खुशहाल बनाने में कोई भूमिका निभा रही हैं या नहीं? हमारा शीर्ष नेतृत्व आजादी के बाद से ही निरन्तर आदर्शवाद और अच्छाई का झूठ रचते हुए सच्चे आदर्शवाद के प्रकट होने की असंभव कामना करता रहा है, इसी से जीवन की समस्याएं सघन होती गयी है, नकारात्मकता का व्यूह मजबूत होता गया है, खुशी एवं प्रसन्न जीवन का लक्ष्य अधूरा ही रहा है, इनसे बाहर निकलना असंभव-सा होता जा रहा है। दूषित और दमघोंटू वातावरण में आदमी अपने आपको टूटा-टूटा सा अनुभव कर रहा है। आर्थिक असंतुलन, बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, बिगड़ी कानून व्यवस्था एवं भ्रष्टाचार उसकी धमनियों में कुत्सित विचारों का रक्त संचरित कर रहा है। ऐसे जटिल हालातों में इंसान कैसे खुशहाल जीवन जी सकता है? इन गहन अंधेरों से बाहर निकलते हुए विगत एक दशक में सरकारों के कामकाज एवं नीतियों से एक आशावाद झलका है, कोरोना महामारी से निपटने में भी वर्तमान सरकारों की सकारात्मक भूमिका रही है। इसी से एक और खास बात सामने आयी है वह यह है कि तीन साल की महामारी का समग्रता में भारत की खुशी पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा है। भारत में खुशहाली को बढ़ावा देने में यहां की जनसंख्या सबसे बड़ी बाधा है। भारत जैसे विशाल और असमान विकास वाले देश के लिए 136वां स्थान कितना मायने रखता है? भारत में कई तरह का भारत है, एक अमीर व खुशहाल भारत है, तो उसमें एक गरीब भारत भी है। गरीब भारत भी विकास कर रहा है, लेकिन आबादी इतनी ज्यादा है कि अभी देश को समग्रता में खुशहाल देशों में अव्वल स्थान बनाने में वक्त लगेगा। सबसे खुशहाल देश फिनलैंड की आबादी महज 55 लाख है, उसके लिए विकास आसान है। भारत के मुम्बई, दिल्ली, कोलकता शहर में इसमें कहीं ज्यादा लोग रहते हैं। खुश देशों की सूची में दूसरे स्थान रहे डेनामार्क में 58.6 लाख लोग रहते हैं, तीसरे स्थान पर रहे देश आइसलैंड में तो महज 3.73 लाख लोग होते हैं। वैसे भी खुशी महसूस करना व्यक्ति के खुद की सोच पर निर्भर करता है। इसलिये प्रश्न है कि हमारी खुशी का पैमाना क्या हो? अधिकतर लोग छोटी-छोटी जरूरतें पूरी होने को ही खुशी मान लेते हैं। इससे उन्हें उस पल तो संतुष्टि मिल जाती है, उनका मन खिल जाता है। लेकिन यह खुशी ज्यादा देर नहीं टिकती, स्थायी नहीं होती। इच्छा पूरी होने के साथ ही उनकी खुशी भी कमजोर होने लगती है। ■

सशक्त प्राचीन लोककला है कठपुतलियों का संसार

कठपुतली विश्व के प्राचीनतम रंगमंच पर खेला जाने वाले मनोरंजक, शिक्षाप्रद एवं कला-संस्कृतिमूलक कार्यक्रम है। कठपुतलियों को विभिन्न प्रकार की गुड्डे-गुड़ियों, जोकर आदि पात्रों के रूप में बनाया जाता है और अनेक प्राचीन कथाओं को इसमें मंचित किया जाता है। लकड़ी अर्थात काष्ठ से इन पात्रों को निर्मित किये जाने के कारण अर्थात काष्ठ से बनी पुतली का नाम कठपुतली पड़ा। प्रत्येक वर्ष 21 मार्च को विश्व कठपुतली दिवस भी मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य इस प्राचीन लोक कला को जन-जन तक पहुंचना तथा आने वाली पीढ़ी को इससे अवगत कराना है।

रामनरेश शर्मा

पुतली कला कई कलाओं का मिश्रण है, जिसमें-लेखन, नाट्य कला, चित्रकला, वेशभूषा, मूर्तिकला, काष्ठकला, वस्त्र-निर्माण कला, रूप-सज्जा, संगीत, नृत्य आदि। भारत में यह कला प्राचीन समय से प्रचलित है, जिसमें पहले अमर सिंह राठौड़, पृथ्वीराज, हीर-रांझा, लैला-मजनूं, शीरी-फरहाद की कथाएँ ही कठपुतली खेल में दिखाई जाती थीं, लेकिन अब सामाजिक विषयों के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य तथा ज्ञान संबंधी अन्य मनोरंजक कार्यक्रम भी दिखाए जाने लगे हैं। पुतलियों के निर्माण तथा उनके माध्यम से विचारों के संप्रेषण में जो आनंद मिलता है, वह बच्चों के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास में सहायक तो होता ही है, लेकिन यह अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक विषयों के सम्प्रेषण का भी प्रभावी माध्यम है। भारत में सभी प्रकार की पुतलियाँ पाई जाती हैं, यथा-धागा पुतली, छाया पुतली, छड़ पुतली, दस्ताना पुतली आदि।

कठपुतली के इतिहास के बारे में कहा जाता है कि ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में महाकवि पाणिनी के अष्टाध्याई ग्रंथ में पुतला नाटक का उल्लेख मिलता है। इसके जन्म को लेकर कुछ पौराणिक मत इस प्रकार भी मिलते हैं कि भगवान शिवजी ने काठ की मूर्ति में प्रवेश कर माता पार्वती का मन बहला कर इस कला को प्रारंभ किया, इसी प्रकार उज्जैन नगरी के राजा विक्रमादित्य के सिंहासन में जड़ित 32 पुतलियों का उल्लेख सिंहासन बत्तीसी नामक कथा में भी मिलता है। कठपुतली दिवस पर दुनिया भर में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि इस कला को लुप्त होने से बचाया जा सके एवं इसके कलाकारों से जुड़ी समस्याओं के समाधान का वातावरण निर्मित हो सके। राजस्थान में कठपुतली कला का समृद्ध इतिहास है। कठपुतलियों को खेल माना जाता है जो कि मध्ययुग में भाट समुदाय से शुरू हुआ था। भाट समुदाय के लोग गांव-गांव जाकर कठपुतली का खेल दिखाते थे। पहले इसमें ज्यादातर राजाओं की वीरता व पराक्रम की कहानियां होती थीं। भाट समुदाय इसी खेली से अपनी आजीविका चलाता था। लोग खेल देखने के बाद उन्हें अपने घर से अनाज या कुछ धन बदले में देते थे। कठपुतली कलाकार राजाओं की बहादुरी के किस्से बनाकर सबको दिखाते थे। अमर सिंह की कहानी में किस तरह से मुगल शासन में उनके साथ छल-कपट हुआ इस पर आधारित थी। इसी में अनारकली नाम की कठपुतली भी है जिसका नृत्य काफी प्रसिद्ध था।

कठपुतलियों की देश और विदेश में लोकप्रियता और प्रसिद्धि दिलाने हेतु स्व. देवीलाल सामर ने बहुत काम किया। उन्होंने पारम्परिक खेलों के अलावा नवीन कथा कृतियों, नाटकों, कहानियों को कठपुतलियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। उनके द्वारा स्थापित उदयपुर का भारतीय लोक कला मण्डल

राजस्थान के गांवों में कोई भी मेला, धार्मिक त्योहार या सामाजिक मेलजोल कठपुतली नाच के बिना अधूरा है। कठपुतली नाच की शुरूआत ढोलक की थाप से होती है और आमतौर पर महिला मंडली की ओर से कथा के माध्यम से सुनायी जाती है।

आज भी परम्परागत और नवीन कठपुतलियां तथा उनके समाज शास्त्रीय अध्ययन पर काफी काम कर रहा है। पुतलियां चाहे पुरातन हों अथवा नवीन, सैद्धान्तिक दृष्टि से एक ही नियम में बंधी हैं, और किन्हीं वास्तविक प्राणियों की नकल नहीं हो सकती। न्यूनतम अंग भंगिमाओं से अधिकतम भंगिमाओं का भ्रम उत्पन्न करना पारम्परिक एवं आधुनिक पुतलियों का परम धर्म है। चित्रकला की तरह भारतीय पुतलियां अनुकृति मूलकता से हटकर आभासिक रही है। आन्ध्र, राजस्थान एवं उड़ीसा की पुतलियां इसी क्रम में आती हैं। राजस्थान के पारम्परिक पुतलीकार अमर सिंह राठौर या राणा प्रताप के खेल से आगे नहीं बढ़ना चाहते। उड़ीसा के पुतलीकार गोपीकृष्ण के कथानक को नहीं छोडते। आन्ध्र के छाया कठपुतलीकार रामायण एवं महाभारत के ही खेल करते हैं। यही कारण है कि यह परम्परा अब मृतप्रायः सी हो चुकी है। लेकिन पुतली कला के विषय अब प्रमुख रूप से शिक्षा, मनोरंजन, सामाजिक विसंगतियों आदि से सम्बन्धित होते हैं। वसीला नामक कठपुतली नाटक ने भारत व सोवियत समाज को नजदीक लाने में मदद की।

चीन, जापान, मलेशिया, इन्डोनेशिया, बर्मा आदि देशों में कठपुतलियों का विवरण वहां के प्राचीन साहित्य में मिलता है। पुतलियां अपने विकास के समय से ही मानवीय नाटक से जुड़ गयी। विश्व के पुतली विशेषज्ञ इस बात पर एक मत हैं कि मानवीय नाटक के रंगमंचीय अवतरण से पूर्व ही पुतलियां विकास पर थीं। पुतलियां मूल रूप मनुष्य की धार्मिक भावनाओं को ही विकसित करती रहीं। यही कारण है कि पुतलियां प्रकृति से जुड़ गयी और धार्मिक व पारम्परिक प्रसंगों को पुतलियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने लगा। पुतली नाट्य लोक शैली का ही एक नाटक था जो लोक नाट्यों के रूप से विकसित हुआ। पुरातन शैली में प्रस्तुत करने वाले अधिसंख्य पात्र आज भी मुखौटा लगाते हैं। अफ्रीका, जावा, बाली, श्रीलंका, बर्मा में ऐसे नाट्य आज भी बहुत प्रचलित हैं। भारत में भी यही स्थिति है। मेवाड़ का गवरी, दक्षिण का यक्ष नाट्य आदि में मुखौटों का बड़ा महत्व है। दक्षिण भारत के प्रायः सभी लोक नाट्यों की अंग भंगिमाएं, वेशभूषा आदि पुतलियों की तरह ही हैं। यूरोपीय देशों में पुतली परम्परा 300 वर्ष की मानी गयी है। भारत में यह आदि मानव से जुड़ी है। सांस्कृतिक कार्यों में पुतली का प्रयोग और प्रतीकों का महत्व सर्वविदित है। यूनान, मिस्र आदि देशों में पुरातन समाधियों की खुदाई में अनेक ऐसे पुतले मिलें हैं जो मृतात्माओं की शांति के लिए गाड़े जाते हैं। भारत में भी इसके प्रमाण उपलब्ध हैं कि पुतलियों से ही नाटकों की उत्पत्ति हुई है। पुराणों में कहीं कहीं पुतलियों का उल्लेख मिलता है। रामायण, महाभारत, पंच तंत्र आदि में भी इनका उल्लेख है। इन ग्रन्थों में पुतलियों से सन्देशवाहक का काम लिया जाता है। महाभारत में वृहन्नला द्वारा पुतलियां सिखलाने का उल्लेख है। इसी प्रकार चमड़े, कागज और कपड़े की पुतलियों का भी वर्णन है। सातवीं शताब्दी में नीलकंठ के भाष्य मे छाया पुतलियों का वर्णन है। कथासरित सागर में एक दस्तकार का उल्लेख है जो बच्चों के मनोरंजन के लिए पुतलियां बनाता है।

आज भी राजस्थान के पुतली कलाकार नट भाट, राव और भांडों की तरह भांभी, बलाई एवं रेबारी जाति मे पाये जाते हैं। जयपुर, उदयपुर व पश्चिमी राजस्थान में ये जातियां पाई जाती हैं। जयपुर में सैकडों परिवार कठपुतलियां बनाते हैं, बेचते है और नाट्यों का प्रदर्शन करते हैं। इसी प्रकार पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात में भी भाट व नट जातियां कठपुतलियां के खेल करती हैं। राजस्थान के भवाई, भोपों, मंगलिये, काबडिये, खरगडे, तेजोर आदि भी पुतलियों का खेल दिखाते हैं। जयपुर के कठपुतली बनाने वालों ने अपनी एक कॉलोनी भी बनायी है, जहां पर कठपुतलियों के निर्माण, रंगाई, पुताई आदि का काम होता है। यहां से कठपुतलियां दुकानों, एम्पोरियमों तथा विदेशों को भेजी जाती है। झीलों की नगरी उदयपुर अपनी खूबसूरती के साथ-साथ कठपुतली कला के लिये देश ही नही बल्कि विदेशों में अपनी छाप छोड़े हुए है। यहां की बागोर की हवेली में कठपुतली संसार संग्रहालय विदेशी पर्यटकों का मुख्य आकर्षण केन्द्र है। यहां दस या पांच नहीं बल्कि 163 के करीब कठपुतली से पूरा संसार लोक-कलाकारों ने बसा रखा है। जिसे देख पर्यटक काफी गद्गद् होते हैं और अपनी यादें इनके साथ सहेजते हुए अपने देश में लेकर जाते हैं। इस कठपुतली संसार में घोड़े पर युद्ध करता सैनिक, गोखड़ों के पास बैठी महारानियां भी किसी शाही महल से कम नहीं लग रही है। राजस्थान के गांवों में कोई भी मेला, धार्मिक त्योहार या सामाजिक मेलजोल कठपुतली नाच के बिना अधूरा है। कठपुतली नाच की शुरूआत ढोलक की थाप से होती है और आमतौर पर महिला मंडली की ओर से कथा के माध्यम से सुनायी जाती है। यहां पर कठपुतली नाच न केवल मनोरंजन का स्रोत है, बल्कि इस लोक कला के जरिये नैतिक और सामाजिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार का जरिया है जिसमें सामाजिक मुद्दों और कुरीतियों को उजागर किया जाता है। इस दृष्टि से कठपुतली-संस्कृति को जीवंतता देना प्रासंगिक है। ■

भारतीय बैंक मजबूत हैं

अमेरिकी अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल का हम पर प्रभाव नहीं पड़ेगा

स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भारत में चूंकि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने पूर्व में ही कई निर्णय लिए हैं जिसके चलते भारतीय बैंकों की वित्तीय स्थिति इस संदर्भ में बहुत सुदृढ़ हो गई है। अमेरिकी वित्तीय क्षेत्र में बैंकों पर भारी संकट आ गया है। अभी तक दो बैंक (सिलिकॉन वैली बैंक एवं सिग्नेचर बैंक) बंद हो चुके हैं और 6 अन्य छोटे आकार के बैंकों (फर्स्ट रिपब्लिक बैंक, वेस्टर्न अलाइन्स बैंक, पैकवेस्ट, यूएमबी फायनैन्शल सहित) पर गम्भीर संकट बना हुआ है। इन बैंकों में रोकड़ एवं तरलता की गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गई है एवं इनके पास अपने जमाकर्ताओं को भुगतान करने के लिए पर्याप्त राशि उपलब्ध नहीं है। इन बैंकों के शेयरों की कीमत पूंजी बाजार में 14 से 30 प्रतिशत के बीच गिर चुकी है।

अजय शर्मा

एक आंकलन के अनुसार अमेरिका के 160 बड़े बैंकों (जिनके पास 500 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक राशि की आस्तियां हैं) को 20,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ है। अमेरिका की रेटिंग संस्थाओं स्टैंडर्ड एंड पूअर्स एवं फिच ने कुछ बैंकों की रेटिंग घटाकर जंक श्रेणी में डाल दी है क्योंकि यह बैंक अपने जमाकर्ताओं को राशि वापस करने की स्थिति में नहीं हैं। अमेरिका के सबसे बड़े बैंकों को भी भारी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि इनके अमेरिकी बांड्ज में किए गए निवेश की बाजार कीमत कम हो गई है। सिटी बैंक समूह को 4,700 करोड़ अमेरिकी डॉलर, बैंक आफ अमेरिका को 2,120 करोड़ अमेरिकी डॉलर, जेपी मोर्गन चेज को 1,730 करोड़ अमेरिकी

डॉलर, टरुइस्ट फायनैन्शल को 1,360 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वेल्ज फार्गो को 1,340 करोड़ अमेरिकी डॉलर एवं यूएस बैंक कॉर्प को 1,140 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ है। यह सभी बड़े बैंक हैं अतः इस नुकसान को सहन कर जाएंगे परंतु छोटे बैंक तो असफल ही हो जाने वाले हैं। दरअसल, अमेरिकी बैंकों में समस्या वहां के केंद्रीय बैंक, यूएस फेड रिजर्व, द्वारा लगातार यूएस फेड रेट में की जा रही वृद्धि के चलते उत्पन्न हुई है। अमेरिका में समस्त बैंकों ने अमेरिकी बांड्ज में भारी भरकम निवेश किया हुआ है। पहले चूंकि अमेरिका में ब्याज दरें कम थीं, अतः इन बांड्ज पर कूपन रेट (ब्याज दर) भी कम था और समय के साथ जैसे-जैसे अमेरिका में ब्याज दरों का बढ़ना शुरू हुआ, नए बांड्ज बढ़ी हुई ब्याज दरों पर जारी किए जाने लगे। इसके कारण पुराने बांड्ज की बाजार कीमत कम होती चली गई क्योंकि इन बांड्ज पर कम ब्याज दर लागू थी। इन बांड्ज की बाजार कीमत इतनी कम होती गई क्योंकि वह इन बांड्ज में निवेश की गई राशि से भी कम रह गई। अतः इन बैंकों को इन पुराने बांड्ज पर भारी भरकम नुकसान हुआ है। इन बांड्ज को आज के समय में बाजार में बेचने पर इन बैंकों को अपने निवेश की राशि भी नहीं मिल पा रही है। इस प्रकार ये बैंक अपने जमाकर्ताओं को राशि का भुगतान करने में असफल हो रहे हैं।

अमेरिका के साथ ही अन्य कई विकसित देशों ने भी मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से लगातार ब्याज दरों में वृद्धि की है। अतः यूरोपियन देशों में भी बैंकों में इसी प्रकार की समस्या आ सकती है। क्रेडिट स्विस नामक एक निवेश बैंक में तो इस प्रकार की समस्या दृष्टिगोचर भी है। इस बैंक के शेयर की कीमत पूंजी बाजार में 98 प्रतिशत तक गिर गई है। दरअसल, विकसित देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा, मुद्रा स्फीति जो कि कोविड महामारी एवं रूस यूक्रेन युद्ध के चलते उत्पादों की आपूर्ति में आई कमी के कारण उत्पन्न हुई थी, को उत्पादों की मांग में कमी करने के उद्देश्य से, ब्याज दरों में वृद्धि कर नियंत्रित करने का प्रयास किया जा रहा था। यह अपने आप में एक सही निर्णय नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उत्पादों की आपूर्ति बढ़ाने के स्थान पर उत्पादों की मांग कम करने के प्रयास किए जा रहे थे, जोकि एक नकारात्मक निर्णय कहा जा सकता है। इसके चलते कई संस्थानों को तो कर्मचारियों की छंटनी भी करनी पड़ी है और अब विकसित देशों के केंद्रीय बैंकों के इस निर्णय ने इन देशों की बैंकों के लिए भी एक गंभीर वित्तीय संकट खड़ा कर दिया है।

अब यहां प्रश्न यह खड़ा हो रहा है कि अमेरिका सहित अन्य विकसित देशों की बैंकों के सामने आए इस वित्तीय संकट का प्रभाव क्या भारतीय बैंकों पर भी पड़ेगा। इसके उत्तर में स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भारत में चूंकि केंद्र सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने पूर्व में ही कई निर्णय लिए हैं जिसके चलते भारतीय बैंकों की वित्तीय स्थिति इस संदर्भ में बहुत सुदृढ़ हो गई है।

बैंकिंग उद्योग किसी भी देश में अर्थ जगत की रीढ़ माना जाता है। बैंकिंग उद्योग में आ रही परेशानियों का निदान यदि समय पर नहीं किया जाता है तो आगे चलकर यह समस्या उस देश के अन्य उद्योगों को प्रभावित कर, उस देश के आर्थिक विकास की गति को कम कर सकती है। इसलिए पिछले 8 वर्षों के दौरान केंद्र सरकार ने बैंकों की लगभग हर तरह की समस्याओं के समाधान हेतु कई ईमानदार प्रयास किए हैं। गैर निष्पादनकारी आस्तियों से निपटने के लिए दिवाला एवं दिवालियापन संहिता लागू की गई है। देश में सही ब्याज दरों को लागू करने के उद्देश्य से मौद्रिक नीति समिति बनायी गई है। साथ ही, केंद्र सरकार ने इंद्रधनुष योजना को लागू करते हुए, सरकारी क्षेत्र के बैंकों को 3.10 लाख करोड़ रुपए से अधिक की पूंजी उपलब्ध करायी है। साथ ही 30 अगस्त 2019 को देश की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने बैंकिंग क्षेत्र को और अधिक मजबूत बनाए जाने के उद्देश्य से सरकारी क्षेत्र के बैंकों के आपस में विलय की घोषणा की थी। सरकारी क्षेत्र के बैंकों की, समेकन के माध्यम से, क्षमता अनवरोधित (अनलॉक) करने के उद्देश्य से ही सरकारी क्षेत्र के बैंकों के आपस में विलय की घोषणा की गई थी। इन बैंकों के विलय में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया था कि इनके विलय से किसी भी ग्राहक को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी ना हो, ये तकनीक के लिहाज से एक ही प्लैट्फार्म पर हों, इन बैंकों की संस्कृति एक ही हो तथा इन बैंकों के व्यवसाय में वृद्धि दृष्टिगोचर हो। वर्ष 2017 में भारत में सरकारी क्षेत्र के 27 बैंक थे लेकिन इनके आपस में विलय के बाद अब केवल 12 सरकारी क्षेत्र के बैंक रह जाएंगे। इस प्रकार देश में सरकारी क्षेत्र के बैंकों को अगली पीढ़ी के बैंकों का रूप दिया जा रहा है। उक्त विलय के बाद इन सरकारी क्षेत्र के बैंकों के बड़े हुए आकार ने इन बैंकों की ऋण प्रदान करने की क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि की है। इन बैंकों की राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत उपस्थिति के साथ ही इनकी अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पहुंच बन गई है। विलय के बाद इन बैंकों की परिचालन लागत में कमी आई है जिससे इनके द्वारा प्रदान किए जा रहे ऋणों की लागत में भी सुधार हुआ है। इन बैंकों द्वारा बैंकिंग व्यवसाय हेतु, नई तकनीकी के अपनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है जिससे इनकी उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार होता दिखाई दे रहा है। इन बैंकों की बाजार से संसाधनों को जुटाने की क्षमता में भी सुधार हुआ है।

भारत में समस्त वर्गीकृत वाणिज्यिक बैंकों में पूंजी पर्याप्तता अनुपात 31 मार्च 2022 को समाप्त अवधि में 16.7 प्रतिशत के सराहनीय स्तर पर पहुंच गया है। जबकि अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार, बैंकों में पूंजी पर्याप्तता अनुपात न्यूनतम 8 प्रतिशत (एवं 2.5 प्रतिशत के पूंजी कंजर्वेटिव बफर को मिलाकर 10.5 प्रतिशत) होना बैंकों के लिए आवश्यक माना जाता है। इसी प्रकार, भारत में वर्गीक वाणिज्यिक बैंकों की आस्तियों पर आय एवं इक्वटी पर आय भी इस अवधि में संतोषप्रद रही है, जिसके चलते पूंजी पर्याप्तता अनुपात में भी लगातार सुधार हो रहा है।

वर्गीकृत वाणिज्यिक बैंकों में सकल गैरनिष्पादनकारी आस्तियों एवं शुद्ध गैर निष्पादनकारी आस्तियों का प्रतिशत भी 30 सितम्बर 2022 को समाप्त तिमाही में कम होकर 5.0 प्रतिशत (पिछले 7 वर्षों के न्यूनतम स्तर पर) एवं 1.3 प्रतिशत (पिछले 10 वर्षों के न्यूनतम स्तर पर) क्रमशः हो गया है। उक्त बैंकों के प्रोविजन कवरेज अनुपात में सुधार हुआ है और यह मार्च 2021 के 67.6 प्रतिशत से बढ़कर 31 मार्च 2022 को 70.9 प्रतिशत हो गया है। इसका आशय यह है कि इन बैंकों ने अपने खातों में गैर निष्पादनकारी आस्तियों के लिए पर्याप्त मात्रा में प्रोविजन कर लिया है। यदि आगे आने वाले समय में इन गैर निष्पादनकारी आस्तियों में समस्या होती है तो बैंकों को इस प्रकार की समस्या से निपटने में आसानी होगी। भारतीय रिजर्व बैंक के नियमों के अनुसार भारतीय बैंकों को 4.5 प्रतिशत रोकड़ रिजर्व अनुपात एवं 18 प्रतिशत संवैधानिक रिजर्व अनुपात बनाए रखना होता है। जिसके अंतर्गत बैंकों को रोकड़ एवं सरकारी प्रतिभूतियों के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक के पास उक्त राशि जमा रखना होती है, ताकि बैंकों को तरलता सम्बंधी समस्या का सामना नहीं करना पड़े। साथ ही, भारतीय बैकों में प्रति जमाकर्ता के खाते में रुपए 5 लाख तक की जमाराशि का बीमा भी रहता है। भारतीय बैंकों की उक्त वर्णित स्थिति के चलते भारतीय रिजर्व बैंक की आज पूरी दुनिया में बहुत प्रशंसा हो रही है कि उसने भारतीय बैकों को आज इतनी मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया है। अभी हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर डॉ. शक्तिकांत दास को गवर्नर आफ द ईयर अवार्ड अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2023 के लिए सेंट्रल बैंकिंग, एक अंतरराष्ट्रीय आर्थिक अनुसंधान जर्नल की ओर से प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। ■

प्रधानमंत्री कुसुम योजना

किसान सोलर पंप पर 90 प्रतिशत तक पा सकते हैं सब्सिडी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों को आर्थिक सुरक्षा देने और उन्हें निर्बाध बिजली आपूर्ति की गरज से ही प्रधानमंत्री कुसुम योजना की शुरूआत की, जिससे किसान लाभान्वित हुए हैं। यह योजना केंद्र सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसके तहत किसानों को सौर पंप लगाने के लिए बड़े पैमाने पर सरकारी सहायता मिलती है। इसके तहत किसानों के लिए सौर पंप और ग्रिड से जुड़े अन्य सौर बिजली संयंत्र लगाये जाने का प्रावधान है, जिसके तहत किसान सोलर पंप पर 90 प्रतिशत तक सब्सिडी पा सकते हैं। इसलिए विभिन्न राज्य सरकारों के द्वारा भी इस योजना में दिलचस्पी दिखाई जाने लगी है और उनके द्वारा भी किसानों को प्रोत्साहित किया जाने लगा है।

कमलेश पांडेय

बता दें कि नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने वर्ष 2019 में ही प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान, जिसे प्रधानमंत्री कुसुम योजना की संज्ञा दी गई, की शुरूआत की थी। जिसके तहत किसानों को सौर पंप लगाने के लिए 90 फीसदी तक की छूट मिलती है। जानकारी के मुताबिक, अनुमन्य अनुदान (सब्सिडी) के बाद किसान को सौर पंप के लिए करीब 10 प्रतिशत भुगतान करना पड़ता है।

सोलर पावर पंप लगवाने पर सब्सिडी का लाभ उठाने के लिए योजना की अधिकारिक वेबसाइट पर ऐसे जाएं

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2023-24 के आम बजट में भी प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (पीएम-कुसुम) योजना को बजट में 1996.46 करोड़ रुपये मिले। इसलिए किसानों को सोलर पावर पंप लगवाने पर सब्सिडी का लाभ उठाने के लिए योजना की अधिकारिक वेबसाइट प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (पीएम https://pmkusum.mnre.gov.in/landing.html विजिट करना होगा। इसके अलावा, किसान इस योजना की अधिक जानकारी अपने जिला स्तर पर विद्युत विभाग एवं कृषि विभाग से संपर्क करके प्राप्त कर सकते है। मालूम हो कि सरकार अपने-अपने स्तर पर किसानों को जागरूक करने के लिए विशेष अभियान भी चलाती है।

पीएम कुसुम योजना के लिए ऐसे कराएं रजिस्ट्रेशन

पीएम कुसुम योजना के तहत अगर आप रजिस्ट्रेशन करना चाहते हैं तो ऑनलाइन तथा ऑफलाइन दोनों माध्यमों से आवेदन कर सकते हैं। इस योजना के अंतर्गत सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना हेतु और भूमि लीज पर देने हेतु आवेदन किया जा सकता है। सर्वप्रथम आवेदक को योजना की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाना होगा, जहां आपके सामने होम पेज खुल जायेगा। इस पेज पर आपको पंजीकरण ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन का विकल्प दिखाई देगा, जिस पर आप क्लिक करें। इसके बाद आवेदन फॉर्म में पूछी गयी सभी जानकारी, जैसे- नाम, पता, आधार नंबर, मोबाइल नम्बर आदि भरनी होगी। सभी नवीनतम जानकारी भरने के बाद आखिर में सब्मिट के बटन पर क्लिक करें। सफल पंजीकरण के बाद आपको चयनित लाभार्थियों को सौर पंप सेट की 10 प्रतिशत कीमत आपूर्तिकर्ताओं को जमा करने के लिए निर्देशित किया जाता है। इसके बाद कुछ ही दिनों में आपके खेतों में सोलर पम्प लगा दिए जाएंगे।

योजना के आवेदन व आवेदक की सूची ऐसे देखें

प्रधानमंत्री कुसुम योजना के अंतर्गत सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने हेतु चयनित आवेदकों के नाम देखने के लिए सर्वप्रथम आपको सोलर योजना की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा। इसके बाद प्रधानमंत्री कुसुम योजना के लिए पंजीकृत आवेदनों की सूची वाले विकल्प पर क्लिक करना होगा। वह सभी

आवेदनकर्ता जिन्होंने अपनी भूमि लीज पर देने के लिए पंजीकरण करवाया है, उनकी सूची आरआरईसी द्वारा आधिकारिक वेबसाइट पर प्रदर्शित की जाएगी। वे सभी नागरिक जो सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने के लिए भूमि लीज पर लेना चाहते हैं, वह आवेदकों की सूची आरआरईसी की वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं, जिसके पश्चात वह पंजीकृत आवेदकों से संपर्क करके संयंत्र लगाने के लिए आवेदन कर सकते हैं।

पंजीकरण के बाद आवेदक को प्राप्त होगी एप्लीकेशन आईडी

यदि आवेदक द्वारा ऑनलाइन पंजीकरण किया गया है तो आवेदक को एप्लीकेशन आईडी प्राप्त होगी। आवेदक को ऑनलाइन आवेदन की स्थिति में आवेदन पत्र के प्रिंट आउट को अपने पास सुरक्षित रखना होगा। यदि आवेदक द्वारा ऑफलाइन आवेदन किया गया है तो आवेदक को एक रसीद दी जाएगी जो कि आवेदक को संभाल कर रखनी होगी। आवेदन करने के लिए आवेदक द्वारा सभी महत्वपूर्ण दस्तावेज जमा करने होंगे।

पीएम कुसुम योजना की ये हैं पात्रताएं

आवेदक भारत का स्थाई निवासी होना चाहिए। कुसुम योजना के अंतर्गत 0.5 मेगावाट से 2 मेगावाट क्षमता तक के सौर ऊर्जा संयंत्र के लिए आवेदक द्वारा आवेदन किया जा सकता है। आवेदक द्वारा अपनी भूमि के अनुपात में 2 मेगावाट क्षमता या फिर वितरण निगम द्वारा अधिसूचित क्षमता (दोनों में से जो भी कम हो) के लिए आवेदन कर सकता है। प्रति मेगावाट के लिए लगभग 2 हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता होगी। इस योजना के अंतर्गत स्वयं के निवेश से प्रोजेक्ट के लिए किसी भी प्रकार की वित्तीय योग्यता की आवश्यकता नहीं है। यदि आवेदक द्वारा किसी विकासकर्ता के माध्यम से प्रोजेक्ट विकसित किया जा रहा है तो विकासकर्ता की नेटवर्थ 1 करोड़ रुपए प्रति मेगावाट होनी अनिवार्य है। इस योजना के अंतर्गत आवेदक को सौर ऊर्जा संयंत्र के लिए आवेदन करने के लिए 5000 रुपए प्रति मेगावाट तथा जीएसटी की दर से आवेदन शुल्क का भुगतान करना होगा, जो कि डिमांड ड्राफ्ट के रूप में किया जाएगा।

पीएम कुसुम योजना के लिए ये हैं जरूरी महत्वपूर्ण दस्तावेज

प्रधानमंत्री कुसुम योजना का लाभ उठाने के लिए आधार कार्ड, राशन कार्ड, रजिस्ट्रेशन की कॉपी, ऑथराइजेशन लेटर, जमीन की जमाबंदी की कॉपी, चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा जारी नेटवर्थ सर्टिफिकेट (विकासकर्ता के माध्यम से प्रोजेक्ट विकसित करने की स्थिति में), मोबाइल नंबर, बैंक खाता विवरण और पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ की जरूरत पड़ती है। इसलिए इन सभी दस्तावेज को समेट कर रख लें और अपडेट नहीं हैं तो उन्हें उपयोग से पहले अपडेट करवा लें।

ये हो सकते हैं प्रधानमंत्री कुसुम योजना के लाभार्थी

किसान, किसानों का समूह, सहकारी समितियां, पंचायत, किसान उत्पादक संगठन, जल उपभोक्ता एसोसिएशन आदि कुसुम सोलर पम्प स्कीम के लाभार्थियों के रूप में शामिल किए जा सकते हैं। वित्त मंत्री द्वारा बजट पेश करते हुए कहा गया है कि 15 लाख किसानों को ग्रिड से जुड़े सोलर पंप लगाने के लिए धन मुहैया कराया जाएगा। इसके तहत किसानों को अपनी बंजर भूमि पर सौर ऊर्जा परियोजना लगाने के उपरान्त उन्हें अतिरिक्त बिजली ग्रिड को बेचने का विकल्प दिया जाएगा।

ये है पीएम कुसुम योजना का आवेदन शुल्क

इस योजना के अंतर्गत आवेदक को सौर ऊर्जा संयंत्र के लिए आवेदन करने के लिए रुपए 5000 प्रति मेगावाट तथा जीएसटी की दर से आवेदन शुल्क का भुगतान करना होगा। यह भुगतान प्रबंध निदेशक, राज्य अक्षय ऊर्जा निगम के नाम से डिमांड ड्राफ्ट के रूप में किया जाएगा। आवेदन करने के लिए 0.5 मेगावाट से लेकर 2 मेगावाट तक के लिए क्रमशः मेगावाट व आवेदन शुल्क कुछ इस प्रकार है- 0.5 मेगावाट के लिए रुपए 2500 + जीएसटी,1 मेगावाट के लिए रुपए 5000 + जीएसटी, 1.5 मेगावाट के लिए रुपए 7500 + जीएसटी और 2 मेगावाट के लिए रुपए 10000 + जीएसटी।

पीएम कुसुम योजना के लिए आय का अनुमान

गौरतलब है कि इन सोलर पैनल की वैधता 25 साल तक मानी गई है। इस लिहाज से किसान इसे लगवा कर 25 सालों तक एक निश्चित आय का स्त्रोत बना सकते हैं और 45 लाख रुपए तक की सालाना अतिरिक्त आय करके अपने द्वारा लिए हुए कृषि कर्ज को भी चुका सकते है। अगर किसान 5 एकड के बंजर खेतों सोलर संयंत्र स्थापित करते है, तो इस संयंत्र से साल में करीब 15 लाख यूनिट तक बिजली का पैदा की जा सकती है।

प्रधानमंत्री कुसुम योजना से बीमा का मिलेगा लाभ

इन पंपों को किसान पर बिना किसी अतिरिक्त लागत के 5 वर्षीय वार्षिक रख-रखाव अनुबंध (एएमसी) और प्राकृतिक आपदाओं, चोरी आदि के लिए बीमा कवर के साथ स्थापित किया जा रहा है। ये सोलर पंप न केवल पर्यावरण के अनुकूल हैं बल्कि खेती की लागत को भी कम करेंगे, क्योंकि बिजली और डीजल पर कोई खर्च नहीं होगा।

ये है हेल्पलाइन नम्बर

यदि आप पीएम कुसुम योजना को लेकर अभी भी किसी समस्या का सामना कर रहे हैं तो इस योजना की हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं जो कि कुछ इस प्रकार है- संपर्क नम्बर- 011-243600707, 011-24360404. टोल-फ्री नम्बर- 18001803333। ■

बाजारवाद के इस दौर में ग्राहक राजा नहीं बल्कि गुलाम बन चुका है

डॉ. नीलम महेंद्र

यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं कि ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ये कंपनियां मार्केटिंग और पब्लिसिटी का इस हद तक सहारा ले रही हैं कि आज एडवरटाइजिंग अपने आप में एक तेजी से बढ़ता हुआ उद्योग बन चुका है। आज हम जिस दौर में जी रहे हैं वो है बाजारवाद और उपभोक्तावाद का दौर। अब पहला प्रश्न यह कि इसका क्या मतलब हुआ? परिभाषा के हिसाब से यदि इसका अर्थ किया जाए तो वो ये होगा कि आज उपभोक्ता (यानी किसी भी वस्तु का उपयोग करने वाला) ही राजा है। खास बात यह है कि बाजारवाद के इस दौर में उपभोगता की जरूरत से आगे बढ़कर उसके आराम को केंद्र में रखकर ही वस्तुओं का निर्माण किया जा रहा है। मोबाइल है तो यूजर फ्रेंडली। कोई ऐप है तो उसका इस्तेमाल करने वाले की उम्र यानी बच्चे, युवा अथवा वयस्क के मानसिक विकास, उसकी जरूरतों और क्षमताओं को ध्यान में रखकर उसे कस्टमर फ्रेंड्ली बनाया जा रहा है। अगर रोबोट है तो मन फ्रेंड्ली। और पूंजीवाद के इस युग में तो मनुष्य के उपभोग के लिए सामान बनाने वाली विभिन्न कंपनियां उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा कर रही हैं।

यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इसके लिए (ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए) ये कंपनियां मार्केटिंग और पब्लिसिटी का इस हद तक सहारा ले रही हैं कि आज एडवरटाइजिंग अपने आप में एक तेजी से बढ़ता हुआ उद्योग बन चुका है। अब दूसरा प्रश्न यह है कि इसके क्या मायने हैं? नहीं वो नहीं है जो आप सोच रहे हैं कि पूंजीवाद के इस दौर में आप यानी ग्राहक एक राजा हैं। ये तो हमें एक ग्राहक के रूप में एहसास कराया जा रहा है लेकिन सत्य इसका उलट है। सत्य तो यह है कि उपभोगतावाद के इस दौर में हम बाजारवाद के गुलाम बनकर रह गए हैं। क्यों चौंक गए न? चलिए जरा खुल कर बात करते हैं, इसे एक साधारण से उदाहरण से समझते हैं। सच बताइए जब हमारा बच्चा घर की रोटी या दाल चावल या सब्जी के बजाए मैगी की जिद करता है और हम यह जानते हुए कि हमारे बच्चे की सेहत के लिए मैगी ठीक नहीं है फिर भी हम मैगी खरीदते ही नहीं हैं बल्कि उसे खाने भी देते हैं तो क्या हम अपने मर्जी के राजा बनकर खरीदते हैं? नहीं नहीं ऊपरी तौर पर नहीं

बल्कि जरा गहराई और ईमानदारी से विषय पर सोचिए। अगर आप सोच रहे हैं कि आप अपने बच्चे की जिद के आगे नतमस्तक हो रहे हैं तो माफ कीजिएगा आप गलत हैं। उस कंपनी ने आपके बच्चे को माध्यम बनाकर आपको अपना उत्पाद खरीदने के लिए मजबूर कर दिया। यह तो एक उदाहरण है। सोचेंगे तो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में ऐसे कितने ही उदाहरण हमें मिल जाएंगे, लेकिन बात सिर्फ इतनी-सी नहीं है कि उपभोक्तावाद के इस दौर में हमारी खाने पीने की आदतें प्रभावित हो रही हैं। बात इससे काफी आगे बढ़ चुकी है।

क्योंकि बात अब एक व्यक्ति के तौर पर, एक परिवार के तौर, पर एक समाज के तौर पर हमारे मूल्यों, हमारी नैतिकता, हमारे व्यक्तित्व, हमारे आदर्शों के कभी "कूल" बनने के नाम पर तो कभी "चिल आउट" के नाम, पर कभी "अपने लिए जीने" के नाम पर तो कभी "हाँ मैं परफेक्ट नहीं हूँ" के नाम पर हमारे विचारों के प्रभावित होने तक पहुंच गई है। परिणामस्वरूप सदियों से चली आ रही हमारी पारिवारिक और सामाजिक संरचना के मूल विचार भी प्रभावित होने लगे हैं, क्योंकि बाजारवाद के इस दौर में हम एक उपभोक्ता के रूप में उत्पाद बनाने वाली कंपनियों के लिए पैसा कमाने का एक साधन मात्र हैं। एक बच्चे के रूप में, एक युवा के रूप में, एक पुरुष के रूप में एक महिला के रूप में एक बुजुर्ग के रूप में हम उनके लिए एक टारगेट कस्टमर से अधिक कुछ नहीं हैं। अपने लक्जरी उत्पादों को बेचने के लिए किसी समाज को विलासिता की ओर आकर्षित करना बाजारवाद की स्ट्रेटेजी का हिस्सा होता है। कोई आश्चर्य नहीं आज इस तरह के वाक्य बहुत प्रचलन में हैं कि हाँ मैं परफेक्ट नहीं हूँ" या "मैं जैसी हूँ या जैसा हूँ मुझे वैसे ही स्वीकार करो"। आज की पीढ़ी तो इन वाक्यों के प्रति आकर्षित भी होती है और सहमत भी, लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि जो बाजारवाद अपने भौतिक सुखों को देने वाली वस्तुओं को खरीदने के लिए हमें "ये दिल मांगे मोर" या "डर के आगे जीत है" जैसे संघर्षशील बनने का जज्बा देता है, वो ही बाजारवाद जब बात हमारे व्यक्तित्व के विकास की आती है, हमारे नैतिक उत्थान की आती है, हमारे भीतर पारिवारिक या सामाजिक मूल्यों के विकास की आती है तो जो "मैं जैसा हूँ या जैसी हूँ वैसा ही स्वीकार करो" या फिर "मैं एक साधारण मनुष्य हूँ भगवान नहीं" जैसे विचार परोस देता है। वो बाजारवाद जब बच्चों और माँ से सम्बंधित कोई उत्पाद बेचता है तो अपने विज्ञापन में महिला को एक "परफेक्ट मॉम" से लेकर "सुपर मॉम" तक के रूप में दर्शाता है लेकिन वही बाजारवाद जब अपना कोई विलासितापूर्ण उत्पाद बेचता है तो महिला के लिए "हाँ मैं परफेक्ट नहीं हूँ" या फिर "इट्स ओके नॉट टू बी परफेक्ट" का विचार देता है। अब आप कहेंगे कि इन वाक्यों में क्या दिक्कत है। ■

भारत के महान योद्धा शिवाजी महाराज

बम्बई के दक्षिण में कोंकण, तुंगभद्रा नदी के पश्चिम में बेळगांव तथा धारवाड़ का क्षेत्र, मैसूर, वैलारी, त्रिचूर तथा जिंजी पर अधिकार करने के बाद बिगड़ती तबियत के कारण 3 अप्रैल 1680 को मात्र 50 साल की उम्र में शिवाजी का देहान्त हो गया। उनकी मृत्यु के बाद भी उनके वफादारों ने उनके साम्राज्य को संभाले रखा और मुगलों, अंग्रेजों से उनकी लड़ाई जारी रही। आंग्ल शासकों से मुक्ति के लिए लड़ी गई भारतीय स्वाधीनता संग्राम के काल तक शिवाजी एक नायक के रूप में स्मरण किए जाने लगे।

अविनाश वर्मा

मराठा साम्राज्य के संस्थापक व प्रथम शासक छत्रपति शिवाजी महाराज (1630-1680) का जन्म 19 फरवरी, 1630 को शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। उनके पिता अहमदनगर सल्तनत के प्रभावशाली जनरल मालोजीराजे के पुत्र शहाजीराजे भोंसले अप्रतिम शूरवीर और एक शक्तिशाली सामंत थे। शहाजीराजे बीजापुर सुल्तान के दरबार में बहुत प्रभावशाली राजनेता थे। शिवाजी की माता का नाम जीजाबाई था, जो जाधवराव कुलोत्पन्न एक असाधारण प्रतिभाशालिनी व अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। शिवाजी महाराज के चरित्र पर उनके माता-पिता का बहुत प्रभाव पड़ा। उनका बचपन उनकी माता के मार्ग दर्शन में बीता। माता जीजाबाई बचपन में शिवाजी को वीरता की कहानियां सुनाया करती, जिसका प्रभाव भी शिवाजी पर पड़ा। शिवाजी के अग्रज का नाम सम्भाजीराजे था, जो अधिकतर समय अपने पिता शहाजीराजे भोसले के साथ ही रहते थे। शहाजीराजे की दूसरी पत्नी तुकाबाई मोहिते थीं। उनसे एक पुत्र हुआ जिसका नाम व्यंकोजीराजे था। शिवाजी के गुरु स्वामी रामदास ने शिवाजी की निर्भीकता, अन्याय से जूझने की सामर्थ्य और संगठनात्मक योगदान का भरपूर विकास किया। सभी कलाओं में माहिर शिवाजी शिवाजी बचपन से ही निडर व शूरवीर थे। शिवाजी ने बचपन में ही राजनीति एवं युद्ध की शिक्षा ली थी, और बाल्यकाल से ही वे उस युग के वातावरण और घटनाओं को भली प्रकार समझने लगे थे। बचपन में ही उनके हृदय में स्वाधीनता की लौ प्रज्ज्वलित हो गयी थी। उन्होंने कुछ स्वामिभक्त साथियों का संगठन बनाना शुरू कर दिया। उन्होंने मात्र 18 वर्ष की उम्र में मराठा सेना बनाकर स्वत्रंत मराठा राज्य बनाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया। शिवाजी ने अपने 2000 की सैनिकों की संख्या को शीघ्र ही बढ़ाकर 10000 कर लिया। शिवाजी का विवाह 14 मई 1640 में सइबाई निंबाळकर (सई भोसले) के साथ लाल महल, पुणे में हुआ था। सई भोसले शिवाजी की पहली और प्रमुख पत्नी तथा अपने पति के उत्तराधिकारी सम्भाजी की मां थीं। देश की राजनीति को साधने के लिए शिवाजी ने कुल 8 विवाह किए थे। शिवाजी की पत्नियों के नाम सईबाई निंबालकर (सन्तान-सम्भाजी, रानूबाई, सखूबाई, अंबिकाबाई), सोयराबाई मोहिते (सन्तान-राजाराम, दीपाबाई), सकवरबाई गायकवाड (सन्तान-कमलाबाई), सगुणाबाई शिर्के (सन्तान-(राजकुवरबाई), पुतलाबाई पालकर, काशीबाई जाधव, लक्ष्मीबाई विचारे, गुंवांताबाई इंगले हैं। शिवाजी ने इन वैवाहिक राजनीति के माध्यम से सभी मराठा सरदारों को एक छत्र के नीचे लाने में सफलता प्राप्त की। उस समय बीजापुर का राज्य आपसी संघर्ष तथा विदेशी आक्रमणकाल के दौर से गुजर रहा था। ऐसे साम्राज्य के सुल्तान की सेवा करने के बदले शिवाजी ने मावलों को बीजापुर के खिलाफ संगठित करने का कार्य शुरू किया। पश्चिम घाट से जुड़े मावल प्रदेश के निवासी संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करने के कारण कुशल योद्धा माने जाते थे। इस प्रदेश में मराठा एवं अन्य सभी जाति के लोग मिल-जुलकर रहते थे। शिवाजी ने इन सभी जाति के लोगों को लेकर मावलों (मावळा) नामक संगठन बनाकर सभी को संगठित किया और उनसे सम्पर्क कर समीपस्थ प्रदेशों से परिचित हो गए। मावल युवकों को लाकर उन्होंने दुर्ग निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया। उधर आपसी संघर्ष तथा मुगलों के आक्रमण से परेशान बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह ने बीमार पड़ जाने के कारण अपने बहुत से दुर्गों से अपनी सेना हटाकर उन्हें स्थानीय शासकों या सामन्तों के हाथ सौंप दिया। ऐसे में बीजापुर में अराजकता फैल गई और शिवाजी ने इस अवसर का लाभ उठाकर बीजापुर में प्रवेश कर बीजापुर के दुर्गों पर अधिकार करने का निर्णय लिया। सबसे पहले उन्होंने रोहिदेश्वर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। दूसरी बार में पुणे के दक्षिण -पश्चिम में 30 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित तोरणा के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इसके बाद शिवाजी ने सुल्तान आदिलशाह के पास अपना दूत भेजकर संदेश भिजवाई कि वे पूर्ववर्ती किलेदार की तुलना में बेहतर रकम देने के लिए तैयार हैं, इसलिए यह क्षेत्र उन्हें सौंप दिया जाये। उन्होंने आदिलशाह के दरबारियों को पहले ही रिश्वत देकर अपने पक्ष में कर लिया था। इसलिए दरबारियों ने शिवाजी के पक्ष में सलाह दिया और दरबारियों की सलाह के अनुसार आदिलशाह ने शिवाजी को उस दुर्ग का अधिपति बना दिया। इससे शिवाजी को उस दुर्ग में बहुत सी सम्पति मिली, जिसे उन्होंने दुर्ग की सुरक्षात्मक कमियों को दूर करने में लगा दिया। तत्पश्चात इससे कोई 10 किलोमीटर दूर स्थित राजगढ़ के दुर्ग पर भी शिवाजी ने अधिकार कर लिया। शिवाजी की इस साम्राज्य विस्तारवादी नीति की भनक जब आदिलशाह को मिली, तो वह क्षुब्ध हो उठा। ■

नवीनता-शुभता को लाने वाला वारुणी व्रत

यद्यपि सभी दिन, तिथि, क्षण, मुहूर्त परमात्मा के ही बनाये हुए हैं, लेकिन शुभ मुहूर्त देखकर कोई काम प्रारम्भ अथवा संपन्न किये जाने से अच्छे परिणाम मिलने की लौकिक मान्यता होने के कारण आज इस वैज्ञानिक युग में भी अधिकांश भारतीय मुहूर्त की गणना विद्वान ज्योतिषियों और पंडितों से करवा कर ही कोई शुभ, मांगलिक कार्य करने के लिए कदम आगे बढ़ाते हैं।

अशोक प्रवृद्ध

मान्यता है कि इससे व्यक्ति को अच्छे परिणाम मिलते हैं, वह कार्य ज्यादा फलित होता है, और जीवन में सफलता मिलती है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुभ मुहूर्त दिन की उस शुभ घड़ी को कहा जाता है, जब सौरमंडल में ग्रह, नक्षत्रों की स्थिति जातक अथवा कोई भी शुभ कार्य करने के लिए शुभ फलदायी होती है। यही कारण है कि लोग नवीन, अच्छे, शुभ और मांगलिक कार्य को प्रारम्भ अथवा सम्पन्न करने के लिए ग्रहों और नक्षत्रों की चाल और स्थिति की गणना करने, कराने के बाद मुहूर्त निकाल, निकलवा कर ही कोई निर्णय लेते हैं। मुहूर्त की गणना करने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु नक्षत्र होता है। वैदिक ज्योतिष में अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद और रेवती, कुल 27 नक्षत्र होते हैं। इनमें से कुछ नक्षत्र किसी विशेष कार्यों के लिए शुभ और उपयुक्त माने जाते हैं तो वहीं कुछ नक्षत्रों को किन्हीं विशेष काम को करते समय बचने की सलाह दी जाती है। नक्षत्रों के स्वामी ग्रह होते हैं, और हर ग्रह अलग-अलग नक्षत्रों के स्वामी होते हैं। केतु ग्रह को अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्र का स्वामी माना गया है। उसी प्रकार राहु ग्रह को आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा का स्वामी माना गया है। पौराणिक व ज्योतिषीय मान्यतानुसार किसी विशेष दिन पर किसी नक्षत्र के आने पर कुछ विशेष योग बनते हैं, जिनका उस समय कुछ पृथक व विशेष प्रभाव व्यक्ति अथवा किसी प्रारम्भ की जाने वाली कार्य पर पड़ता है। चैत्र महीने की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन शततारका अर्थात शतभिषा नक्षत्र होने पर वारुणी योग बनता है, जिसमें स्नान करने का फल ग्रहण काल में स्नान करने से अधिक प्राप्त होता है। वारुणी योग को ही वारुणी पर्व अर्थात वारूणी व्रत की संज्ञा दी गई है। वारुणी योग चैत्र माह में बनने वाला एक बहुत ही पुण्य फल देने वाला महायोग होता है। ज्योतिष शास्त्र में वारुणी योग को अत्यंत दुर्लभ और शुभ प्रभाव वाला माना गया है। वारुणी योग का समय एक अत्यंत ही शुभ एवं उत्तम गति प्रदान करने वाला समय होता है। इस वर्ष 2023 में 19 मार्च रविवार को वारुणी योग बनेगा। यह भारतीय पंचांग का एक अत्यंत ही पावन शुभ समय मुहूर्त भी है। यह अबूझ मुहूर्त के महत्व की भांति शुभ मुहूर्तों में शामिल है। यही कारण है कि बिना मुहूर्त देखे अथवा मुहूर्त का विचार किये ही वारुणी योग के समय पर बहुत से धार्मिक कृत्य किए जाते हैं। यह एक सा समय होता है, जिसका हर क्षण अपने आप में नवीनता और शुभता लाने वाला होता है। इस योग का प्रत्येक क्षण पवित्रता से भरपूर और शुभ दायक माना गया है। वारुणी योग के महत्व के बारे में धर्म सिन्धु आदि ग्रन्थों में वृहत वर्णन किया गया है। उत्तर भारत व दक्षिण भारत सभी ओर इस वारुणी योग की धूम रहती है। संपूर्ण भारत में इस समय की शुभता का अनेकविध वर्णन विभिन्न भाषाओं के ग्रन्थों में प्राप्त होता है। ज्योतिषीय गणनानुसार यह वारुणी योग तीन प्रकार से बनता है, जिसके कारण इसकी महत्ता क्रमशः आगे ही बढ़ती जाती है। यह योग माह, नक्षत्र, दिन और शुभ योगों के द्वारा ही अलग-अलग रुप में शुभता को प्रकट करता है। यही कारण है कि वारुणी योग के सम्बन्ध में कई प्रकार के विचार भी मिलते हैं। पौराणिक ग्रन्थों में वारुणी योग के सम्बन्ध में अंकित विवरणियों में वर्ष में फाल्गुन माह, चैत्र माह, मार्गशीर्ष माह में पड़ने वाले महावारुणी योग के विषय में भी वर्णन प्राप्त है। पौराणिक व खगोलीय मांताओं के अनुसार चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को शततारका अर्थात शतभिषा नक्षत्र होने के कारण यह वारुणी योग बनता है। चैत्र माह के ही कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन शतभिषा नक्षत्र के होने और शनिवार का दिन होने पर महावारुणी योग बनता है। इसी प्रकार चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र, शनिवार और शुभ नामक योग हो तो महावारुणी योग बनता है। वारुणी योग के सम्बन्ध में धर्म सिन्धु नामक ग्रन्थ में कहा गया है-

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी शततारका नक्षत्रयुता,
वारुणी संज्ञका स्नानादिना ग्रहणादिपर्वतुल्य फलदा।

अर्थात- जब चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन शततारका अर्तात शतभिषा नक्षत्र हो तो वारुणी योग बनता है, जिसमें स्नानादि का फल ग्रहण काल में स्नान से ज्यादा मिलता है।

भविष्य पुराण के अनुसार चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी यदि शनिवार या शतभिषा से युक्त हो तो वह महावारुणी पर्व कहलाता है। इस समय पर किया गया पवित्र नदियों में स्नान, दान एवं श्राद्ध कार्य अक्षय फल देने वाला होता है। भविष्य पुराण, नारद पुराण, स्कन्द पुराण, देवी भागवत पुराण आदि पुराणों में वारुणी योग के बारे में बताते हुए इस योग में स्नान, पूजा आदि के महत्व के सन्दर्भ में भी विस्तृत वर्णन किया गया है। वारुणी योग में प्रातःकाल स्नान करने के बाद श्रीविष्णु और तत्पश्चात भगवान शिव का पूजन कर सूर्य नमस्कार करना चाहिए। इसके साथ राधा-कृष्ण का पूजन, तुलसी, पीपल, आंवला वृक्ष का पूजन करना चाहिए। प्रातःकाल तुलसी के समक्ष दीपक जलाना चाहिए। रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता, भगवत पुराण आदि ग्रन्थों का पाठ करना चाहिए। वारुणी योग में भजन कीर्तन कथा करना उत्तम माना गया है। नदी, तालाब अथवा घर के बाहर दीपदान भी करना चाहिए। वारुणी योग में स्नान, दान के साथ-साथ पूजा उपासना, जप इत्यादि करने वाले व्यक्ति को अक्षय पुण्य फलों की प्राप्ति होने की मान्यता होने के कारण इस पावन अवसर पर दिन भर व्रत धारण करके रात्रि में तारों को अर्ध्य देकर भोजन करने की परम्परा भी रही है। इस दिन स्नान, दान, पूजन करने, धार्मिक उपदेश सुनने का अत्यंत ही शुभ फल बताया गया है। इस दिन को कुम्भ अथवा गंगा स्नान के लिए बहुत ही शुभ माना जाता है। स्नान, पूजन, दान करने के साथ ही इस संपूर्ण योग में तप करने का भी विधान बताया गया है। मौन साधना और ध्यान का भी इस समय पर बहुत ही शुभ महत्व होता है। इस समय में नक्षत्र और शुभ योग का संगम हो तो महावारूणी का समय होता है। यह समय स्नान के लिए अत्यंत ही शुभदायक माना गया है। समस्त नक्षत्रों का ध्यान करते हुए स्नान भी अपना विशेष फलदायी प्रभाव देता है। पवित्र नदी, सरोवर या कुंड में स्नान करके नक्षत्र आराधना करने से सुख, स्वास्थ्य लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होती है। स्नान, दान और संयम का पालन करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। तीर्थाटन के समान शुभफल की प्राप्ति होती है। इस समय पर सामर्थ्य अनुसार और शुद्ध मन से किया गया दान अक्षय होता है। इस दिन के स्नान, तप को मोक्ष प्रदान करने वाला कहा गया है। दान और जाप करने से स्वर्ग के द्वार खुलते हैं। पाप कर्म समाप्त होते हैं। गंगा स्नान, दीप दान, हवन, यज्ञ और विभिन्न अनुष्ठान आदि करने से पाप और ताप का शमन होता है। इस दिन किए जाने वाला अन्न,धन और वस्त्र दान का शुभता देने वाला है। मान्यता है कि वारुणी व्रत में लक्ष्मीपति विष्णु भगवान को प्रसन्न करने के लिए व्रत का संकल्प लेकर सुबह सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर भगवान की पूजा अर्चना षोड़षोपचार या पंचोपचार विधि से पूजा अर्चना करने के बाद श्री परमात्मने नमः मंत्र का जाप किये जाने से भक्त को जीवन में सभी सुख, ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। इस दिन भगवान विष्णु और भोलेशंकर शिव की पूजा, अभिषेक से मोक्ष की प्राप्ति होती है। वारुणी योग में किए गए यज्ञ का फल हजारों यज्ञों के समान होता है। ■

मान्यता है कि वारुणी व्रत में लक्ष्मीपति विष्णु भगवान को प्रसन्न करने के लिए व्रत का संकल्प लेकर सुबह सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर भगवान की पूजा अर्चना षोड़षोपचार या पंचोपचार विधि से पूजा अर्चना करने के बाद श्री परमात्मने नमः मंत्र का जाप किये जाने से भक्त को जीवन में सभी सुख, ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं।

गर्भावस्था में इन चीजों के सेवन से पैदा होगा हेल्दी बच्चा

प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा हरी सब्जियों का सेवन करना चाहिए। जिससे कि उनके गर्भ में पल रहे बच्चे को भी भरपूर पोषण मिल सके। भरपूर पोषण मिलने से स्वस्थ बच्चे का जन्म होता है। साथ ही यह बच्चे के दिमागी विकास के लिए भी आवश्यक होता है।

अनन्या मिश्रा

पालक

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि हरी सब्जियों में सारे पोषक तत्व होते हैं। जिनमें से हरी सब्जी के तौर पर पालक का सेवन काफी फायदेमंद होता है। बता दें कि पालक में फाइबर, प्रोटीन, विटामिन्स और मिनरल्स पाए जाते हैं। पालक का सेवन बच्चे के विकास और बेहतर स्वास्थ्य के लिए काफी आवश्यक होता है। इसलिए प्रेग्नेंट महिलाओं को पालक का सेवन जरूर करना चाहिए। इसके सेवन से अजन्मे बच्चे का स्वास्थ्य और दिमाग तेज होता है।

अंडा

अंडा भी पोषण से भरपूर होता है। अंडे में प्रोटीन के साथ ही मिनरल्स और विटामिन भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। अंडे में विटामिन डी की अधिक मात्रा पाई जाती है। अजन्मे बच्चे के दिमाग के विकास के लिए विटामिन डी महत्वपूर्ण है। इसलिए प्रेग्नेंट महिलाओं को अंडे का सेवन करना चाहिए।

बादाम

बादाम में पाए जाने वाले काफी सारे पोषक तत्व गर्भवती महिलाओं के लिए काफी लाभकारी होता है। बादाम खाने से महिला के गर्भ में पल रहे बच्चे का दिमाग तेज होता है। क्योंकि बादाम में काफी सारे न्यूट्रिएंट्स मिलते हैं। इसलिए गर्भावस्था के दौरान प्रेग्नेंट महिलाओं को बादाम का सेवन करना चाहिए।

ताजे फल

फल सेहत के लिए काफी फायदेमंद होते हैं। ताजे फलों से विटामिन प्राप्त होता है। प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाओं को केला, संतरा, आम, अंगूर और सेव आदि का सेवन करना लाभकारी होता है। महिलाएं चाहे तो फलों का जूस बनाकर भी पी सकती हैं।

दही

प्रेग्नेंट महिलाओं और बच्चे की सेहत के लिए दही का सेवन फायदेमंद होता है। दही में बहुत सारा विटामिन सी के साथ ही प्रोटीन पाया जाता है। नियमित दही के सेवन से प्रसव के बाद स्वस्थ और विकसित बच्चे का जन्म होता है।

दूध

बच्चा हो या बड़ा, हर किसी के लिए दूध का सेवन फायदेमंद बताया जाता है। एक गिलास दूध में भरपूर पोषक तत्व पाए जाते हैं। प्रेग्नेंट महिला और उनके बच्चे के लिए भी दूध काफी लाभकारी होता है। दूध पीने से शरीर को ताकत मिलने के साथ ही बच्चे के दिमाग का विकास भी होता है। ■

डिस्क्लेमर: इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह के तौर पर न लें। किसी भी बीमारी के लक्षणों की स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

बढ़ती उम्र में स्किन को रखना है जवां और टाइट तो डाइट में शामिल करें ये फूड्स

नीतू शर्मा

सबसे पहले आपकी स्किन पर आपकी बढ़ती उम्र का इशारा नजर आता है। बढ़ती आयु के साथ ही चेहरे पर ढीलापन और झुर्रियों की समस्या आने लगती है। इसके अलावा आपकी बढ़ती उम्र ओपेन पोर्स और फाइन लाइन्स को भी साफ दिखाते हैं। स्मोकिंग, पॉल्युशन और सूरज से निकलने वाली यूवी रेज स्किन में मौजूद कोलेजन को कम करता है। जिसके कारण हमारी त्वचा जल्दी डैमेज होने लगती है। हालांकि इस समस्या को कम करने के लिए भी आज के दौर में कई तकनीकी हैं। लेकिन इनका असर सिर्फ कुछ समय के लिए ही होता है। अगर आप नेचुरल तरीके से इन समस्याओं का इलाज करना चाहते हैं तो आपको डाइट में कुछ चीजों को शामिल करना चाहिए। यह आपकी त्वचा के लिए फायदेमंद हो सकता है। आइए जानते हैं यह फूड्स कौन-कौन से हैं।

विटामिन सी

विटामिन सी हमारी त्वचा के लिए काफी फायदेमंद होता है। इसलिए अपनी डाइट में विटामिन सी से भरपूर चीजों को शामिल करना चाहिए। नींबू, आंवला, खट्टे फल, संतरा और सब्जियों में विटामिन सी की भरपूर मात्रा पाई जाती है। साथ ही यह एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होते हैं। यह आपकी त्वचा को सूर्य की किरणों से होने वाले नुकसान से भी बचाता है। इसके अलावा फाइन लाइन्स, झुर्रियां, टैनिंग और पिंपल्स आदि के निशानों को भी कम करने में सहायक होता है। इन सबके सेवन से आपकी त्वचा भी जवां दिखती है।

पनीर, टोफू और दही

हमारे बेहतर स्वास्थ्य और अच्छी स्किन के लिए आवश्यक है कि हमारी डाइट में सभी तरह के विटामिन, प्रोटीन और मिनरल्स शामिल होने चाहिए। हमारी त्वचा के लिए प्रोटीन काफी लाभकारी होता है। साथ ही निश्चित मात्रा में प्रोटीन के सेवन से स्किन हेल्दी और ग्लोइंग बनती है। साथ ही स्किन को टाइट करने में मदद करता है। इसके लिए आप अपनी डाइट में दूध, दही, पनीर और टोफू आदि को शामिल करना चाहिए। इसके नियमित और सीमित सेवन से झुर्रियां आदि भी कम होती हैं।

हरी सब्जियां

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि हमारे स्वास्थ्य के लिए हरी सब्जियां कितनी फायदेमंद होती है। हरी सब्जियों का सेवन त्वचा में नेचुरल ग्लो लाने और बढ़ती उम्र के लक्षणों को कम करने में सहायक होती हैं। बता दें कि हरी सब्जियों में जिंक, सेलेनियम और विटामिन सी जैसे कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। यह पोषक तत्व स्किन को टाइट रखने में मदद करते हैं। इसलिए अपनी डाइट में गोभी, शिमला मिर्च, ब्रोकली और टमाटर आदि को जरूर शामिल करें।

हल्दी और ग्रीन टी

हल्दी और ग्रीन टी का सेवन न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य के लिए बल्कि हमारी स्किन के लिए भी काफी फायदेमंद होता है। इनमें एंटीऑक्सीडेंट और एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं। वहीं ग्रीन टी में पॉलीफेनोल्स पाया जाता है। यह चीजें हमारी त्वचा के लिए काफी फायदेमंद है। हल्दी और ग्रीन टी स्किन में पड़े निशानों और झुर्रियों को कम करने का काम करती है। साथ ही हल्दी का उपयोग हमारी त्वचा को अंदर से हेल्दी बनाने का काम करता है।

ओमेगा-3

हमारी स्किन के लिए ओमेगा-3 जरूरी पोषक तत्वों में से एक है। इसलिए अपनी डाइट में ओमेगा-3 से भरपूर चीजों का सेवन करना चाहिए। इसके लिए आप एवोकाडो, मछली, अखरोट और सनफ्लॉवर सीड्स आदि का सेवन कर सकते हैं। यह हमारी त्वचा पर आने वाली सूजन को कम करने का काम करता है। साथ ही यह आपकी स्किन को अंदर से मॉइश्चराइज करने का काम करता है। ओमेगा-3 में पाया जाने वाला प्रोटीन, जिंक और विटामिन ई आदि त्वचा को जवां और ग्लोइंग बनाने में मदद करता है। ■

सिक्किम घूमने का बना रहे हैं प्लान तो इन खूबसूरत जगहों को करें एक्सप्लोर

मनोज कुमार

अगर आप भी कहीं घूमने का प्लान कर रहे हैं तो सिक्किम आपके लिए बेस्ट ऑप्शन हो सकता है। बता दें कि यहां की खूबसूरत वादियों को देखकर आपका वापस आने का मन नहीं करेगा। हिमालय की गोद में बसा सिक्किम में प्राकृतिक सुंदरता देखने को मिलेगी। देश की टॉप ट्रैवल डेस्टिनेशन्स में नॉर्थ ईस्ट के कई राज्यों का नाम गिना जाता है। नॉर्थ ईस्ट की ट्रिप प्लान करने वाले अधिकतर लोग सिक्किम घूमना नहीं भूलते हैं। वैसे तो सिकिम्म में घूमने के लिए कई खूबसूरत जगहें हैं। ऐसे में अगर आप भी सिक्किम घूमने का प्लान बना रहे हैं तो इन जगहों को एक्सप्लोर करना न भूलें। इन खूबसूरत जगहों पर घूमने के बाद आपका वापस आने का दिल नहीं करेगा। हिमालय की गोद में बसा सिक्किम भले ही एक छोटा सा राज्य है। लेकिन यहां की खूबसूरत वादियों से लेकर नेचर की खूबसूरती आपका मन मोह लेगी। आज इस आर्टिकल के माध्यम से हम आपको सिक्किम की कुछ शानदार जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं। आइए जानते हैं उन जगहों के बारे में...

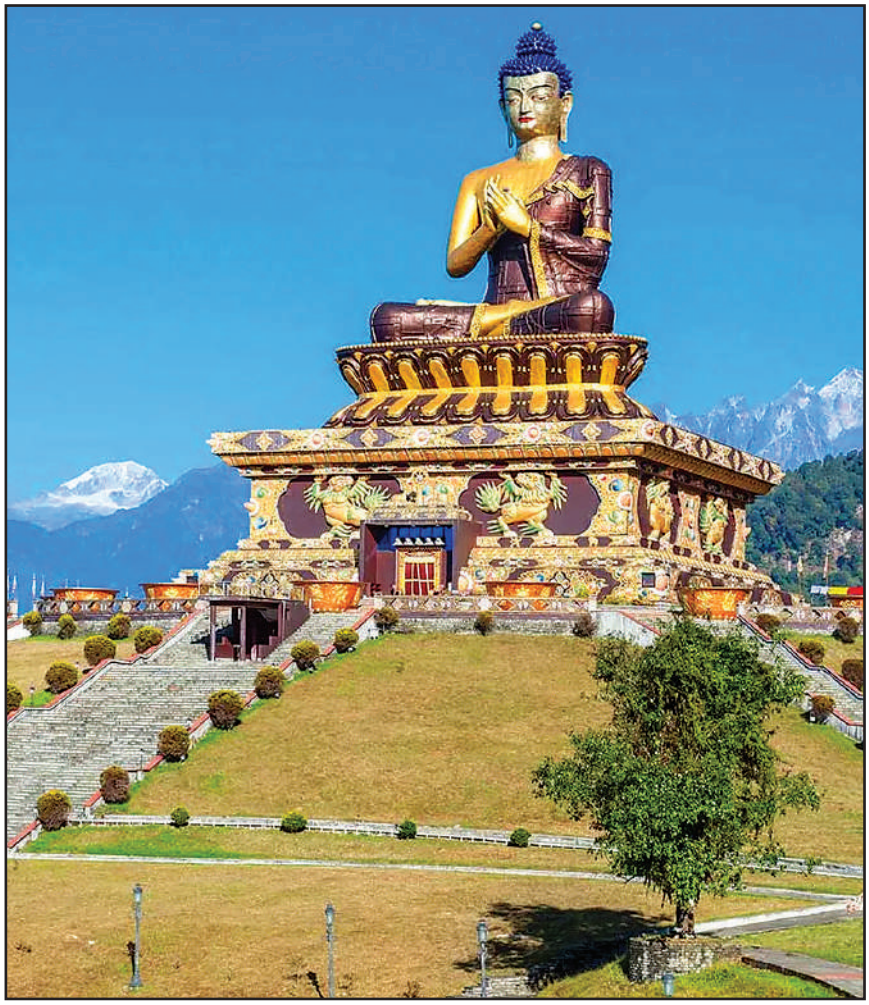

त्सोमगो झील की सैर

अगर आप सिक्किम में किसी रोमांटिक जगह पर घूमना चाहते हैं तो त्सोमगो लेक आपके लिए बेस्ट ऑप्शन होगा। त्सोमगो लेक सिक्किम की राजधानी गंगटोक से महज 40 किलोमीटर दूर है। यह लेक 12,400 फीट की ऊंचाई पर मौजूद है। इस लेक को चांगु झील के नाम से भी जाना जाता है। बता दें कि सर्दियों में यह लेक पूरी तरह से जम जाती है। वहीं बसंत ऋतु के मौके पर इस लेक की सुंदरता कई खूबसूरत फूलों से खिल उठती है।

जुलुक का दीदार

जुलुक का दीदार करने के लिए सिक्किम की राजधानी गंगटोक से लगभग 3 घंटे का सफर तय करना होता है। इस दौरान रास्ते में 32 हेयरपिन मोड़ आपकी यात्रा को अधिक शानदार बना सकते हैं। वैसे तो जुलुक सिक्किम का एक छोटा सा और काफी खूबसूरत गांव है, लेकिन यहां से 11 फीट की ऊंचाई पर स्थित थुंबी व्यू प्वाइंट कंचनजंघा चोटी अपने खूबसूरत नजारों के लिए फेमस है। जुलुक की ट्रिप के दौरान कपुप लेक या हाथी झील का भी दीदार कर सकते हैं।

पेलिंग की ट्रिप

गंगटोक से लगभग 140 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पेलिंग भी घूमने के लिए बेस्ट जगह है। यह जगह रोमांच के लिए फेमस है। पेलिंग का सफर एडवेंचर लवर्स के लिए बेस्ट हो सकता है। यहां पर एडवेंचर के शौकीन लोग रॉक क्लाईंबिग, ट्रेकिंग, कयाकिंग, माउंटेन बाइकिंग, रिवर राफ्टिंग जैसी कई एक्टिविटी कर सकते हैं। इसके अलावा सांगचोएलिंग मठ रिम्बी वॉटरफॉल स्काई वॉक और सेवारो रॉक गार्डन का दीदार कर अपने सफर को शानदार और रोमांचक बना सकते हैं।

रंवगला

रंवगला सिक्किम का खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह समुद्र तल से लगभग 8000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। हिमालय पर्वतों से घिरा रंवगला मैनम और तेंडोंग हिल्स टॉप पर मौजूद है। बता दें कि रंवगला गंगटोक से लगभग 63 किलोमीटर की दूर स्थित है। नेचर लवर्स के लिए रंवगला की सैर बेस्ट हो सकती है। यहां से आप ग्रेटर हिमालय के मनमोहक नजारों को बेहद नजदीक से देख सकते हैं। ■

तौबा ये मतवाली चाल

अरुण अर्णव खरे

जिंदगी में चाल का विशेष महत्व है। बहुतों का मानना है कि व्यक्ति की चाल उसके व्यक्तित्व का आइना होती है यानि व्यक्ति के विकास में चाल अहम रोल निभाती है। बचपन में "गौरी चलो न हंस की चाल" और "कान में झुमका, चाल में ठुमका" जैसे गीतों को सुनते हुए मुझे भी जीवन में चाल का महत्व समझ में आ गया था। यह तो बहुत बाद में समझ में आया कि चाल कितना करिश्माई शब्द है। आम और राजनीति के खास लोगों के लिए चाल का मतलब अलग-अलग होता है। जहाँ चाल आम लोगों के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है वहीं राजनीति में चाल नेताओं का अस्तित्व स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाती है। चाल से आम आदमी को पहचाना जा सकता है लेकिन नेताओं की चाल समझना क्रिकेट की डकवर्थ-लुइस गणना प्रक्रिया को समझने जितना ही कठिन है। आम आदमी की चाल से शायद ही किसी को फर्क पड़ता है लेकिन नेता की एक चाल सरकार गिराने जैसे "फौरिया" से लेकर सरकार को बचाने जैसे दूरगामी परिणाम तक देती है। आम आदमी को कोई चालबाज कहे तो वह शर्म से आँखें चुराने लगता है लेकिन यही शब्द नेता का सीना चौड़ा कर देता है।

बटुक जी आम आदमी हैं। बचपन के दिनों में उनकी चाल में एक खास तरह की बेफिक्री थी। यौवन की देहलीज पर कदम रखा तो चाल में थोड़ी मस्ती आने लगी। गर्ल्स कॉलेज के सामने से गुजरते तो चाल में ठहराव आ जाता और हाथ ढोलक बजाने वाले अंदाज में अंग्रेजी के अक्षर वी के समान आकार लेने लगते। शादी हुई तो चाल में संजीदगी आ गई। आजकल कहीं मिल जाते हैं तो अपनी ढीली-ढाली चाल से दूर से ही पहचान में आ जाते हैं। जिंदगी के जंझावातों ने उनकी चाल बदल दी है।

दूसरी और मुरारी जी हैं। युवा काल से ही राजनीति में रुझान रखते थे। आज उनकी गजकाया को देखकर आप जरा भी अंदाज नहीं लगा सकते कि वह हजारों तरह की चालें एक ही मुद्रा में चलना जानते हैं। उनकी चालों को देख-सुन कर उँगली अपने आप दाँतों के बीच चले जाने को बेताब हो जाती है। उनकी चालें देखकर लोग हतप्रभ रह जाते हैं। आप सोच रहे होंगे कि वह जरूर शतरंज के अच्छे खिलाड़ी रहे होंगे, पर आप गलत हैं। शतरंज से उनका कोई वास्ता नहीं। वह डिब्बे में बंद मोहरों को भी ठीक से नहीं पहचान पाते। पैदल और ऊँट में गच्चा खा जाते हैं। विश्वनाथन आनंद और कास्पारोव का नाम भी नहीं सुना है उन्होंने, लेकिन राजनीति की बिसात पर उन्हें इनसे ज्यादा चालें चलने में महारत हासिल है। वह सड़क पर चलते इंसान, सीमा पर खड़े जवान और बलात्कारी शैतान को भी परिस्थिति अनुसार मोहरा बना लेते हैं। वह कराह को भी वाह में तब्दील करने का हुनर जानते हैं। जो उनकी चाल से नतमस्तक नहीं होता उसे मोहरा बनाकर डिब्बे में बंद करना भी उन्हें बखूबी आता है। वह प्रतिद्वंद्वी के मोहरों को भी अपना बनाने की कला में सिद्धहस्त हैं। शतरंज के विपरीत उन्हें काले मोहरों से खास लगाव है खासतौर पर विपक्षी काले मोहरे उन्हें अति प्रिय हैं। उन मोहरों को वह पल में गोरा चिट्टा बना डालते हैं। उनके हाथों में आकर ये मोहरे प्यादे होकर भी घोड़े की चाल चलने लगते हैं। विरोधी उनकी चाल का तोड़ आज तक नहीं ढूंढ पाए हैं इसीलिए पस्त हुए पड़े हैं। ■

क्या पूरी हो पाई कजरी की आस

कजरी ने धोती और चप्पल संभाल कर रख दी और बेटे को समझा दिया कि कभी शहर जाएंगे तो पहनेंगे। गांव में बड़े लोगों के सामने सदियों से हम छोटी जाति की औरतें चप्पल पहन कर नहीं निकलीं तो अब क्या निकलेंगी।

अपर्णा बाजपेयी

रमेश्वर आज अपनी पहली कमाई से सोमरू के लिए नई धोती और कजरी के लिए चप्पल लाया था। अपनी मां को उस ने कई बार राजा ठाकुर के घर में नई-नई लाल-लाल चप्पलों को ताकते देखा था। वह चाहता था कि उस के पिता भी बड़े लोगों की तरह घुटनों के नीचे तक साफ सफेद धोती पहन कर निकलें, पर कभी ऐसा हो न सका था। कजरी ने धोती और चप्पल संभाल कर रख दी और बेटे को समझा दिया कि कभी शहर जाएंगे तो पहनेंगे। गांव में बड़े लोगों के सामने सदियों से हम छोटी जाति की औरतें चप्पल पहनकर नहीं निकलीं तो अब क्या निकलेंगी। कजरी मन ही मन सोच रही थी कि इन्हीं चप्पलों की खातिर राजा ठाकुर के बेटे ने कैसे उस से भद्दा मजाक किया था और घुटनों से नीचे तक धोती पहनने के चलते भरी महफिल में सोमरू को नंगा किया गया था।

कजरी और सोमरू धौरहरा गांव में रहते थे। सोमरू यानी सोनाराम और कजरी उस की पत्नी। सोमरू कहार था और अपने पिता के जमाने से राजा ठाकुरों यहां पानी भरना, बाहर से सामान लाना, खेत-खलिहानों में काम करना जैसी बेगारी करता था। राजा ठाकुरों की गाली-गलौज, मारपीट जैसे उस के लिए आम बात थी। कजरी भी उस के साथ-साथ राजा ठाकुरों के घरों में काम करती थी। कजरी थी सलीकेदार, खूबसूरत और फैशनेबल भी। काम ऐसा सलीके से करती थी कि राजा ठाकुरों की बहुएं भी उस के सामने पानी भरती थीं। एक दिन आंगन लीपते समय कजरी घर की नई बहू की चमचमाती नई-नई चप्पलें उठा कर रख रही थी कि राजा ठाकुर के बड़े बेटे की नजर उस पर पड़ गई। उस ने कहा, कजरी, चप्पल पहनने का शौक हो रहा है क्या? बोलो तो तुम्हारे लिए भी ला दें, लेकिन सोमरू को मत बताना। हमारी तुम्हारी आपस की बात रहेगी।

तुम्हारे नाजुक पैर चप्पल बिना अच्छे नहीं लगते। सब के सामने नहीं पहन सकती तो क्या हुआ मेरा कमरा है न रात को मेरे कमरे में पहन कर आ जाना। कोई नहीं देखेगा मेरे अलावा। कजरी का मन हुआ कि चप्पल उस के मुंह पर मार दे, पर क्या करती एक भद्दी सी गाली दे कर चुप रह गई। कजरी आंगन लीप कर हाथ धोने बाहर जा रही थी तभी देखा कि राजा साहब सोमरू को बुला रहे थे। सोमरू घर के बाहर झाड़ू लगा रहा था। राजा ठाकुर भरी महफिल के सामने गरजे, अबे सोमरू, बहुत चरबी चढ़ गई है तुझे। कई दिन से देख रहा हूं तेरी धोती घुटनों से नीची होती जा रही है। राजा बनने का इरादा है क्या? जो काम तुम्हारे बाप दादा ने नहीं किया, तुम करने की जुर्रत कर रहे हो? लगता है, जोरू कुछ ज्यादा ही घी पिला रही है और राजा साहब ने सब के सामने उस की धोती खोल कर फेंक दी। भरी सभा में यह सब देख कर लोग जोर-जोर से हंसने लगे। एक गरीब आदमी सब के सामने नंगा हो गया था। सोमरू को तो जैसे काठ मार गया। सोमरू इधर-उधर देख रहा था कि कहीं कजरी उसे देख तो नहीं रही। दरवाजे के पीछे खड़ी कजरी को उसने खुद देख लिया। वह जमीन में गड़ गया।

कजरी दरवाजे की ओट से सब देख रही थी। शरीर जैसे जम सा गया था। वह जिंदा लाश की तरह खड़ी थी। कजरी और सोमरू एक दूसरे से नजरें नहीं मिला पा रहे थे। आखिर क्या कहते? कैसे दिलासा देते? दोनों अंदर ही अंदर छटपटा रहे थे। कजरी ने सोमरू की थाली जरूर लगाई, पर वह रातभर वैसी ही पड़ी रही। दोनों पानी पी कर लेट गए, पर नींद किस की आंखों में थी? उन का दर्द इतना साझा था कि बांटने की जरूरत न थी। कजरी का दर्द पिघल-पिघल कर उस की आंखों से बह रहा था, पर सोमरू वह तो पत्थर की मानिंद पड़ा था। कजरी के सामने बार-बार अपने पति का भरी सभा में बेइज्जत किया जाना कौंध जाता था और सोमरू को कजरी की डबडबाई आंखें नहीं भूल रही थीं। कजरी और सोमरू की जिंदगी यों ही बीत रही थी। बेटे रमेश्वर को उन्होंने जी तोड़ मेहनत-मजदूरी, कर्ज लेकर पढ़ाया लिखाया था। सोमरू चाहता था कि उसके बेटे को कम से कम ऐसी जलालत भरी जिंदगी न जीनी पड़े। जिंदा हो कर भी मुरदों जैसे दिन न काटने पड़ें।

रमेश्वर पढ़ लिखकर एक स्कूल में टीचर हो गया था और शहर में ही रहने लगा था। सोमरू चाहता भी नहीं था कि वह गांव लौटे। उनका बुढ़ापा जैसे तैसे कट ही जाएगा, पर बेटा खुशी और इज्जत से तो रहेगा। सोमरू की एक आस मन में ही दबी थी कि वह और कजरी साथ घूमने जाएं। कजरी अपनी मनपसंद चप्पल पहन कर उस के साथ शहर की चिकनी सड़क पर चले, जो रमेश्वर उस के लिए लाया था। सोमरू अपने मन की आस किसी के सामने कह भी नहीं सकता था और कजरी को तो बिलकुल भी नहीं बता सकता था। कहां खाने के लाले पड़े थे और वह घूमने के बारे में सोच रहा है। जमुनिया ताल के किनारे कजरी एक दिन बरतन धो रही थी। सोमरू भी वहीं बैठा था। उस दिन सोमरू ने अपने मन की बात कजरी को बताई, बुढ़ापा आ गया कजरी, पर मन की एक हुलस आज तक पूरी न कर पाया। चाहता था कि कसबे में चल रहे मेले में दोनों जन घूम आएं। सोमरू एक बार उसे चप्पल पहने देखना चाहता था, जैसे नई ठकुराइन अपने ब्याह में पहन कर आई थीं। रमेश्वर कितने प्यार से लाया था अपनी पहली कमाई से, पर इस गांव में यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। जिंदगी बीत गई। अब जाने कितने दिन बचे हैं। एक बार मेला भी देख लें। कितना सुना है उस के बारे में। यह इच्छा पूरी हो जाए, फिर चाहे मौत ही क्यों न आ जाए, शिकायत न होगी। कजरी को लगा कि सोमरू का दिमाग खिसक गया है। यह कोई उम्र है चप्पल पहन कर घूमने की। सारी जिंदगी नंगे पैर बीत गई। जब उम्र थी तब तो कभी न कहा कि चलो घूम आएं। अब बुढ़ापे में घूमने जाएंगे। उस समय तो कजरी ने कुछ न कहा, पर कहीं न कहीं सोमरू ने उस की दबी इच्छा जगा दी थी।

रात में कजरी सोमरू को खाना खिलाते समय बोली, कहते तो तुम ठीक ही हो। जिंदगीभर कमाया और इस पापी पेट के हवाले किया। कुछ पैसा जोड़ कर रखे थे कि बीमारी में काम आएगा, पर लगता है कि अब थोड़ा हम अपने लिए भी जी लें, खाना कमाना तो मरते दम तक चलता ही रहेगा। पेट ने कभी बैठने दिया है इनसान को भला? दोनों ने अगले महीने ही गांव से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर ओरछा के मेले में जाने की योजना बनाई। पूरे महीने दोनों तैयारी करते रहे। पैसा इकट्ठा किया। कपड़े लत्ते संभाले। गांव वालों को बताया। बेटों को बताया। नाते-रिश्तेदारों को खबर की कि कोई साथ में जाना चाहे तो उन के साथ चले। आखिर कोई संगी-साथी मिल जाएगा तो भला ही होगा। जाने का दिन भी आ गया, पर कोई तैयार न हुआ। गांव से 4 किलोमीटर पैदल जा कर एक कसबा था, जहां से ओरछा के लिए सीधी ट्रेन जाती थी। दोनों बूढ़ा-बूढ़ी भोर में ही गांव से पैदल चल दिए। स्टेशन तक पहुंचते-पहुंचते सूरज भी सिर पर आ गया था। 11 बजे दोनों ट्रेन में खुशी-खुशी बैठ गए। आखिर बरसों की साध पूरी होने जा रही थी। कजरी घर से ही खाना बना कर लाई थी। दोनों ने खाया और बाहर का नजारा देखते-देखते जाने कब सफर पूरा हो गया, पता ही न चला। रात में दोनों एक धर्मशाला के बाहर ही सो गए। अगले दिन सुबह मेले में शामिल हुए। पूरा दिन वहीं गुजारा। कजरी ने एक साथ इतनी दुकानें कभी न देखी थीं। हर दुकान के सामने खड़ी हो कर वह वहां रखे चमकते सामान को देखती और अपनी गांठ में बंधे रुपयों पर हाथ फेरती। दुकान में घुस कर दाम पूछने की हिम्मत न पड़ती। एक दुकान में दुकानदार के बहुत बुलाने पर सोमरू और कजरी घुसे। कजरी वहां रखी धानी रंग की चुनरी देख कर पीछे न हट सकी। सोमरू ने उस के लिए डेढ़ सौ रुपए की वह चुनरी खरीद ली और दुकान से बाहर आ गए। अब सोमरू के पास कुछ ही पैसे बचे थे। वह सोच रहा था कि कजरी के पास भी कुछ रुपए होंगे। उसने पूछा तो कजरी ने हां में सिर हिला दिया। कजरी ने जात बिरादरी में बांटने के लिए टिकुली, बिंदी, फीता, चिमटी के अलावा और भी बहुत सा सामान खरीदा। आखिर वह इतने बड़े मेले में आई थी। पास पड़ोसी, नाते-रिश्तेदार सब को कुछ न कुछ देना था। खाली हाथ वापस कैसे जाती। कजरी आज जब चप्पल पहन कर चल रही थी, सोमरू को रानी ठाकुराइन के गोरे-गोरे महावर सजे पैर याद आ गए। कजरी के पैर आज भी गोरे थे और सुहागन होने के चलते महावर उस के पैरों में हमेशा लगा रहता था। कजरी लाल-लाल चप्पल पहन कर जैसे आसमान में उड़ रही थी। आज उसे किसी के सामने चप्पल उतारने की जरूरत न थी। लोग उसे देख रहे थे और वह लोगों को। सोमरू ने आज घुटनों तक धोती पहनी थी। वह आज इतना खुश था, जितना अपनी शादी में भी न हुआ था। आज 70 बरस की कजरी उस के साथ-साथ पक्की सड़क पर सब के सामने लाल-लाल चप्पल पहने, धानी रंग की चुनरी ओढ़े ठाट से चल रही थी, मानो किसी बड़े घर की नई-नई बहू ससुराल से मायके आई हो। सोमरू आज अपने आप को दुनिया का सब से रईस आदमी समझ रहा था। दोनों घर वापस जाने के लिए स्टेशन आ गए। रात स्टेशन पर ही बितानी थी। ट्रेन सवेरे 5 बजे की थी। दोनों ने पास में बंधा हुआ खाना खाया और वहीं स्टेशन पर आराम करने लगे। सोमरू सुबह टिकट लेने के लिए उठा। कजरी से बोला, पैसे निकाल। टिकट ले लिया जाए। ट्रेन के आने का समय भी हो रहा है। दोनों ने अपने अपने पैसे निकाले और गिनने लगे। टिकट के लिए 40 रुपयों की जरूरत थी और दोनों के पास कुलमिला कर 38 रुपए ही हुए। अब वे क्या करें? दोनों बार बार कपड़े, झोले को झाड़ते, सामान झाड़ झाड़कर देखते, कहीं से 2 रुपए निकल जाएं, पर पैसे होते तब न निकलते। दोनों ऐसे भंवर में थे कि न डूब रहे थे, न निकल रहे थे। धीरे-धीरे लोग उन के आसपास इकट्ठा होने लगे थे। दरअसल, रात को सोमरू ने 2 रुपए का तंबाकू खरीदा था और अब टिकट के लिए पैसे कम पड़ रहे थे। कजरी की आंखों से आग बरस रही थी। उस ने सोमरू को गुस्से में कहा, अब क्या करोगे? टिकट के लिए पैसे कम पड़ गए। अब घर क्या उड़ कर जाएंगे? तुम्हारी तंबाकू की लत ने बेचारा सोमरू क्या करे। जिस दर्द को वह पूरी जिंदगी ढोता रहा, उसने आज इतनी दूर आ कर भी उस का पीछा नहीं छोड़ा था। कभी अपने आसपास लगी भीड़ को देखता, तो कभी अपनी बूढ़ी पत्नी को। सोमरू का मन पछतावे से इस तरह छटपटा रहा था जैसे वह पूरे समाज के सामने चोरी करता पकड़ा गया हो। आज फिर 2 रुपयों ने सब के सामने उसे नंगा कर दिया था। ■

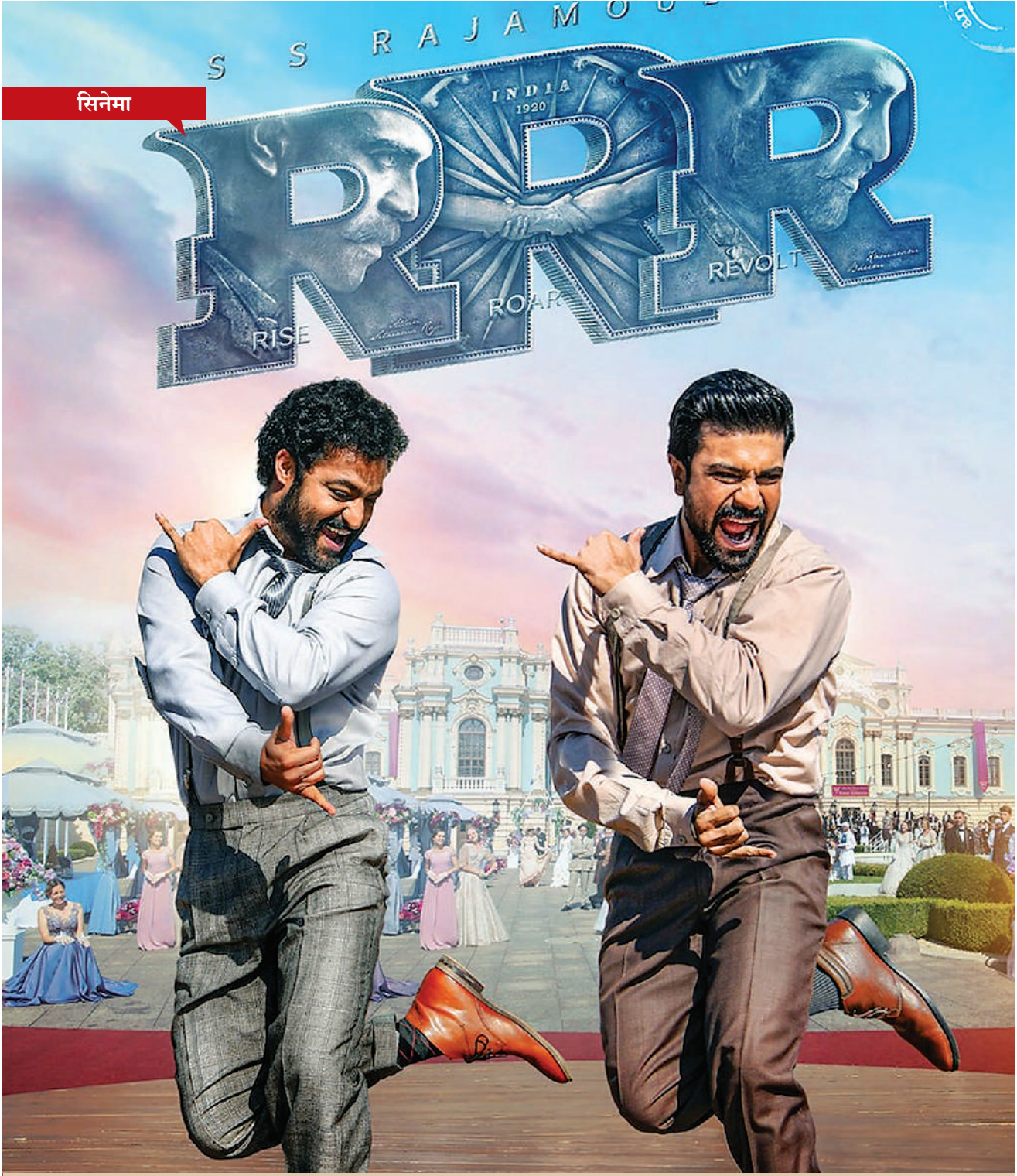

ऑस्कर जीत भारतीय सिनेमा ने सार्थक किया

आजादी का अमृत महोत्सव

सिनेमा जगत का सबसे बड़ा अवार्ड ऑस्कर दुनिया में अपनी एक अलग पहचान रखता है। सिनेमा से जुड़े लगभग सभी कलाकार इस अवार्ड को जीतने की चाहत रखते हैं। दुनिया में वैसे तो सिनेमा के क्षेत्र में सैंकड़ों पुरस्कार दिये जाते हैं।

ललित गर्ग

भारतीय सिनेमा ने एक स्वर्णिम इतिहास रचते हुए पहली बार दो ऑस्कर जीत कर जश्न का अभूतपूर्व अवसर प्रदत्त किया है। आजादी के अमृत महोत्सव की अमृत बेला में 95वें ऑस्कर पुरस्कारों ने भारतीय सिनेमा में विशेष रूप से अमृतकाल को जन्म दिया है। अंतरराष्ट्रीय सिनेमा के सबसे चमकदार भव्य मंच पर एक साथ दो अलग अलग भारतीय फिल्मों ने बाजी मार कर हर भारतीय को गौरवान्वित किया है। तेलुगु फिल्म आरआरआर और डॉक्यूमेंट्री द एलिफेंट विस्पर्स ने दो अलग-अलग श्रेणियों में ऑस्कर पुरस्कार जीत लिए हैं। हालांकि 91 साल के ऑस्कर इतिहास में अब तक किसी भी भारतीय फिल्म को ऑस्कर नहीं मिल सका है। कुछ ऐसे भारतीय कलाकार भानु अथैया, सत्यजीत रे, एआर रहमान एवं गुलजार जरूर रहे हैं, जिन्होंने अपने बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर अकादमी पुरस्कार प्राप्त कर देश को गौरवान्वित करने का मौका दिया है। फिल्म स्लमडॉग मिलियनेयर के लिए ही रेसुल पोक्कुट्टी को ऑस्कर अवॉर्ड मिला था। उन्हें यह पुरस्कार बेस्ट साउंड मिक्सिंग कैटेगरी में दिया गया था। वर्ष 2023 के ऑस्कर अवार्ड ने दुनियाभर में भारतीय फिल्म उद्योग की बढ़ती धमक का अहसास करा दिया है। लेकिन यह अनंत अथाह की एक लहर भर है। फिर भी यह अवसर है विजेताओं को बधाई देते हुए जश्न मनाने का एवं भविष्य में और अधिक ऑस्कर पुरस्कार जीतने के लिये कमर कसने एवं संकल्पित होने का।

आरआरआर फिल्म के गीत नाटू-नाटू को मिली कामयाबी के पीछे छिपी अहमियत का अंदाजा इसे देखते-सुनते हुए हो जाता है। नृत्य निर्देशन और गीत के शब्दों का संयोजन ऐसा अनूठा प्रभाव पैदा करता है, जिसे देखते हुए आम दर्शक भी मंत्रमुग्ध हो जाता है। इसमें दो राय नहीं कि भारतीय सिनेमा की दुनिया में जितनी फिल्में भी बनी हैं, उनमें से कई को देश-विदेश में अलग-अलग मानकों पर बेहतरीन रचना होने का गौरव मिला। जहां तक वैश्विक स्तर पर सिनेमा के सबसे ऊंचा माने जाने वाले आस्कर पुरस्कारों का सवाल है, बहुत कम भारतीय फिल्मों को उसमें कुछ महत्त्वपूर्ण हासिल करने का मौका मिला। लेकिन इस वर्ष के अकादमी पुरस्कारों यानी ऑस्कर में भारत में बनी दो मुख्य कृतियों को जो ऐतिहासिक उपलब्धि मिली है, वह निश्चित रूप से भारतीय सिनेमा प्रेमियों के लिए खुश होने वाली बात है। दूसरी बड़ी कामयाबी के तहत द एलिफेंट विस्पर्स को सबसे अच्छे लघु वृत्तचित्र का तमगा मिला। हालांकि इसी श्रेणी में नामांकित आल दैट ब्रीद्स को अपेक्षित उपलब्धि नहीं मिल सकी। ऑस्कर विजेता द एलिफेंट विस्पर्स को देखना एक विलक्षण एवं अद्भुत अनुभव है, लेकिन इसकी सफलता तब मानी जाएगी जब भारतीय वन्यजीवों के प्रति लगाव एवं संवेदना जगाने वाले और भी कुछ अनूठे काम सामने आयें। वन्य जीवों के प्रति उपेक्षा एवं स्वार्थी-लोभी, खतरनाक इंसानों के हाथों उनकी जान जाने की घटनाएं पर्यावरण एवं सृष्टि असंतुलन का बड़ा कारण है। ऑस्कर के बहाने ही सही यदि हम वन्य जीवों के प्रति जागरूक होते हैं तो यह इस बड़े पुरस्कार मिलने की सार्थकता होगी। सच यह है कि आस्कर 2023 में भारत ने बेहतरीन सिनेमा के मामले में अपने स्तर पर एक अहम इतिहास दर्ज किया है। फिर भी यह अपने आप में एक सवाल है कि हर साल भारत में संख्या के लिहाज से करीब डेढ़ हजार फिल्में बनने के बावजूद उनमें से गिनती की कुछ फिल्मों को ही स्थायी महत्त्व की और वैश्विक स्तर पर प्रशंसा हासिल कर पाने वाली कृतियों के रूप में दर्ज किया जाता है। इससे पहले भारतीय संदर्भों के साथ बनी स्लमडॉग मिलियनेयर, गांधी और लाइफ ऑफ पाइ जैसी फिल्मों को ऑस्कर में अच्छी उपलब्धियां मिलीं थीं। खासतौर पर स्लमडॉग मिलियनेयर में जय हो गाने के लिए एआर रहमान को पुरस्कार मिला था, लेकिन यह भी तथ्य है कि इन फिल्मों को भारतीय निर्देशकों ने नहीं बनाया था। हो सकता है कि ऑस्कर में भारत के हिस्से कम उपलब्धियां आई हों, लेकिन दुनिया भर में इन पुरस्कारों को जिस स्तर का माना जाता है, उसमें कुछ हासिल करना बहुत बड़ी चुनौती होती है। अब इस बार की कामयाबी के बाद उम्मीद की जानी चाहिए वैश्विक स्तर पर टक्कर देने वाली कुछ बेहतरीन फिल्में भी बनेंगी। सिनेमा जगत का सबसे बड़ा अवार्ड ऑस्कर दुनिया में अपनी एक अलग पहचान रखता है। सिनेमा से जुड़े लगभग सभी कलाकार इस अवार्ड को जीतने की चाहते रखते हैं। दुनिया में वैसे तो सिनेमा के क्षेत्र में सैंकड़ों पुरस्कार दिये जाते हैं। लेकिन ऑस्कर को मनोरंजन के क्षेत्र में दिया जाने वाला विश्व का सबसे बड़ा पुरस्कार माना जाता है। इस बार ऑस्कर अवार्ड से भारतीय फिल्म उद्योग को दुनियाभर में नई पहचान मिली है, दुनिया का ध्यान अपनी ओर खिंचा है। सवाल मुंबई फिल्म उद्योग और दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योग के बीच अंतर करने का नहीं है। सवाल भारतीय सिनेमा को सार्थक बनाने का है। दशकों पहले विश्व सिनेमा से भारतीय दर्शकों को इतना भर परिचय था कि हॉलीवुड के बड़े स्टार्स के प्रेम-संबंध और स्कैंडल अखबारों में जगह पा जाते थे या कुछ फिल्मों के नाम सुनाई पड़ जाते थे। विश्व-सिनेमा अब भारतीय दर्शक के जीवन का एक कोना है। यही कारण है कि अब सार्थक सिनेमा की दृष्टि से भारत में प्रगति हो रही है। भारतीय सिनेमा को ऑस्कर में लगातार खनक पैदा करने एवं अपनी उपस्थिति का अहसास कराने के लिये विश्व-सिनेमा के अनुरूप फिल्मों का निर्माण करना होगा, जो एक बिल्कुल अलग परिघटना है। इस सिनेमा में विषयों का अपार विस्तार है, भावों की विस्मित करती दुनिया है, इंसानी संबंधों के गहनतम आख्यान है। इनमें देश हैं, समाज हैं, संस्कृतियों और इतिहास है। यह बड़ा ही विराट लोक है। विश्व इतिहास के चरित्रों और घटनाओं पर बनी स्पार्टाकस, ग्लैडिएटर, नीरो, ट्रॉय, रोम, जैसी वृहत कैनवास पर रची महत गाथाएं हैं, तो समकालीन इतिहास को टटोलती नाजी कैंपों और विश्वयुद्धों की अनगिनत घटनाएं हैं। विश्व साहित्य की शायद ही कोई ऐसी महत्वपूर्ण कृति हो, जिस पर बेहतरीन फिल्म न बनी हो। विश्व सिनेमा आज विश्व संस्कृति का एक नुमाइंदा है, भारत जिसका अभिन्न हिस्सा है, जिसके परिवेश, इतिहास, कला, साहित्य एवं संस्कृति पर दुनिया रोमांचित है। सारी दुनिया आज एक वैश्विक नागरिकता तलाश रही है। इस दृष्टि से सिनेमा की महत्वपूर्ण भूमिका है, भारतीय सिनेमा को इसमें कुछ अनूठे, खोजपूर्ण एवं सार्थक उपक्रम करने चाहिए। अफसोस यह है कि हमारी खोज एवं उपक्रम आर्थिक और उपभोगगत दायरे में सिमटे हैं। हालांकि इसी आर्थिक राह से चलती संस्कृति भी अपने पंख फैलाती सारे विश्व में विचरण कर रही है, पर विश्व साहित्य, किसी पराए संसार के प्रतिनिधि हैं, वास्तव में ऐसा है नहीं। विश्व सिनेमा पर रचे गए पात्र समूची मानवता के दुख-सुख के प्रतिनिधि हैं। वे मनुष्य की सामूहिक पीड़ा और सामूहिक स्वप्नों से मिलकर बने हैं। जैसे फिल्म द एलिफेंट विस्पर्स हाथियों के संरक्षण पर बनी मार्मिक फिल्म है। ऑस्कर का विश्व-सिनेमा, मानव-हृदय का विशाल दर्पण है। हमें अपनी सोच को बदलना होगा। हजारों अविस्मरणीय किरदार और जिंदगी की असंख्य सच्चाइयों को खोलती हजारों कहानियां हमारे अपने मन और जीवन के आयाम बनने के रास्ते में खड़ी हैं। विश्व-सिनेमा के विशाल सागर में ऑस्कर से सम्मानित होने का अवसर सिर्फ एक लहर है, एक छोटी-सी झलक मात्र जो यह संदेश देना चाहती है कि जिंदगी उतनी ही नहीं हैं, जितनी हमने जी या देखी-जानी है। भारतीय जिंदगी के रंग बेशुमार हैं, कला-संस्कृति की अविस्मरणीय धाराएं हैं, अनूठा एवं बेजोड़ इतिहास और उसकी कहानियां भी अनंत-अथाह। भारतीय सिनेमा अपना अजेंडा बदले एवं भारत की खिड़की से विश्व को देखने एवं विश्व को भारत दिखाने की पहल करें तो यही ऑस्कर की सीढ़ियां बन जायेगा। ■

विश्व-सिनेमा के विशाल सागर में ऑस्कर से सम्मानित होने का अवसर सिर्फ एक लहर है, एक छोटी-सी झलक मात्र जो यह संदेश देना चाहती है कि जिंदगी उतनी ही नहीं हैं, जितनी हमने जी या देखी-जानी है। भारतीय जिंदगी के रंग बेशुमार हैं, कला-संस्कृति की अविस्मरणीय धाराएं हैं, अनूठा एवं बेजोड़ इतिहास और उसकी कहानियां भी अनंत-अथाह।

भय-भूत से मनोरंजन का जिन्न निकालकर

रोमांस के तड़के संग मुनाफे का सौदा करता रहा है हिंदी सिनेमा

डॉ. महेश चंद्र धाकड़

हिंदी सिनेमा में तमाम फिल्में हर दौर में प्रदर्शित हुई हैं। अकेले न देखने की इस हिदायत ने मित्रों के साथ, जीवन साथी के साथ या परिवार के साथ देखने के लिए तो मजबूर किया ही है, कुल मिलाकर हिंदी सिनेमा के लिए ऐसे डरावने विषय भी मुनाफे का सौदा बनते रहे हैं। सिर्फ भयभीत करना इनका मकसद नहीं रहा, इसीलिए फिल्म निर्माता-निर्देशकों ने इन फिल्मों की कहानियों में मोहब्बत की चाशनी डालकर गीत-संगीत को यादगार और शानदार बनाया। जिसके चलते कुछ फिल्में बॉक्स ऑफिस पर जबर्दस्त हिट रही हैं। अगर हिट हिंदी हॉरर फिल्मों के कथानक की बात करेंगे तो सिलसिला लंबा हो जायेगा, लिहाजा उनके गीत-संगीत की लोकप्रियता का जिक्र कर उनकी कामयाबी को मुखर करते चलेंगे। हिंदी सिनेमा में इन डरावनी फिल्मों का सिलसिला काफी पुराना है, आजादी से पहले भी और आजादी के बाद भी। आजादी से पहले 1935 में बनी फिल्म 'शादी की रात', 1940 में आयी फिल्म 'अनारबाला', इसके बाद 1946 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'खूनी'। आजादी के बाद भी ये सिलसिला बदस्तूर जारी रहा। 1949 में 'भेड़ी बंगला' और 'महल' नामक फिल्में प्रदर्शित हुईं। बंबई टॉकीज के बैनर तले बनी कमाल अमरोही निर्देशित, अशोक कुमार और मधुबाला अभिनीत फिल्म 'महल' के नक्शब द्वारा लिखे और खेमचंद प्रकाश के संगीत से सजे लता मंगेशकर की आवाज में दो गाने "दिल ने फिर याद किया" और "आयेगा आने वाला" आज भी बहुत ज्यादा सुने जाते हैं। सन 1958 में बिमल रॉय के निर्देशन में फिल्म 'मधुमती' आयी। दिलीप कुमार और बैजयंती माला अभिनीत यह फि ल्म हिट रही। इसमें शैलेंद्र द्वारा लिखित और सलिल चौधरी के संगीत से सजा मुकेश की आवाज में "सुहाना सफर और ये मौसम हसीन" और लता मंगेशकर की आवाज में "आ जा रे परदेसी" गाना खूब लोकप्रिय हुआ। 1962 में बीरेन नाग द्वारा निर्देशित फिल्म 'बीस साल बाद' आयी थी, जो जबर्दस्त कामयाब रही। विश्वजीत और वहीदा रहमान निर्देशित इस फिल्म में शकील बदायूंनी द्वारा लिखित, हेमंत कुमार द्वारा संगीतबद्ध, लता मंगेशकर की आवाज में गीत "कहीं दीप जले कहीं दिल" बहुत लोकप्रिय रहा। 1963 में मोहम्मद हुसैन निर्देशित फिल्म 'शिकारी' आयी। फिल्म में जीएस कोहली के संगीत से सजा, फारुख कैसर द्वारा लिखित लता मंगेशकर और उषा मंगेशकर की आवाज में गाना "तुमको पिया दिल दिया कितने नाज से" बहुत लोकप्रिय हुआ। 1964 में राज खोसला निर्देशित, मनोज कुमार और साधना अभिनीत फिल्म 'वो कौन थी' आयी, इसमें मदन मोहन के संगीत से सजे राजा मेंहदी अली खान द्वारा लिखित तीन गाने लता मंगेशकर की आवाज में लोकप्रिय रहे। "नैना बरसें रिमझिम - रिमझिम...!" "जो हमने दास्तां अपनी सुनाई आप क्यूं रोए...!" तीसरा गीत तो कामयाबी का इतिहास बन गया।

> भूत-प्रेत-जिन्न की कथाओं से साहित्य भरा पड़ा हुआ है, बेशक ये कथा - किस्से लोगों में उत्सुकता जगाते हैं, जेहन में रहस्य - रोमांच पैदा करते हैं। जानने की इंसानी मूल प्रवृत्ति का ही नतीजा है कि इनमें सच्चाई हो या न हो लेकिन इनके विषय में अधिकाधिक जान लेने की इक्षा सदा ही बलवती रही है, इसीलिए इनके प्रति आज वैज्ञानिक युग तक में आम-ओ-खास का आकर्षण बना हुआ ही है। इसी जरूरत को भांप कर हिंदी सिनेमा ने भी ऐसे ही किस्से - कहानियों और उपन्यासों को अपनी विषय वस्तु बनाया है। कल्पनाशीलता और रचनात्मकता से गुंथी हुई ये फिल्में हिंदी सिनेमा के इतिहास में हर दौर में

लग जा गले कि फिर ये हसीं रात हो न हो, शायद फिर इस जनम में मुलाकात हो न हो
हमको मिली हैं आज ये घड़ियाँ नसीब से, जी भर के देख लें हमको करीब से
फिर आपके नसीब में ये बात हो न हो, पास आए कि हम नहीं आओ बार-बार
बाहें गले में डाल के हम रो लें जार-जजार, आँखों से फिर ये प्यार की बरसात हो न हो
शायद फिर इस जनम में मुलाकात हो न हो...!

1965 में राजा नवाथे निर्देशित, मनोज कुमार, नंदा और मेहमूद अभिनीत फिल्म 'गुमनाम' आयी। शंकर-जयकिशन के संगीत से सजा फिल्म में हसरत जयपुरी द्वारा लिखित लता मंगेशकर की आवाज में टाइटल सॉन्ग "गुमनाम है कोई" के अलावा शैलेंद्र लिखित मोहम्मद रफी की आवाज में यह गीत भी बहुत लोकप्रिय हुआ - "अरे काले हैं तो क्या हुआ दिलवाले हैं...!" 1966 में बृज सदानाह के निर्देशन में पृथ्वीराज कपूर, विश्वजीत, शर्मिला टैगोर, मुमताज, शैलेश कुमार अभिनीत फिल्म 'ये रात फिर न आयेगी' प्रदर्शित हुई, जिसमें ओ.पी. नैय्यर के संगीत से सजा, एस.एच. बिहारी लिखित महेंद्र कपूर की आवाज में गीत "मेरा प्यार वो है...!" खासा लोकप्रिय हुआ।

फिल्म 'जानी दुश्मन' के हिट गीत - संगीत ने रच दिया था इतिहास

इस सिनेमा में कुछ फिल्मों को गीत-संगीत के लिए भी हमेशा याद करेंगे। 1979 में राज कुमार कोहली निर्देशित मल्टी स्टारर फिल्म 'जानी दुश्मन' ने हिंदी सिनेमा में कामयाबी के झंडे गाड़ दिए। सुनील दत्त, संजीव कुमार, शत्रुघ्न सिन्हा, विनोद मेहरा, रेखा, नीतू सिंह, रीना रॉय अभिनीत फिल्म में लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के संगीत से सजे और वर्मा मलिक लिखित सभी गीत हिट हुए। मगर सबसे ज्यादा लोकप्रिय हुआ मोहम्मद रफी की आवाज में गीत "चलो रे डोली उठाओ कहार पिया मिलन की ऋतु आयी...!" लता मंगेशकर की आवाज में "सारे रिश्ते नाते तोड़ के आ गयी", किशोर कुमार और अनुराधा पौडवाल की आवाज में "ओ मेरी जान बोल मेरी जान", आशा भौंसले, किशोर कुमार, महेंद्र कपूर की आवाज में "देखा न सैयां हमार जैसा", आशा भौंसले और शत्रुघ्न सिन्हा की आवाज में "ऐसी वैसी न समझ सजना", आशा भौंसले और मोहम्मद रफी की आवाज में "तेरे हाथों में पहनाके चूड़ियां" भी खूब लोकप्रिय रहा है।

नब्बे के दशक और बाद का हॉरर फिल्मों का सिनेमा अलग तरह का

- नब्बे और उसके बाद का हॉरर फिल्मों का सिनेमा एक अलग तरह का देखने को मिलता है। इस दौर का सिनेमा कुछ-कुछ हॉलीवुड फिल्मों से प्रेरित भी प्रतीत होता है। इस दौर की फिल्मों में बोल्ड सीन और ग्लैमरस सीन फिल्म का एक अनिवार्य अंग लगते हैं। नायिका को बिंदास अंदाज में पेश करने में वर्ष 2000 के बाद का सिनेमा और भी कुछ आगे निकल गया प्रतीत होता है। समय के साथ हॉरर फिल्मों में तकनीक का उपयोग तो बढ़ता ही गया, मगर खौफनाक दृश्यों के साथ उत्तेजक दृश्यों को डालकर कामयाबी का नया मंत्र खोजने की कवायदें भी जारी रहीं।
- हिंदी सिनेमा के नब्बे के दशक पर गौर करें तो हॉरर फिल्मों में 1990 की बंद दरवाजा, कफन, शैतानी इलाका, 1991 की हाउस नंबर-13, आखिरी गाल, खूनी रात, खूनी पंजा, रूहानी ताकत, 1992 की जुनून रात, 1993 की महाकाल, 1996 की पापी गुड़िया, 1997 की भयानक पंजा, 1998 की खोफनाक महल, 1999 की खूनी इलाका, निषिद्ध क्षेत्र, चांडाल आत्मा, खोपडीः खोपड़ी, ड्रेकुला नामक फिल्में हैं। इस दशक में तुलसी रामसे की फिल्मों ने खासी चर्चा बटोरी। लेकिन महेश भट्ट और विक्रम भट्ट ने इन फिल्मों के फॉर्मेट को आखिरी में बदल डाला।
- इसी बदलाव का उदाहरण है वर्ष 1992 की फंतासी हॉरर फिल्म 'जुनून' जिसमें नायक राहुल रॉय का चेहरा एक श्राप के चलते हर पूर्णिमा की रात बाघ के चेहरे में तब्दील हो जाता है और एक वक्त बाद फिर से अपने पुराने स्वरूप में आ जाता है। राहुल रॉय, पूजा भट्ट, अविनाश बधावन अभिनीत इस फिल्म में कथानक संग गीत-संगीत भी सराहा गया। नदीम-श्रवण के संगीत में सजा समीर का लिखा विपिन सचदेवा और अनुराधा पौडवाल की आवाज में गीत "वक्त कटे नहीं कटता है तेरे बिना मेरे साजन" और "मिलते-मिलते हसीं वादियों में दिल को गया तो क्या करोगे" लोकप्रिय हुआ। इसी फि ल्म में संतोषानंद के लिखे गीत "जो प्यार कर गए" को कुमार सानू और अनुराधा पौडवाल ने अलग-अलग एकल में गाया है। सुरेंद्र साथी लिखित गीत "दीवारों पर लिखा है" एकल में अनुराधा पौडवाल ने और युगल में उन्होंने ही विपिन सचदेवा के संग गाया। ये सभी गीत खूब लोकप्रिय हुए थे।

- कुछ ऐसी ही यादगार फिल्म 2002 में विक्रम भट्ट निर्देशित, डिनो मोरिया, बिपाशा बसु और मालिनी शर्मा अभिनीत फिल्म 'राज' भी थी, इसमें भी नदीम-श्रवण का संगीत लोकप्रिय रहा। इस फि ल्म में सभी गीत समीर ने लिखे, जो हिट भी रहे थे। अलका याग्निक की आवाज में गीत-"आपके प्यार में हम" लोगों की जुबां पर चढ़ गया। फिल्म का अलका याग्निक और उदित नारायण की आवाज में यह गीत भी लोकप्रिय हुआ -"इतना मैं चाहू न" लेकिन यह फिल्म में नहीं है, हालांकि इन दोनों की आवाज में ये गीत "जो भी कसमें" और "कितना प्यार है" फिल्म में सुनाई दिए हैं। अभिजीत और अलका याग्निक की आवाज में गीत "मैं अगर सामने" भी खासा लोकप्रिय है। ■

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

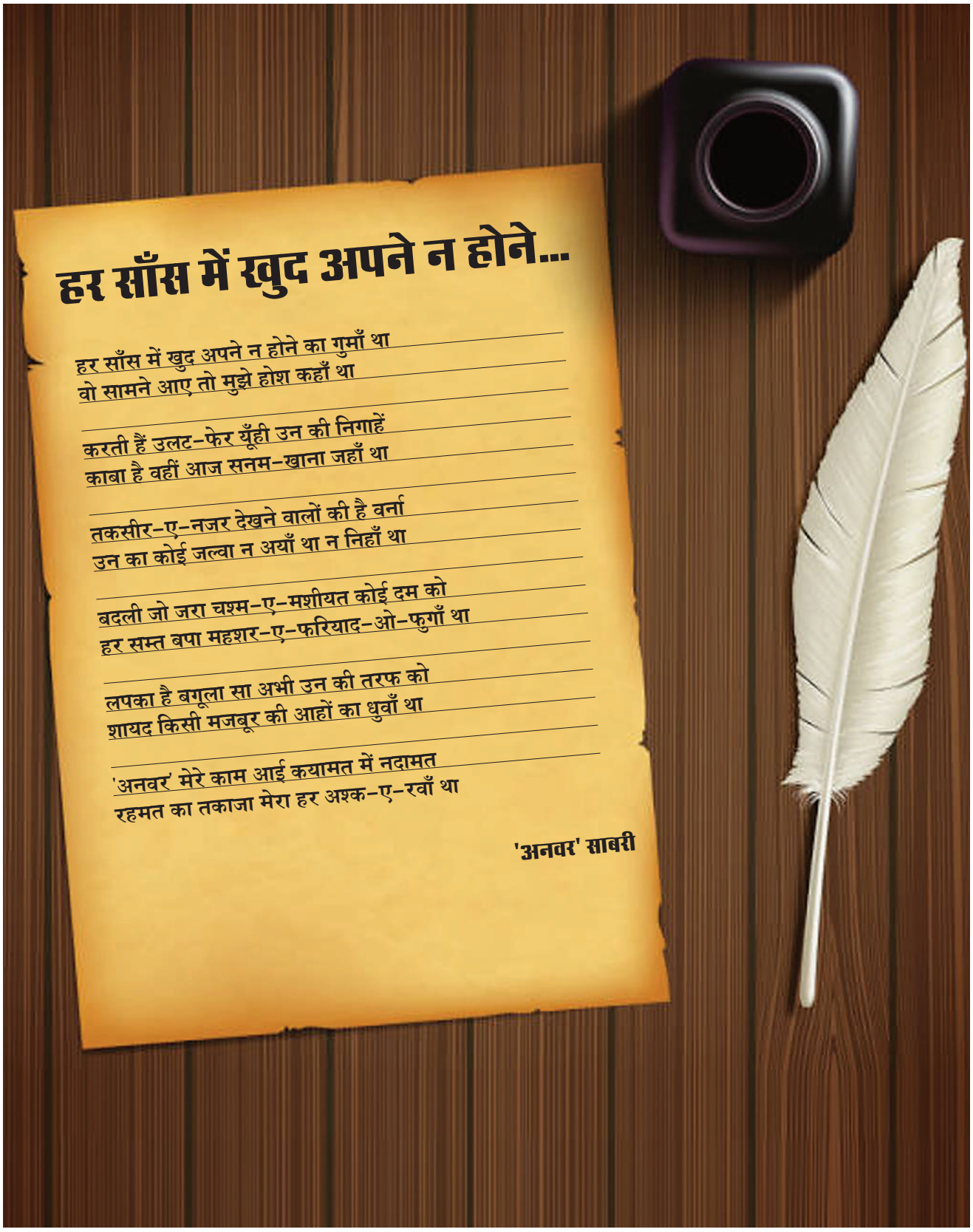

हर साँस में खुद अपने न होने...

हर साँस में खुद अपने न होने का गुमाँ था
वो सामने आए तो मुझे होश कहाँ था

करती हैं उलट-फेर यूँही उन की निगाहें
काबा है वहीं आज सनम-खाना जहाँ था

तकसीर-ए-नजर देखने वालों की है वर्ना
उन का कोई जल्वा न अयाँ था न निहाँ था

बदली जो जरा चश्म-ए-मशीयत कोई दम को
हर सम्त बपा महशर-ए-फरियाद-ओ-फुगाँ था

लपका है बगूला सा अभी उन की तरफ को
शायद किसी मजबूर की आहों का धुवाँ था

'अनवर' मेरे काम आई कयामत में नदामत
रहमत का तकाजा मेरा हर अश्क-ए-रवाँ था

'अनवर' साबरी

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India

NOVA®

DAIRY PRODUCTS

Serving since 1991

घी, दूध, दही, छाछ, पनीर और डेयरी व्हाईटनर

STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.

E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com

Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)

For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050